ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

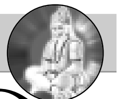

शाश्वत ज्योति

संरक्षक सदस्य

श्रीमहन्त पू. स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती, श्रीमहन्त विद्यानंद सरस्वती, स्वामी रविन्द्रानन्द सरस्वती, स्वामी देवानन्द सरस्वती, श्री प्रवीन अग्रवाल, श्री अनिल चौधरी, श्री बी.एन. तिवारी, डॉ. संजय सिन्हा, श्री नरेन्द्र सोमानी, श्री आर.के. सिंह, श्री प्रशान्त सोमानी, श्री राजेन्द्र सिंह, श्री शशिधर सिंह, श्री ब्रजकिशोर सिंह, डॉ. संजय पासवान (पूर्व केन्द्रीय मंत्री), स्वामी विवेकानन्द,

प्रधान सम्पादक/संस्थापक

महामंडलेश्वर

डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

प्रबन्ध सम्पादक - प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

कार्यकारी सम्पादक - **श्री प्रेमशंकर ओझा**

सम्पादक मण्डल - शत्रुघ्न प्रसाद, बालकृष्ण शास्त्री, श्रीमती राखी सिंह, अभिजीत तुपदाले, डॉ. दीपक कुमार, डॉ. हरेश प्रताप सिंह, श्री कुलदीप श्रीवास्तव, डॉ. सुखेन्दु कुमार, दिनेशचन्द्र शर्मा

आवरण सज्जा - आनन्द शुक्ला

व्यवस्था मण्डल - श्री वीरेन्द्र सोमानी, श्री संजय अग्रवाल, राजेन्द्र प्र. अग्रवाल (मथुरा वाले), श्री सुभाषचन्द्र त्यागी, श्री गोपाल सचदेव, श्री रविशरण सिंह चौहान, श्री महेन्द्र सिंह वर्मा, श्री राजनारायण सिंह, श्री अश्विनी शर्मा, श्री सुरेश रामबर्ण (मॉरीशस)

वित्तीय सलाहकार - श्री वेगराज सिंह

विधि सलाहकार - श्री अशोक चौबे

परामर्श एवं सहयोग-श्री राजेन्द्र अग्रवाल, श्री श्यामबाबू गुप्ता, श्री शिलेश्वर मानिकतला, श्री नरेन्द्र वाशनिक (निक्की), श्रीमती नैना बेनबीड़ीवाला

विज्ञापन व्यवस्था - श्री दयाशंकर वर्मा

प्रमुख संवाददाता - श्री मोहन सिंह

(प्रकाशन में लगे सभी व्यक्ति अवैतनिक है)

मूल्य - 25/-

वार्षिक चन्दा - 150/-

आजीवन - 3000/-

दिल्ली सम्पर्क सूत्र : 305-308, **प्लाट नं.** 9, **विकास सूर्या गैलेक्सी, सेक्टर-**4, **सेन्ट्रल मार्केट, द्वारका, नई दिल्ली-**110075

मोबाईल +91-8010188188

सम्पर्क सूत्र :

महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)

फोन- 01334-2626 00, मोबाइल-09897034165

E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com, swamiumakantanand@gmail.com

शाश्वत दर्पण

- **अर्न्तमन से** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज 2
- शिव कथा- **अविरल अमृत प्रवाह** ❑ म.म.डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज 3
- गीता काव्य- **गीता महिमा** ❑ माधव पाण्डेय निर्मल 7
- दीपावाली पर विशेष-**दीपावाली मनाने के रोचक तथ्य**- म.म.डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज 8
- इतिहास-संस्कृति-**सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय** ❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता 9
- जागरूकता- **आत्म विश्वास कैसे बढ़ाएं** ❑ अशोक गुप्ता 13
- प्रेरक प्रसंग- **जीवन और इच्छा** ❑ धर्मेन्द्र यादव 15
- घरेलू खजाना- **घरेलू उपचार** ❑ अनिल त्रिपाठी 16
- विचार मंथन-**भगवान कृष्ण से द्वारिकाधीश बने राधा के कुछ कड़वे प्रश्न** ❑ साभार 17
- व्यग्यात्मक प्रेरक-**प्रसंग-मन के लड्डू खाने वाला आलसी सदैव सपनों की दुनियां में ही जीता है।** ❑ महिमा शुक्ला 18
- आयुर्वेद-**मेथी निरोग जीवन की संगी-साथी** ❑ वैद्य दीपक....... 19
- प्रेरक-प्रसंग-**नजरिया मजदूर और साधु का** ❑ हिना संपादक....... 21
- सामाजिक परिवर्तन ❑ **हमारे जमाने में मोबाइल नहीं था** 22
- चिन्तन-**बड़े सपने बड़े मुश्किलों को पार** ❑ म.म.स्वामी जी 23
- शब्द राग-**शब्द हो गया भारत माता** ❑ प्रो.वीरेन्द्र अग्रवाल 24
- किस्से कहानी-**आओ थोड़ा रो लें** ❑ मनोहर लाल 'रत्नम' 25
- ज्योतिष-**शनि बाधा शान्ति के कुछ सरल उपाय** ❑ कौशल पाण्डेय (ज्योतिषी) 27
- प्रेरक-प्रसंग-**बड़भागी भरत, अनुरागी भरत** ❑ जयप्रकाश मल्होत्रा......... 29
- मनन-चिंतन-**जीवन क्या है** 30
- प्रेरक प्रसंग-**सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग** ❑ पंकज पाण्डेय 31
- परिपक्वता-सोच **जो आपकी जिंदगी बदल सकती है!** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्त महाराज 32
- रीति-रिवाज-**क्या आशीर्वाद का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है।** ❑ राधेश्याम शुक्ला 33
- कथा-वार्ता-**वशिष्ठ जी का उपदेश** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्त महाराज 34
- शिक्षा-संदेश- **विवेकानंद के ये दस बातें जरूर याद रखें** ❑ म.म. स्वामी उमाकान्त महाराज 38
- सामाजिक परिवेश-**मानव की चिंता न्याय आधारित व्यापक समाज की स्थापना के लिए होनी चाहिए।** ❑ प्रो.वीरेन्द्र अग्रवाल 39
- नारी गाथा-शिक्षित नारी, आखिर क्यूं, माँ का महत्व -आश्विन पाण्डेय 43
- प्रेरक प्रसंग-**धन, प्रेम, सफलता**-नीतिका 44
- कहानी-सच्ची-घटना-**दयालु राजा**-प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल 45
- **शाश्वत समाचार** 47
- **व्रत त्यौहार** 48

स्वामित्व-डिवाइन श्रीराम इण्टरनेशनल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक- डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती द्वारा माँ गायत्री ऑफसेट प्रिन्टर्स, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार (उत्तराखंड) से मुद्रित तथा आदर्श आयुर्वेद फार्मेसी कनखल, हरिद्वार से प्रकाशित।

साज सज्जाः स्वामिनारायण प्रिंटर्स, फोन- 09560229526, 011-45076240

अंतर्मन से.................

आत्मीय पाठकों/भक्तों,

धर्म और अध्यात्म की भिन्न-भिन्न प्रकार की व्याख्याएं की जाती हैं। साधारण इन्सान हमेशा असमन्जस में रहता है कि वास्तव में धर्म क्या है? बड़े-बड़े सिद्धान्त, पूजा-पाठ की विधि-व्यवस्था, अलग-अलग सम्प्रदायों के भिन्न-भिन्न रिति-रिवाज। हिन्दू धर्म के अन्दर ही बहुत बड़ी असमानता और विविधता हर आदमी का धर्म को लेकर अपना-अपना दृष्टिकोण है। हमारे दृष्टि से सहज और सरल भाषा में कहा जाय तो हम कह सकते हैं कि धर्म और अध्यात्म का सार इतना ही है कि हम कौन हैं? कहाँ से आते हैं? कहाँ चले जाते है? यदि यह संसार शाश्वत होता? यहाँ जन्म लेने वाले को मरना नहीं पड़ता तो इन प्रश्नों का कोई अर्थ नहीं होता। सच्चाई तो यही है कि जो यहाँ आता है उसे जाना ही पड़ता है। इसीलिए यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि इस बात को जाना जाय कि आखिर हम कहाँ से आते हैं? कहाँ चले जाते हैं? कौन भेजता है। यहाँ आने का उद्देश्य क्या है? इन्हीं अनसुलझे प्रश्नों का उत्तर ढूंढना तथा जीवन उद्देश्य को पाना यहीं धर्म और अध्यात्म का मूल उद्देश्य है।

हमारे यहाँ धर्म क्षेत्र के सभी पथिकों को कम से कम इतना पता होता है कि हम शरीर नहीं है। शरीर नाशवान है, एक दिन इसे मिट्टी में मिलना पड़ता है। हम शाश्वत, सनातन आत्मा हैं। हम कभी मरते नहीं। अग्नि हमें जला नहीं सकती, वायु हमें सूखा नहीं सकता, जल हमें गीला नहीं कर सकता। हम पवित्र, सदचित्, आनन्द स्वरूप आत्मा है। यही सत्य है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि हम जब स्वभाव से ही पवित्र और सत्य हैं। फिर जीवन के व्यवहार में पवित्रता और अपवित्रता का खेल कहाँ से प्रारम्भ होता है। पाप और पुण्य कहाँ से पैदा होता है। कोई दुरात्मा और कोई धर्मात्मा कैसे बन जाता है?

उत्तर यहीं मिलता है कि सूक्ष्म शरीर जब इस स्थूल शरीर को धारण करता है तो उसमें पंच तन्यात्राक्षों तथा त्रिगुणों के कारण मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार का निर्माण होता है। इसे अन्तःकरण चतुष्ठय कहा जाता है। वास्तव में अन्तःकरण चतुष्ठय मन के चार स्तर का नाम है। मन ही सबका मूल है। जिस धरातल पर यह रहता है। उसे चित्त कहा जाता है। इसमें निर्णय की जो क्षमता होती वह बुद्धि हैं। उसके भीतर जो स्वयं का भाव होता है उसे ही अहंकार कहते हैं। शास्त्र कहते हैं। मन ही मनुष्य के सुख और दुःख का कारण है। तभी तो गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा-''काया कसो की बन बसो, हंसों की साधों मौन। तुलसीमन साधे बिना, मिटे न आवा गौन।।'' अर्थात्-तपस्या द्वारा शरीर को कितना ही साध लीजिए। हँसते रहिये या मौनी बाबा बन जाइये। मन को साधे बिना चौरासी लाख योनियों में आवागमन का चक्कर नहीं मिटता।

वास्तव में मन ही संसार है। मन की ही सृष्टि हमारी सृष्टि है। जिसका मन जैसा होता है। वैसा ही उसका व्यवहार होता है। उसी के अनुरूप उसके चरित्र को माना जाता है। मन विचारों के समुच्चय को कहते हैं। पूर्व जन्म से माँ के गर्भ से, परिवार के लोगों से स्कूल के सहपाठियों और शिक्षकों से अखबार, टेलीविजन और समाज से जो विचार हमें मिलता है। उसी आधार पर हमारे मन का निर्माण होता है। जैसे अच्छे अथवा बुरे माहौल में हम रहते हैं हम वैसे ही हो जाते हैं।

जीवन का सारा खेल मन का है और धर्म का खेल भी मन का ही है। इसीलिए ध्यान को एक ऐसी अवस्था माना जाता है। जहाँ जीव मन से पार हो जाय। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें धर्मानुसार एक लक्ष्य निर्धारण करना चाहिए। फिर उसक प्राप्ति हेतु मन को उस और गतिमान करना चाहिए। इसके लिए साधक को सबसे पहले यह अभ्यास करना चाहिए कि हम शरीर नहीं है। उसके बाद हम मन नहीं है। इसका अभ्यास। हम शरीर नहीं है। इसका अभ्यास तो सरल है परन्तु हम मन नहीं है। इसका अभ्यास थोड़ा कठिन पड़ता है। हम जो भी अच्छा या बुरा करते हैं। उसमें मन को जोड़े रहते हैं। मसलन हमारा मन आज दुखी है. आज रोने का मन कर रहा है। आज खेलने का मन कर रहा है। आज शराब पीने का मन कर रहा है। आज लड़ने का मन कर रहा है। आज खुश रहने का मन कर रहा है। आदि-आदि प्रश्न यह उठता है कि कि सब मन ही करेगा, हम कुछ नहीं करेंगे।

साधारण मनुष्य मन का गुलाम है। वस्तव में भाव इस प्रकार होना चाहिए कि शरीर एक वाहन है, मन उसका ड्राइवर है और हम उसमें सवार उस वाहन के मालिक हैं। यहाँ स्थिति यह है कि मालिक ड्राइवर का गुलाम है। यात्री की नहीं चलती ड्राइवर की चलती है। मालिक ड्राइवर से डरा रहता है और ड्राइवर पागल है। इतना ही नहीं इस मनरूपी ड्राइवर के बारे में स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं-''मन एक पागल बन्दर जैसा है जिसे एक बोतल शराब पिला दिया गया है तथा उसे बिच्छू ने डंक मार दिया है।'' आप कल्पना करें ऐसा ड्राइवर जीवन की गाड़ी को गड्ढे में ही ले जाएगा अथवा कहीं भी घुमाता रहेगा, पहुँचायेगा कहीं नहीं। फिर जीवन लक्ष्य कैसे प्राप्त होगा।

तरीका यही है कि अपने को मन झलक होने का बोध कराया जाये, तत्पश्चात् इस बिगडैल मन के जगह पर अच्छे और पवित्र मन का निर्माण किया जाये। अर्थात् ड्राइवर बदला जाये जो मालिक की बात नहीं सुनता और गाड़ी को भी राजमार्ग पर चलाने के जगह गड्ढे में गिरा कर खटारा बना रहा है। मनरूपी नये ड्राइवर को कैसे लायेंगे। ऊपर चर्चा की गई कि मन विचारों के गठन से बनते है। इसके लिए सतत् अच्छे विचारों के सम्पर्क में रहिये। नियमित स्वाध्याय और सत्संग करिये। नये मन का निर्माण होगा। परन्तु पुराना मन अर्थात् ड्राइवर आपको आसानी से ये सब नहीं करने देगा। उसे अपने अस्तित्व का खतरा लगेगा। बार-बार आपको स्वाध्याय और सत्संग से रोकेगा। कभी आलस्य, कभी बीमारी, थकान अथवा मन नहीं लग रहा आदि का बहाना बनाकर। उस जटिल और बिगडैल मन को बहलाना, फुसलाना पड़ेगा। बार-बार समझाना पड़ेगा कि आने वाले विचार अथवा नया मन गाड़ी चलाने वहीं आ रहा था रिश्तेदार हैं इसलिए आया है और धीरे-धीरे सद्विचारों से निर्मित नये मन का बर्चस्व हो जायेगा और आप अपने लक्ष्य और बढ़ चलेंगे। अतः हमेशा सावधान रहिये, बिगड़े हुए मन की गुलामी छोड़िये। अपने को उससे अलग करिये। जिस दिन आप अपने लक्ष्य के अनुरूप अपना साथी मन निर्मित कर लेंगे। आपका लक्ष्य आपके कदमों में होगा।

स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती

(स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती)

अविरल अमृत प्रवाह

-महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

गतांक से आगे

विष्णु-दधीचि संवाद

ब्रह्माजी बोले-अब एक दिन राजा क्षुव का कार्य सिद्ध करने के लिए भगवान् विष्णु महर्षि दधीचि के आश्रम में पहुँचे और उनसे कहा कि हे महर्षे! आपसे एक वर माँगने आया हूँ। महर्षि दधीचि शिव के परम भक्त थे। उन्होंने जो नेत्र बन्द कर शिव का ध्यान किया तो उन्हें विष्णु का कपट ज्ञात हो गया। उन्होंने कहा-मैं समझ गया। परन्तु आप भगवान् हैं। मैं आपसे क्या कहूँ? फिर ब्राह्मण का वेष धर कर आये हैं। हे सुव्रत! आप इस वेष को त्याग दीजिये। मैं शिवजी का भक्त हूँ। सब कुछ समझ गया हूँ। राजा क्षुव के कल्याणार्थ आप मुझसे छल करने आये हैं, परन्तु मैं आपसे कहता हूँ कि अपने शुद्ध रूप में होकर आप भगवान् शंकर का स्मरण कीजिये। उनके स्मरण से आपको किसी प्रकार की चिन्ता न करनी होगी। देखिये, मुझे शंकरजी की कृपा से देवता, दैत्य किसी से भय नहीं लगता। इस पर विष्णुजी ने महर्षि दधीचि को प्रणाम कर कहा-हे महामुनि! अवश्य, आपका कहना सत्य है और मैं जानता हूँ कि जब से आप

ब्रह्माजी बोले-अब एक दिन राजा क्षुव का कार्य सिद्ध करने के लिए भगवान् विष्णु महर्षि दधीचि के आश्रम में पहुँचे और उनसे कहा कि हे महर्षे! आपसे एक वर माँगने आया हूँ। महर्षि दधीचि शिव के परम भक्त थे। उन्होंने जो नेत्र बन्द कर शिव का ध्यान किया तो उन्हें विष्णु का कपट

शिव भक्त हुए हैं, तब से आपको किसी का भय नहीं रहा। परन्तु आप मेरे कहने से एक बार राजा क्षुव के पास जाकर उससे यह कह दीजिये कि मैं तुमसे डरता हूँ। विष्णुजी की ऐसी बात सुनकर शैवश्रेष्ठ दधीचि ने हँसते हुए कहा कि मैं शिवजी के प्रभाव से किसी से तो डरता नहीं हूँ, फिर उससे क्या कहने जाऊँ? इस पर विष्णुजी को क्रोध आ गया और उन्होंने अपना चक्र उठा महर्षि दधीचि को मारना चाहा। परन्तु ब्राह्मण पर वह नहीं चला। तब कुण्ठित दधीचि ने हँसते हुए भगवान् विष्णु से कहा-हे भगवन्! यह शिवजी का दिया हुआ चक्र आप मुझ पर छोड़ना चाहते थे, परन्तु नहीं चला। चलता भी तो कैसे? शिवजी का अस्त्र मुझ जैसे ब्राह्मणों के लिए नहीं है। यदि आप क्रुद्ध ही हैं तो क्रम से ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्रों तथा बाण आदि का प्रयोग कीजिये। फिर तो दधीचि को निरा ब्राह्मण और पराक्रमहीन समझ विष्णुजी ने क्रोधकर उन पर अपने सभी अस्त्र चलाये। देवताओं ने भी विष्णु की सहायता की। इन्द्रादि देवों ने बड़े वेग से मुनि दधीचि पर अपने अस्त्रों को चलाया, परन्तु शिवभक्त दधीचि ने मुट्ठी भर कुशा उठाकर जो उन पर छोड़ा तो शंकरजी के प्रभाव से वे कुशा कालाग्नि के समान त्रिशूल बन प्रलयाग्नि के समान अपनी ज्वालाओं से आयुधधारी देवताओं का संहार करने लगी। विष्णु, यम, इन्द्रादिक देवताओं के छोड़े अस्त्र उन त्रिशूलों को प्रणाम कर कुंठित हो गये। देवता पराक्रमहीन हो वहाँ से भाग चले। केवल विष्णुजी ही वहाँ टिके रहे, परन्तु वे भी भयभीत ही रहे। उन्होंने और भी बहुत-सी माया दिखलाई। मुनिश्रेष्ठ दधीचि ने कहा-हे विष्णो! माया त्याग दीजिये, मैं माया से नहीं डरता। इससे भी बढ़कर मुझे और कितने ही दुर्ज्ञेय पदार्थ ज्ञात हैं। यदि आपमें शक्ति नहीं है तो मैं आपको दिव्य नेत्र देता हूँ, सबको देख लीजिये। ऋषि ने शिव की कृपा से अपने शरीर को विराट कर दिया। विष्णुजी ने उनके शरीर में सारा ब्रह्माण्ड देखा। फिर भी विष्णुजी युद्ध से पराङ्मुख न हुए और परम शैव दधीचि भी शिवजी की कृपा से निर्भय हो उनसे युद्ध करते ही रहे। भीषण युद्ध हुआ। तब हे नारद! मैं विष्णुभक्त ब्रह्मा राजा क्षुव को साथ ले उनका युद्ध देखने गया। मैंने निश्चेष्ट विष्णु भगवान् तथा देवताओं को युद्ध करने से रोका और कहा-आप लोगों का प्रयास व्यर्थ है। इस ब्राह्मण को आप लोग नहीं जीत सकते।

नारदजी बोले-हे महाभाग! जब महावीर वीरभद्र दक्ष का यज्ञ विध्वंस कर कैलाश को गये तब क्या हुआ। ब्रह्माजी बोले-जब रुद्र की सेना से घायल देवताओं ने मुझसे जाकर दक्ष-यज्ञ विध्वंस का समाचार कहकर दक्ष के मारे जाने का समाचार दिया तो मुझे बड़ा क्रोध हुआ।

यह सुन विष्णुजी शान्त हो दधीचि मुनि की स्तुति करने लगे। राजा क्षुव ने भी दीनता से मुनि के निकट जाकर उन्हें प्रणाम कर बड़ी प्रार्थना की। इससे प्रसन्न हो मुनि दधीचि ने उन पर तो कृपा कर दी पर विष्णु आदि पर उनका कोप कम न हुआ। उन्होंने हृदय में भगवान् शंकर का स्मरण कर विष्णु सहित सब देवताओं को शाप दे दिया कि समय आने पर तुम लोग रुद्र की कोपाग्नि से भस्म हो जाओगे। दधीचि को प्रणाम कर क्षुव अपने घर चला गया और विष्णु आदि देवता भी अपने लोक को गये। तबसे उस स्थान का नाम थानेश्वर हुआ। वहाँ जाकर जो भगवान् शंकर का दर्शन करता है उसे सायुज्य मुक्ति प्राप्त होती है।

ब्रह्माजी का उद्योग

नारदजी बोले-हे महाभाग! जब महावीर वीरभद्र दक्ष का यज्ञ विध्वंस कर कैलाश को गये तब क्या हुआ। ब्रह्माजी बोले-जब रुद्र की सेना से घायल देवताओं ने मुझसे जाकर दक्ष-यज्ञ विध्वंस का समाचार कहकर दक्ष के मारे जाने का समाचार दिया तो मुझे बड़ा क्रोध हुआ और मैं सोचने लगा कि अब देवताओं को सुखी बनाने के लिए मैं क्या करूँ और दक्ष भी जीवित हो जाये तथा उसका यज्ञ भी पूर्ण होवे। तब शिवजी का स्मरण करते ही जो मुझे ज्ञान हुआ तो मैं उनके पास बैकुण्ठ लोक पहुँचा और विष्णुजी

की स्तुति की तो उन्होंने मुझसे कहा कि दक्ष ने अपराध किया जो अपने यज्ञ में शिवजी को भाग नहीं दिया जिसके लिए हम सभी देवता शिवजी के अपराधी हैं। अतएव अब आप सभी देवता शिवजी की शरण में जाकर उनको प्रसन्न करो तभी शान्ति हो जायेगी। इसके लिए मैं भी आप लोगों के साथ चलने को तैयार हूँ। ऐसा कह विष्णुजी मेरे साथ कैलाश चलने को उद्यत हुए। हम लोग अलकापुरी से आगे उस विशाल वट-वृक्ष के पास पहुँचे कि जहाँ दिव्य योगियों से सेवित श्रेष्ठ शिवजी विराजमान थे। उनके चारों ओर उनके गण और यज्ञों के स्वामी कुबेर विराजते थे। तब उनके निकट पहुँचकर विष्णु आदि समस्त देवताओं ने बार-बार नमस्कार कर उनकी स्तुति की और कहा कि हे दयासागर परमेश्वर! आपकी कृपा के बिना हम सब नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं। अतएव अब आप प्रसन्न होकर हमारी रक्षा कीजिये। हे नाथ! आप प्रसन्न होकर दक्ष के यज्ञ को पूर्ण करें। भग देवता की पहली जैसी आँख हो जाये। यजमान जीवित हो, पूषा के दाँत हो जायें तथा भृगु की दाढ़ी फिर पहले के समान होये।

ब्रह्माजी बोले-देवताओं सहित विष्णु की स्तुति से भगवान् शंकर प्रसन्न हो देवताओं को धैर्य बँधाते हुए बोले कि हे देवों! सुनो, मैं तुम पर क्रुद्ध हूँ फिर भी तुमको क्षमा करता हूँ। दक्ष के यज्ञ को मैंने विध्वंस नहीं किया है,

आपकी कृपा से इन देवताओं को आरोग्यता लाभ होए। हम इस अवशिष्ट-यज्ञ कर्म में आपका भाग देंगे तथा इसलिए इस यज्ञ को फिर से रचना चाहते हैं। ऐसा कहकर मुझ ब्रह्मा सहित विष्णुजी हाथ जोड़े शिवजी के चरणों में गिर पड़े।

शिवकृपा से दक्ष का जीवित होना

ब्रह्माजी बोले-देवताओं सहित विष्णु की स्तुति से भगवान् शंकर प्रसन्न हो देवताओं को धैर्य बँधाते हुए बोले कि हे देवों! सुनो, मैं तुम पर क्रुद्ध हूँ फिर भी तुमको क्षमा करता हूँ। दक्ष के यज्ञ को मैंने विध्वंस नहीं किया है, किन्तु जो दूसरों का बुरा चाहता है उसी का बुरा होता है। दक्ष ही उस यज्ञ का सिर है, अतएव उसका बकरे जैसा सिर होगा। भग देवता सूर्य के नेत्र से यज्ञ भाग को देखेंगे तथा पूषा के टूटे हुए दाँत हो जायेंगे और यजमान दिए हुए यज्ञ के भाग का उपयोग कर सकेंगे, यह मैं सत्य कहता हूँ। मेरा विरोधक भृगु फिर बकरे-सी दाढ़ी पायेगा और मेरे गणों द्वारा मारे गये देवताओं के अंग भी ठीक हो जायेंगे और सभी अध्वर्यु प्रसन्न होंगे। यह कहकर वेदों के अनुसरणकर्त्ता, परम दयालु, चराचरपति सम्राट शंकर मौन हो गये।

तब उनका यह कहना सुन देवताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई तथा सबने शिवजी को धन्यवाद दिया। फिर देवर्षियों सहित शिवजी को उस यज्ञ में आने के लिए आमन्त्रित कर हम लोग यज्ञ के उसी स्थान में आये जहाँ कि कनखल नामक स्थान में दक्ष ने यज्ञ आरम्भ किया था। उसी समय भगवान् शंकर ने वहाँ पहुँचकर वीरभद्र द्वारा भंग यज्ञ का निरीक्षण किया और देखा कि स्वाहा, स्वधा, पूषा, तुष्टि, धृति, सरस्वती और सभी ऋषि, पितर, अग्नि टूटे-फूटे और कोई मरे हुए पड़े हैं। यज्ञ की यह दशा देखकर वीरभद्र को बुला भगवान् शंकर ने हँसकर कहा कि हे महाबाहो वीरभद्र! यह तुमने क्या किया? हे तात! तुमने ऋषियों को इतना कठिन दण्ड इतने शीघ्र दे डाला। अच्छा तो अब तुम शीघ्र ही दक्ष का वह मृतक शरीर लाओ कि जिसने इस यज्ञ को आरम्भ किया था। शिवजी के इतना कहते ही वीरभद्र ने दक्ष का सिर रहित शरीर लाकर शीघ्र ही उनके सामने रख दिया। तब उसे सिर रहित देख शिवजी ने वीरभद्र से कहा कि इसका सिर कहाँ है? वीरभद्र ने कहा-उसे तो मैंने पहले ही अग्नि में हवन कर दिया है। शिवजी ने देवताओं से कहा-देखो मैंने जो पहले कहा था, वही हुआ। फिर भगवान् शंकर ने यथोचित पशु अर्थात् बकरे का सिर लेकर प्रजापति दक्ष के सिर पर जोड़ दिया और ज्योंही कृपादृष्टि से देखा, वह जीवित होकर उठ बैठा। उसने उठते ही प्रसन्नचित्त हो शंकर भगवान् का दर्शन किया। उसका कलुशित हृदय निर्मल हो गया। फिर त्योंही कल्याण कारक भगवान् शिव की विनम्र भाव से स्तुति करने लगा। उसकी स्तुति सुन भगवान् शंकर प्रसन्न हो गये और पुन: विष्णु और मुझ ब्रह्मा ने भी इन्द्रादि देवताओं और लोकपालों सहित शंकरजी की स्तुति की।

इस प्रकार शंकरजी के सुखकारक वचनों से वहाँ स्थित देवता, मुनि सभी प्रसन्न हो गये। दक्ष बड़े प्रेम से शिवजी की भक्ति करने लगा। समस्त देवता कुटुम्ब सहित शंकर भगवान् को परमेश्वर मानने लगे। जिसने जैसी स्तुति की थी, शंकर भगवान् ने उन्हें वैसा वर दिया।

सती खण्ड का श्रुतिफल आदि

ब्रह्माजी बोले–इन स्तुतियों को सुनकर शंकरजी प्रसन्न हो गये और उन्होंने सबकी ओर कृपा पूर्ण दृष्टि से देखकर दक्ष से कहा कि हे प्रजापति दक्ष! सुनो! यद्यपि मैं स्वतन्त्र ईश्वर हूँ तथा भक्तों के वश में हूँ। चारों भक्तों में ज्ञानी सबसे श्रेष्ठ है। ज्ञानी मेरा ही स्वरूप है और उससे अधिक प्रिय मुझे कोई नहीं है। वह कर्मपरायण मनुष्य मूर्ख है, जो वेद, यज्ञ, दान और तप आदि से मुझे जानना चाहता है। इसी प्रकार तू केवल कर्म के द्वारा ही संसार-सागर से तरना चाहता था। तेरा यह कर्म मुझे अच्छा न लगा और मैंने तेरे यज्ञ का विध्वंस करा दिया। हे दक्ष! अब तू मुझे परमेश्वर मानकर बुद्धिपूर्वक ज्ञानपरायण हो सावधानी से कर्म कर, तू यह जान कि मैं शंकर ही सम्पूर्ण जगत् का दृष्टा हूँ। मैं ही जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करता हूँ और क्रिया के अनुसार विभिन्न नामों को धारण करता हूँ। विष्णुभक्त का अर्थ यह नहीं है कि वह मेरी निन्दा करे। मेरा भी भक्त विष्णु की निन्दा नहीं कर सकता। यदि ऐसा करेगा तो हम दोनों के शाप से उसे तत्त्व की प्राप्ति नहीं हो सकती।

इस प्रकार शंकरजी के सुखकारक वचनों से वहाँ स्थित देवता, मुनि सभी प्रसन्न हो गये। दक्ष बड़े प्रेम से शिवजी की भक्ति करने लगा। समस्त देवता कुटुम्ब सहित शंकर भगवान् को परमेश्वर मानने लगे। जिसने जैसी स्तुति की थी, शंकर भगवान् ने उन्हें वैसा वर दिया। दक्ष प्रसन्न हो शीघ्र ही शिवजी का नाम जपने लगा। शिवजी की कृपा से उसने अपना यज्ञ पूर्ण किया। सब देवताओं को यथायोग्य भाग मिला। शिवजी को भी उनका भाग दिया गया। ब्राह्मणों को भी बहुत-सा दान दिया गया। दक्ष ने विधिपूर्वक ऋत्विजों द्वारा यज्ञ के बड़े कार्य को समाप्त कराया। परब्रह्म शंकरजी की कृपा से यज्ञ पूर्ण हुआ। सब देवता और ऋषि आदि भगवान् शंकर का यश गाते हुए अपने धाम को गये। मैं और विष्णु भी मंगलदायक उनके सब नामों का उच्चारण करते हुए अपने लोक को चले गये। दक्ष ने सत्पुरुषों की गति पा शंकरजी का बड़ा सत्कार किया। फिर वे भी अपने गणों को साथ ले कैलाश पर्वत की ओर प्रस्थान किए। कैलाश पहुँचकर शिवजी ने अपनी प्रिया पार्वती का स्मरण करते हुए उनकी सम्पूर्ण कथा अपने गणों से कह सुनाई।

फिर इसी प्रकार वे सती-चरित्र कहकर समय बिताने लगे। सांसारिकता का अनुकरण करने लगे। यद्यपि वे शंकर भगवान् एक हैं। उनमें कोई विकार नहीं, तथापि उन्होंने संसार को अपनी लौकिकता दिखाई। इस चरित्र को पढ़ने-सुननेवाला ज्ञानी हो उत्तम सुख और दिव्य गति को प्राप्त होता है। इस प्रकार दक्ष-पुत्री सती देवी अपना शरीर त्यागकर हिमालय की पत्नी मैना के गर्भ से उत्पन्न हुई और महा तप कर शिवजी को प्राप्त किया एवं गौरी अर्द्धवामांगी कहला विचित्र लीलाएं कीं। यह सती-चरित्र अद्भुत, भक्ति-मुक्तिदायक और समस्त कामनाओं का देनेवाला है। यह पापरहित कथा परम पवित्र, स्वर्ग, यश, आयु, पुत्र और पौत्रादिकों का फल देनेवाली है। जो इसे भक्तिपूर्वक सुनता और दूसरों को सुनाता है उसके सब मनोरथ पूर्ण होते हैं और उसे परमगति मोक्ष की प्राप्ति होती है।

-शेष अगले अंक में -क्रमशः

माधव पाण्डेय निर्मल

तीसरा अध्याय

इसीलिए आसक्त हुए बिन विहित कर्म में लगे रहो।
परमात्मा मिल जायेंगे, उनमें निशिदिन ही पगे रहो।।
जनक तथा कई ऋषियों को मोक्ष मिला ऐसा ही करके।
वे सदेह ही मुक्त हुए हैं इसी मार्ग को अपना करके।।

देव, ऋषि, फिर पितर, मनुज और भूत यज्ञ ही पाँच हैं।
होकर के निष्काम इन्हें करना कर्त्तव्य ही साँच हैं।।
इन कर्मों में ब्रह्म प्रतिष्ठित, मिलता है निर्वाण तभी।
श्रद्धा-भाव सहित करना है, अर्पित कर मन-प्राण सभी।।

पूजन कर आहूति सामग्री यज्ञकुण्ड में हवन करें।
बचे हुए यज्ञांश अन्न-जल देवार्पित कर ग्रहण करें।।
अगर नहीं ऐसा करते तो अन्न पाप का खाते हैं।
कहते श्री भगवान कि ऐसे जन पापी कहलाते हैं।।

यज्ञ कर्म ही ब्रह्म कर्म है, यही मोक्ष का साधन है।
ज्ञान-कर्म दोनों निष्ठाओं का यह तो अवलंबन हैं।।
यही श्रेष्ठ कर्त्तव्य कर्म है, अतः इसे अपनाना है।
प्रकृति-पुरुष के दिये दान का ऋण भी हमें चुकाना है।।

मुक्त पुरुष के लिए यज्ञ का साधन नहीं जरूरी है।
किन्तु मुमुक्षुजनों के वास्ते यही मुक्ति की धूरी है।।
जो भी लय हो गया ब्रह्म में वह तो स्वयं वही हो जाता है।
ज्ञान-कर्म या जन्म-मरण का चक्र टूटता, मुक्ति पाता।।

अनासक्त निष्काम कर्म में मुक्ति छिपी है, जानो तुम।
इसका पालन ही स्वधर्म है, आत्मवृत्ति पहचानो तुम।।
यह सब तब ही संभव होगा अगर पास में रहता ज्ञान।
इसीलिए दोनों श्रेयस्कर, दोनों हैं बस एक समान।।

सब कुछ धर्मोचित करना है, अहम् भाव का त्याग करे।
पूर्ण समर्पित रहे ईश में, आत्मरूप का ध्यान धरे।।
ज्ञानी वही, वही कर्मठ है, लक्ष्य वही तो पाता है।
जन्म-मरण का बंधन टूटे, ब्रह्मलीन हो जाता है।।

श्रेष्ठजनों या कई अन्य ने कर्म-मार्ग को अपनाया।
अन्यजनों को प्रेरित करके उसी पंथ को दर्शाया।।
श्रेष्ठ पुरुष जो भी करते हैं, अन्य करें अनुकरण उसी का।
जैसा भी वे कर्म करें, सब लोग करे आचरण उसी का।।

-क्रमशः

दीपावाली मनाने के-रोचक तथ्य

म.म. उमाकान्तानन्द सरस्वती जी महाराज

हम दीवाली क्यों मनाते है, आखिर इसके पीछे क्या कारण है, कुछ लोगों का कहना है दीपावली के दिन अयोध्या के राजा राम लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध करके अयोध्या वापस लौटे थे, उनके अयोध्या आने की खुशी में दीपावली का त्योहार मनाया जाता है। दीपावली मनाने के पीछे अलग अलग राज्यों और धर्मो में अलग-अलग कारण व्याप्त हैं।

धर्म कोई भी हो मगर इस दिन सभी के मन में उल्लास और प्रेम का दीप जलता है। हम सभी अपने घरों की साफ-सफाई करते हैं, घरों में कई पकवान बनते हैं। हम आपको बताते हैं 7 पौराणिक और ऐतिहासिक कुछ ऐसे रोचक तथ्यों के बारे में जिसकी वजह से न केवल हिंदू बल्कि पूरी दुनिया के लोग दीपावली के त्योहार को बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं।

भगवान राम की विजय-हिंदू धर्म में मान्यता है कि दीपावली के दिन आयोध्या के राजा श्री राम ने लंका के अत्याचारी राजा रावण का वध किया था, वध करने के बाद वे अयोध्या वापस लौटे थे। उनके अयोध्या लौटने की खुशी में वहां के निवासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था और खुशी मनाई थी। उसी दिन से दीपावली का त्यौहार मनाया जाने लगा।

श्री कृष्ण ने किया था नरकासुर का वध-दीवाली के एक दिन पहले राक्षस नरकासुर ने 16,000 औरतों का अपहरण कर लिया था तब भगवान श्री कृष्ण ने असुर राजा का वध करके सभी औरतों का मुक्त किया था, कृष्ण भक्तिधारा के लोग इसी दिन को दीपावली के रूप में मनाते हैं।

विष्णु जी का नरसिंह रुप-एक पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने नरसिंह रुप धारण कर हिरण्यकश्यप का वध किया था इसी दिन समुद्र मंथन के दौरान लक्ष्मी व धन्वंतरि प्रकट हुए थे।

सिक्खों के लिए है खास दिन-इस दिन सभी सिक्ख अपने तीसरे गुरू अमरदास जी का आशीर्वाद लेने के लिए इकट्ठा होते हैं। 1577 में इसी दिन स्वर्ण मन्दिर का शिलान्यास हुआ था, और इसके अलावा 1619 में कार्तिक अमावस्या के दिन सिक्खों के छठे गुरु हरगोविन्द सिंह जी को जेल से रिहा किया गया था।

जैनियों के लिए खास दिन-जैन धर्म में दीपावली के दिन का काफी बड़ा महत्व है, इस दिन को आधुनिक जैन धर्म की स्थापना के रूप में मनाया जाता है इसके अलावा दीवाली के दिन जैनियों को निर्वाण भी प्राप्त हुआ था।

आर्य समाज की स्थापना के रूप में-इस दिन आर्य-समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने भारतीय संस्कृति के महान जननायक बनकर अजमेर के निकट अवसान लिया था। इसके अलावा मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊँचे बाँस पर एक बड़ा दीप जलाकर लटकाया गया था। वहीं शाह आलम द्वितीय के समय में पूरे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था इस मौके पर हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर पूरे हर्ष और उल्लास के साथ ज्योति पर्व अर्थात प्रकाश पर्व का त्योहार मनाते थे।

इतिहास के पन्नों में दर्ज आकड़ों के अनुसार 5000 ईसा वर्ष पूर्व मोहनजोदड़ो सभ्यता में खुदाई के दौरन मिटी की एक मूर्ति में देवी के दोनों हाथों में दीप जलते दिखाई देते हैं। जिससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि उस समय भी दीपावली का त्यौहार मनाया जाता था।

❑

सूत्र साहित्य का संक्षिप्त परिचय

(गतांक से आगे....)

❑ डॉ. देवेन्द्र गुप्ता

ब्रह्मचर्याश्रम

विद्याभ्यास समाप्त कर लेने पर वह गुरु के घर वापस जाने की अनुमति मांगता था। गुरु द्वारा अनुमति प्रदान कर देने पर समावर्तन संस्कार होता था जो ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति का सूचक था। इस अवसर पर वह गुरु से दक्षिणा के विषय में पूछता था और फिर गुरु की आज्ञानुसार अथवा अपनी शक्ति के अनुसार दक्षिणा प्रदान कर स्नान करता था। गौतम के अनुसार विद्या के अन्त में शिष्य को गुरु से धन लेने या जो कुछ वह दे सके, लेने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, तब गुरु आज्ञापित कर दे या बिना कुछ लिए जाने को कह दें तब शिष्य को अपने घर लौटना चाहिए। आपस्तम्ब के अनुसार अपनी सामर्थ्य के अनुसार शिष्य को विद्या के अन्त में गुरु दक्षिणा देनी चाहिए, यदि गुरु तंगी में हो तो उग्र या शूद्र से भी भिक्षा मांगकर उसकी सहायता करनी चाहिए। ऐसा करके शिष्य को घमण्ड नहीं करना चाहिए और न इसका स्मरण रखना चाहिए। मनु के अनुसार ब्रह्मचारी स्नान से पूर्व कुछ नहीं दे सकता किन्तु घर लौटते समय वह गुरु को धन, भूमि, सोना, गाय, अश्व, जूते, छाता, आसन, वस्त्र, साग–सब्जी, वस्त्र का अलग–अलग या एक ही साथ दान कर सकता है। काणे के अनुसार वास्तव में विद्या के अन्त में दक्षिणा देना गुरु को प्रसन्न मात्र करना था, क्योंकि जो कुछ ज्ञान शिष्य ग्रहण करता था, उसका प्रतिकार नहीं हो सकता था। शिक्षा की समाप्ति पर आचार्य उसे उपदेश देता था। हे शिष्य! तुम सदा सत्य बोलना, धर्म का आचरण करना, स्वाध्याय में प्रमाद मत करना, आचार्य को धन लाकर देना, सन्तानोत्पत्ति करना,

विद्याभ्यास समाप्त कर लेने पर वह गुरु के घर वापस जाने की अनुमति मांगता था। गुरु द्वारा अनुमति प्रदान कर देने पर समावर्तन संस्कार होता था जो ब्रह्मचर्याश्रम की समाप्ति का सूचक था। इस अवसर पर वह गुरु से दक्षिणा के विषय में पूछता था और फिर गुरु की आज्ञानुसार अथवा अपनी शक्ति के अनुसार दक्षिणा प्रदान कर स्नान करता था। ग

इस समय प्राय: दो प्रकार के ब्रह्मचारी होते थे एक उपकुर्वाण और दूसरा नैष्ठिक। उपकुर्वाण वे ब्रह्मचारी होते थे जो गुरु के आश्रम में कुछ वर्ष तक रहकर विद्याध्ययन करे के उपरान्त गुरु की यथाशक्ति दक्षिणा देकर उनकी आज्ञा से स्नान करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे।

शरीर को निरोग रखना, धन इकट्ठा करने में प्रमाद मत करना, माता, पिता, आचार्य और अतिथि इन सभी का उचित आदर-सत्कार करना, जो कार्य निन्दनीय नहीं है वही करना, दूसरे नहीं। इसके पश्चात विद्यार्थी स्नातक के नाम से प्रसिद्ध होता था और जब तक विवाह करके वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं करता था, तब तक वह स्नातक ही कहलाता था।

इस समय प्राय: दो प्रकार के ब्रह्मचारी होते थे एक उपकुर्वाण और दूसरा नैष्ठिक। उपकुर्वाण वे ब्रह्मचारी होते थे जो गुरु के आश्रम में कुछ वर्ष तक रहकर विद्याध्ययन करने के उपरान्त गुरु को यथाशक्ति दक्षिणा देकर उनकी आज्ञा से स्नान करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे। लेकिन इस प्रकार के ब्रह्मचारी भी विद्या और तप के आधार पर तीन प्रकार के होते थे, एक विद्यास्नातक, दो व्रतस्नातक और तीसरे विद्या व्रत स्नातक। जो विद्यार्थी ब्रह्मचर्याश्रम में रहकर केवल विद्याध्ययन करते थे परन्तु व्रतों का पूरी तरह निर्वाह नहीं कर पाते थे। वे विद्यास्नातक कहलाते थे। जो विद्यार्थी ब्रह्मचर्याश्रम में रहकर केवल व्रतों का पालन करते थे और अपना अध्ययन पूर्ण नहीं कर पाते थे। वे व्रतस्नातक कहलाते थे और जो विद्यार्थी विद्या के साथ-साथ व्रतों का भी सम्यक् रूप से पालन करते ते वे विद्याव्रत स्नातक कहलाते थे और जो विद्यार्थी विद्या के साथ-साथ व्रतों का भी सम्यक् रूप से पालन करते थे वे व्रतस्नातक कहलाते थे। इन तीनों में विद्याव्रतस्नातक सर्वोत्कृष्ट माने जाते थे। जबकि नैष्टिक ब्रह्मचारी वे होते थे। जो आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गुरु के आश्रम में ही रहकर ज्ञान प्राप्त करते थे और मोक्ष प्राप्ति के लिए साधना करते थे। उनके लिए अन्य आश्रमों में प्रवेश की कोई आवश्यकता नहीं रहती थी। वे गुरु की सेवा करते थे और सेवा के उपरान्त जो समय शेष बचता था वह समय जप में व्यतीत करते थे। गुरु आश्रम में रहते हुए आचार्य की मृत्यु हो जाने पर वे गुरु-पुत्रों और गुरू-पत्नी के प्रति जो गुरु की समान जाति की होती थी, के प्रति आचार्य की भाँति व्यवहार करते थे। लेकिन उनके अभाव में विद्या और आयु में श्रेष्ठ व्यक्ति के प्रति और उसके अभाव में अपने सहाध्यायी ब्रह्मचारी के प्रति और उसके भी अभाव में अग्नि की सेवा (समिधाओं द्वारा हवन आदि कर्म) करते हुए अपना शेष जीवन व्यतीत करते थे। आपस्तम्ब के अनुसार नैष्ठिक ब्रह्मचारी काषाय वस्त्र, मृगचर्म अथवा वत्कल वस्त्र धारण करते हुए, जटाधारी अथवा शिखाधारी बनकर मेखला, दण्ड, यज्ञोपवीत, मृगचर्म धारण करके, पवित्र, बिना क्षार एवं लवण का भोजन करते हुए भिक्षान्न भोजन करते थे। गौतम के अनुसार इस प्रकार कठोर नियमों का पालन करते हुए इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर नैष्टिक ब्रह्मचारी ब्रह्मलोक को प्राप्त करते थे। इस प्रकार उपकुर्वाण तथा नैष्ठिक ब्रह्मचारियों में केवल मात्र यही अन्तर था कि एक स्नातक होने के बाद ब्रह्मचर्याश्रम को त्यागकर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हो जाता था और दूसरा जीवन पर्यन्त गुरुकुल में ही वास करता था। प्रथम आश्रम के नियमों और व्रतों का पालन करने की दृष्टि में उनें कोई अन्तर नहीं था।

धर्मशास्त्रों में यद्यपि स्थान-स्थान पर गृहस्थाश्रम की विशेष महिमा वर्णित की गई है। तथापि ब्रह्मचर्याश्रम का महत्व भी कम नहीं था। क्योंकि यही एक ऐसा आश्रम था जो मनुष्य को दीर्घायु प्रदान करता था। दीर्घायु के अतिरिक्त देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल पर ही देव सम्राट के पद को प्राप्त किया था। महाभारत में ब्रह्मचर्य को ब्रह्म का स्वरूप और सब धर्मों में श्रेष्ठ बताया गया है। इसके पालन से मनुष्य सद्गति को प्राप्त करता है। गौतम के अनुसार जो ब्रह्मचारी गुरु की आधीनता स्वीकार करते हुए गुरु सेवा करता है वह जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी स्वर्ग को प्राप्त करता है। आपस्तम्ब के अनुसार जो ब्रह्मचारी नियमपूर्वक ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करता है। वह संकल्प

करके जो कुछ भी मन में सोचता है, शब्दों में अभिव्यक्त करता है तथा चक्षु से देखता है वह भी वैसा ही हो जाता है। वसिष्ठ के अनुसार जो ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करते हुए एक, दो या तीन वेदों का अध्ययन करता है, वह अपनी इच्छानुसार किसी भी आश्रम में प्रवेश करने का अधिकारी होता है। बौधायन ने ब्रह्मचर्याश्रम की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि ब्रह्मा ने सृष्ट-प्राणियों को मृत्यु को दे दिया, परन्तु केवल ब्रह्मचारी की नहीं दिया। इस पर मृत्यु ने कहा कि मुझे भी इस ब्रह्मचारी में अंश मिलना चाहिए। इस पर ब्रह्मा ने कहा कि जिस रात्रि यह समिधाहरण न करे, उसी रात्रि तुम्हें इसमें अंश मिलेगा अर्थात् तुम इसे नष्ट कर सकोगे। अतएव ब्रह्मचारी जिस रात्रि समिधाहरण कर्म नहीं करता उसी रात्रि को अपनी आयु को काटकर निकाल देता है। साथ ही उनका कथन है कि जो व्यक्ति ब्रह्मचर्य का पालन करता है वह एक दीर्घसत्र ही प्रारम्भ करता है। विष्णु के अनुसार जो ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का कठोरता पूर्वक पालन करता है वह मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग में उच्च स्थान प्राप्त करता है और फिर मृत्योपरान्त इस संसार में पुनः जन्म नहीं लेता। वाराह गृह्यसूत्र के अनुसार जो ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्याश्रम के दौरान उपर्युक्त व्रतों का पालन करता है और मलिन शरीर, निर्बल दुबला-पतला कृश हुआ समावर्त्तन संस्कार करता है वह उन सभी वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है जिसकी वह मन में कामना करता है। इस प्रकार ब्रह्मचर्य के द्वारा व्यक्ति अपना सर्वांगीण विकास करता था।

ब्रह्मचर्याश्रम के उपरान्त गुरु की आज्ञा प्राप्त कर ब्रह्मचारी विवाहोपरान्त गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। वसिष्ठ के अनुसार ब्रह्मचर्याश्रम के उपरान्त व्यक्ति को स्नान करके क्रोध के रहित और प्रसन्नचित्त होकर गुरु की आज्ञा से समान जाति वाली, असगोत्र, असपिण्ड और अग्रवर, अस्पृष्ठ मैथुना (किसी के साथ शारीरिक सम्बन्ध न स्थापित करने वाली) और यवीयसी (युवा कन्या) के साथ विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए।

गृहस्थाश्रम

ब्रह्मचर्याश्रम के उपरान्त गुरु की आज्ञा प्राप्त कर ब्रह्मचारी विवाहोपरान्त गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। वसिष्ठ के अनुसार ब्रह्मचर्याश्रम के उपरान्त व्यक्ति को स्नान करके क्रोध रहित और प्रसन्नचित्त होकर गुरु की आज्ञा से समान जाति वाली, असगोत्र, असपिण्ड और अग्रवर, अस्पृष्टमैथुना (किसी के साथ शारीरिक सम्बन्ध न स्थापित करने वाली) और यवीयसी (युवा कन्या) के साथ विवाह करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए। इस आश्रम में व्यक्ति अपने पारिवारिक, सामाजिक तथा धार्मिक कर्त्तव्यों को पूरा करता था और समाज को सशक्त और गतिशील बनाने में अपना योगदान देता था। चूंकि यह माना जाता था कि अकेला आदमी धार्मिक कार्यों यथा-यज्ञों के अयोग्य है। इसलिए वह विवाहोपरान्त ही गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर इन कार्यों को पूर्ण करता था। इस आश्रम में वह अपने सामर्थ्य के अनुसार धन का उपार्जन करता था। परन्तु इस धन का उपयोग वह अपने सुखोपभोग मात्र के लिए ही नहीं करता था। अपितु अपने परिवार के अतिरिक्त समाज के लिए भी इसका उपयोग करता था। गृहस्थ से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह पहले देवताओं, पितरों, अतिथियों, ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों एवं भृत्यों का भली-भाँति पोषण करे और उसके पश्चात् ही जो शेष बचे, उससे अपना निर्वाह करे।

यद्यपि क्रम की दृष्टि से गृहस्थाश्रम दूसरे स्थान पर आता है। लेकिन महत्व की दृष्टि से इसका प्रथम स्थान है। यदि यह कहा जाए कि यह आश्रम सम्पूर्ण समाज की धुरी था, तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि सभी आश्रमों का पालन इसी के द्वारा होता था। दूसरा इसके महत्व का कारण एक यह भी था कि इसी आश्रम में सन्तानोत्पादन सम्भव था और सन्तानोत्पादन के द्वारा ही सृष्टि का क्रम अक्षुण्ण बना रहता था। अतः इस आश्रम को प्राथमिक महत्व दिया जाना स्वाभाविक था। प्रायः सभी धर्मशास्त्रकारों ने गृहस्थाश्रम को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। आपस्तम्ब ने चारों आश्रमों में सर्वप्रथम इसी आश्रम का उल्लेख किया है। उनके अनुसार तीन प्रकार की विद्याओं के ज्ञाता आचार्यों का मत है कि वेद ही प्रमाण

इस प्रकार प्रत्येक अगली पीढ़ी अपनी पूर्ववत्ती पीढ़ी के पुरुषों के सुख और यश को बढ़ाती है। इस प्रकार पुत्र वाले दिवंगत पुरुष महाप्रलय तक स्वर्ग में निवास करते है और स्वर्ग के विजेता होते हैं। गौतम ने सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम को सबसे अधिक महत्व दिया है।

है। इस कारण वेदों में ब्रीहि, यव, याज्ञपशु, आज्य, दुग्ध, खप्पर का उपयोग करते हुए पत्नी के साथ मंत्रों का उच्च या मन्द स्वर में पाठ कर जिन कर्मों को करने का विधान है, उन्हें करना चाहिए और इस कारण उनके विपरीत आचरण का निर्देश करने वाले नियमों को वेदज्ञ प्रमाण नहीं मानते हैं। अन्यत्र गृहस्थाश्रम की प्रशंसा में कहा गया है कि जो तीनों वेदों का अध्ययन, ब्रह्मचर्य, सन्तानोत्पत्ति, श्रद्धा, तप, यज्ञ और दानादि इन कर्मों को करता है, वह मेरे साथ (प्रजापति) निवास करता है और जो इनके विपरीत कर्म करता है वह धूल में मिल जाता है। साथ ही जो व्यक्ति सन्तान उत्पन्न करता है, वह अमरत्व को प्राप्त करता है। क्योंकि पिता ही दूसरा रूप धारण करके पुत्र के रूप में जन्म लेता है। जो पुत्र वेदोक्त शिष्ट कर्मों का सम्पादन करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं वे अपने दिवंगत पूर्वजों के यश और स्वर्गीय सुख की अभिवृद्धि करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक अगली पीढ़ी अपनी पूर्ववत्ती पीढ़ी के पुरुषों के सुख और यश को बढ़ाती है। इस प्रकार पुत्र वाले दिवंगत पुरुष महाप्रलय तक स्वर्ग में निवास करते हैं और स्वर्ग के विजेता होते हैं। गौतम ने सभी आश्रमों में श्रेष्ठ मानते थे। गृहस्थाश्रम को सबसे अधिक महत्व दिया है। उनके अनुसार सभी आचार्य गृहस्थाश्रम को सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम ही उत्पत्ति स्थान है, क्योंकि गृहस्थाश्रम के अतिरिक्त अन्य आश्रमों में सन्तान उत्पत्ति की व्यवस्था नहीं है। बौधायन ने भी इसका समर्थन किया है। वसिष्ठ ने गृहस्थाश्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा कि यदि व्यक्ति गृहस्थाश्रम में रहते हुए निरन्तर यज्ञों का सम्पादन करता है और तप में लगा रहता है तो वह चारों आश्रमों में सबसे अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। दूसरे स्थान पर उनका कथन है कि जिस प्रकार सभी बड़ी और छोटी नदियाँ समुद्र में जाकर मिलती हैं उसी प्रकार तीनों आश्रम गृहस्थाश्रम में ही आश्रय प्राप्त करते हैं, अथवा उसी की सहयाता से जीवित रहते हैं। अन्यत्र उसकी तुलना माता से करते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार माता का आधार पाकर प्राणी जीवित रहते हैं, उसी प्रकार गृहस्थाश्रम का आधार लेकर सभी भिक्षु जीवित रहते हैं। साथ ही उनका कथन है कि जो गृहस्थी नित्य स्नान करता है, जो सदैव यज्ञोपवीत धारण करता है, जो निरन्तर वेदों का पाठ करता है, जो पतित जातियों के व्यक्तियों को भोजन नहीं कराता, जो ऋतुकाल में ही अपनी पत्नी के साथ संभोग करता है और जो नियमानुसार धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करता है, वह मृत्योपरान्त कभी ब्रह्मलोक में पतित नहीं होता। विष्णु ने गृहस्थाश्रम के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि यज्ञ करने, तप करने तथा दान देने के कारण ही गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों में ज्येष्ठ है। उनके अनुसार ऋषि, पितृगण, देवता, सभी प्राणी तथा अतिथि भिक्षा के लिए गृहस्थ पर ही निर्भर रहते हैं। इसलिए यह आश्रम सभी आश्रमों में सर्वश्रेष्ठ है। उनके अनुसार जो गृहस्थी का सम्मान करता है, वेदों का अध्ययन करता है और पितरों को भोज्य पदार्थ तथा जल अर्पित करता है, वह इन्द्रलोक को प्राप्त करता है। महाभारत के अनुसार गहस्थाश्रम का महत्व शेष तीनों आश्रमों में सम्मिलित महत्व के बराबर है, क्योंकि केवल इसी आश्रम में देवताओं, पितरों और अतिथियों के लिए कुछ कार्य किए जा सकते हैं और धर्म, अर्थ तथा काम की प्राप्ति भी इसी आश्रम में सम्भव है। इस प्रकार प्राय: सभी धर्मशास्त्रकारों ने गृहस्थाश्रम को श्रेयस्कर मानते हुए गृहस्थ के लिए अनुपालनीय विभिन्न नियमों की स्थापना की।

– क्रमश:

आत्म विश्वास कैसे बढ़ाएं

अशोक गुप्ता

आत्मविश्वास से आशय स्वंय पर विश्वास एंव नियंत्रण पद से है। हमारे जीवन में आत्मविश्वास का होना उतना ही आवश्यक है जितना किसी फूल में खुशबू (सुगंध) का होना। आत्म विश्वास के बगैर हमारी जिंदगी एक जिन्दा लाश के समान हो जाती है। कोई भी व्यक्ति कितना भी प्रतिभाशाली क्यों न हो वह आत्म विश्वास के बिना कुछ नहीं कर सकता। आत्मविश्वास ही सफलता की नींव है, आत्मविश्वास की कमी के कारण व्यक्ति अपने द्वारा किये गए कार्य पर ही संदेह करने लायक है और नकारात्मक विचारों के जाल में फँस जाता है आत्मविश्वास उसी व्यक्ति के पास होता है जो स्वंय से संतुष्ट होता है एंव जिसके पास दृढ़ निश्चय, मेहनत, लगन, साहस वचनबद्धता आदि संस्कारों की सम्पति होती है।

आत्मविश्वास कैसे बढ़ाऐं

1. स्वंय पर विश्वास रखें। लक्ष्य बनायें एंव उन्हें पूरा करने के लिए वचनबद्ध रहें। जब आप अपने द्वारा बनाये गए लक्ष्य को पूरा करते हैं तो यह आपके आत्मविश्वास को कई गुना बढ़ा देता है। टालना बंद कीजिए, अभी शुरुआत कीजिए

2. ऐसे लक्ष्य बनाएँ जिसे आप प्राप्त कर सकें। क्योंकि जब आप ऐसे लक्ष्य बनाते है जिसे आप पूरा नहीं कर सकते तो यह आपके self confidence को गिरा देता है और आपका स्वंय पर विश्वास कम हो जाता है। होना यह चाहिए।

1. मापा जा सकने योग्य।

2. प्राप्त किया जा सके।

3. वास्तविक।

निर्धारित समय सीमा में पूरा होने लायक।

3. खुश रहें, खुद को प्रेरित करें असफलता से दुखी न होकर उससे सीख लें क्योंकि हमेशा इंक से ही आता है।

4. हमेशा आसान काम पहले करें और मुश्किल काम बाद में। क्योंकि जब आप पहले आसान कार्य अच्छे से कर लेते है तो दबाव कम हो जाता है और हौसला बढ़ता है जिससे मुश्किल कार्य भी आसान बन जाता है।

5. सकारात्मक सोचें, विनम्र रहें एंव दिन की शुरुआत किसी अच्छे कार्य से करें।

6. इस दुनिया में नामुनकिन कुछ भी नहीं है। आत्मविश्वास का सबसे बड़ा दुशमन किसी भी कार्य को करने में असफलता होने का है एंव डर को हटाना है तो वह कार्य अवश्य करें जिसमें आपको डर लगता है।

7. आप यह मत सोचिये कि लोग आपके बारे में क्या सोचेंगे- सबसे बड़ा यही रोग, क्या कहेंगे लोग ज्यादातर लोग कोई भी कार्य करने से पहले कई बार

आत्मविश्वास से आशय स्वंय पर विश्वास एंव नियंत्रण पद से है। हमारे जीवन में आत्मविश्वास का होना उतना ही आवश्यक है जितना किसी फूल में खुशबू (सुगंध) का होना। आत्म विश्वास के बगैर हमारी जिंदगी एक जिन्दा लाश के समान हो जाती है।

यही सोचते हैं की वह कार्य करने से लोग उनके बारे में क्या सोचेंगे या क्या कहेंगे और इसलिए वे कोई निर्णय ले ही नहीं पाते बस सोचते ही रह जाते हैं एंव समय उनके हाथ से पानी की तरह निकल जाता है। ऐसे लोग हमेशा डर-डर के जीते हैं और बाद में पछताते हैं। इसलिए दोस्तों, ज्यादा मत सोचिये जो आपको सही लगे वही कीजिये, क्योंकि शायद ही कोई ऐसा कार्य होगा जो सभी लोगों को एक साथ पसंद आये।

8. सच बोलें, ईमानदार रहें, धूम्रपान न करें, प्रकृति से जुड़े, अच्छे कार्य करें, जरुरतमंद की मदद करें क्योंकि ऐसे कार्य आपको सकारात्मक शक्ति देते हैं वही दूसरी ओर गलत कार्य एंव बुरी आदतें हमारे आत्मविश्वास को गिरा देती हैं।

9. वे कार्य करें जिसमें आपकी रुचि हो एंव कोशिश करें कि अपने कैरियर को उसी दिशा में आगे ले जाएँ, जिसमें आपकी रुचि हो।

10. अच्छे दिखिए और अपना काम कीजिये। दूसरों की देखा-देखी मत कीजिए, वह पहनिए जो आपको अच्छा लगे। कपड़े कम खरीदिये, लेकिन अच्छे खरीदिये।

11. व्यवहारकुशल बनें और हमेशा नम्रता व मुस्कराहट के साथ व्यवहार करें। इससे न केवल आपका आत्म-विश्वास बढ़ेगा बल्कि इससे आपके अच्छे मित्रों की संख्या भी बढ़ेगी। अच्छे मित्र हमेशा मदद करने के लिए तैयार रहते हैं और आपके सुख-दु:ख में हमेशा आपके साथ होते है।

12. Motivational Seminars में हिस्सा लें, ऐसे Television Program या videos देखें जो आपको inspire or motivate करें, Self Improvement and Personal Development की

किताबें एंव प्रेरणादायक लेख (Motivational Articles) पढ़ें। ऐसे प्रेरणादायक लेख (Motivational Articles) एंव किताबें हमारे mind को recharge कर देती हैं।

13. वर्तमान में जियें Live पद Present, क्योंकि न तो भूतकाल एंव न ही भविष्यकाल पर हमारा नियंत्रण है।

14. सकारात्मक सोचें Think Positive, अच्छे मित्र बनायें, Make Good Friends, बच्चों से दोस्तीं करें और आत्मचिंतन करें।

15. Meditation (ध्यान), योग (Yoga) एंव प्राणायाम (Pranayam) करें। अपने लिए समय निकालें और कुछ समय एकांत में बिताएं। स्वंय से बात करें Talk to Yourself, और यह Feel (महसूस) करें कि आप एक बेहतर इन्सान हैं।

16. अपनी सफलताओं को याद करें और visualize (कल्पना) करें कि आप कुछ भी कर सकते हैं You can do anything और आपके लिए नामुकिन कुछ भी नहीं (Nothing is Impossible for You)

17. हमेशा चिंतामुक्त (Tension Free) रहने की आदत बनायें, रचनात्मक तरीके से सोचें (Creative Thinking) और कुछ न कुछ नया करते रहें (Do Something New and Creative) दिन में कुछ समय संगीत सुनने, खेलने अथवा रचनात्मक कार्यों के लिए जरूर निकालें (Do something different)

18. आत्मनिर्भर बनें एवं जितना हो सके अपने कार्य स्वंय करने की कोशिश करें। आत्मनिर्भरता से आपका confidence लेवल बढ़ता है।

19. या तो ऐसे कार्य न करें जिसमें आपका interest नहीं और और आप अपना 100% नहीं दे सकते या फिर इन कार्यों में अपना interest बनाएं और Best करें। क्योंकि जब आप बिना interest के कोई काम करते हैं तो आप का confidence level गिरता है।

20. उस बारे में सोचना बंद कर दें जिस पर हमारा नियंत्रण न हो। अगर आप उन बातों या परिस्थितियों की वजह से दुखी हो जाते हैं जो आपके नियंत्रण में नहीं हैं तो इसका परिणाम समय की बर्बादी व भविष्य का पछतावा मात्र हैं जिससे आपका self confidence गिरता है।

21. निश्चय करके Commitment आप अपने लक्ष्य के प्रति अडिग रहें और अपना 100% दें। मेहनत व लगन से बड़े से बड़ा मुश्किल कार्य भी आसान हो जाता है। अगर लक्ष्य को तो प्राप्त करना है तो बीच में आने वाली बाधाओं को तो पार करना ही होगा, मेहनत करनी होगी, बार बार दृढ़ निश्चय से कोशिश करनी ही होगी। असफल लोगों के पास बचने का एकमात्र साधन यह होता है कि वे मुसीबत आने पर अपने लक्ष्य को ही बदल लेते हैं। अगर आपको सफल होना है तो अपने लक्ष्य पूरे करने की आदत बनाईये न कि उन्हें बार-बार बदलने की। अगर आपका अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ निश्चय नहीं है तो आपके confidence का गिरना तय है। ❑

जीवन और इच्छा

धर्मेन्द्र यादव

बौद्ध धर्म के एक भाग में यह आता है कि-अगर तुम्हें कोई बुद्ध मिलता है तो उसे मार दो। इसका अर्थ यह है कि किसी भी बुद्ध को तुम अपना आदर्श बनाकर उसकी नकल मत करो। ऐसा करते हुए तुम अपनी खुद की खासियत खो देते हो।

अर्जुन प्रश्न करते हैं, हे कृष्ण, मैं कुछ भी बुरा नहीं करना चाहता हूँ लेकिन कोई चीज है जो मुझे ऐसा करने के लिए बाध्य कर रही है। तो बताइए कि आखिर वह क्या है जो किसी व्यक्ति को वह काम करने के लिए उकसाती है जो वह नहीं करना चाहता है। कृष्ण उत्तर देते हैं, तुम कह सकते हो कि तुम ऐसा नहीं चाह रहे हो लेकिन तुम्हारे भीतर उसकी इच्छा बनी हुई है। तो यह उसी तरह है जैसे कि बहुत सारे सिगरेट पीने वाले मुझसे कहते हैं, स्वामीजी मैं सिगरेट पीना तो नहीं चाहता हूँ पर पीता हूँ। यह केवल शाब्दिक

मूल्य है और ऐसा मूल्य नहीं है जो आपने बहुत सोच-समझकर बोला हो। इसलिए हमें उस तरफ फिर से ध्यान देने की जरूरत है जो श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा था, इस बात को समझो अर्जुन, यह और कुछ नहीं हमारी इच्छा ही है। कहीं भीतर कोई इच्छा है और वह इच्छा ही तुम्हें आगे धकेल रही है। अगर यह इच्छा पूरी नहीं होती है तो तुम्हारा कर्म क्रोध में बदल जाएगा।

जीवन में दो तरह की इच्छाएँ होती हैं। एक खुशी के कारण होने वाली इच्छा और दूसरी खुशी के लिए होने वाली इच्छा। खुशी की इच्छा तुम्हें संसार की ओर ले जाती है। लेकिन खुश होकर जब तुम कोई इच्छा करते हो तो वह बिल्कुल अलग होती है। जब भी तुम्हारे भीतर खुशी की इच्छा है तो इसका यह मतलब भी है कि तुम मौजूदा समय में खुश नहीं हो। जब आप इस तरह का निष्कर्ष बना लेते हैं तो आप अपने भीतर झाँककर कभी नहीं देखते।

उस समय वानरों के पास थीं अलौकिक शक्तियाँ

बौद्ध धर्म में एक महान गुरु नागार्जुन हुए हैं। उन्होंने बहुत स्पष्ट कहा है कि ज्ञान प्राप्ति की इच्छा भी ज्ञान प्राप्ति की राह में एक बाधा है। यही वजह है कि बौद्ध शिक्षाओं में पूरी शिक्षा पूर्ण होने पर जो वाक्य कहा जाता है उससे सारगर्भित वाक्य मुझे आज तक नहीं मिला। बौद्ध धर्म के एक भाग में यह आता है कि-अगर तुम्हें कोई बुद्ध मिलता है तो उसे मार दो। इसका अर्थ यह है कि किसी भी बुद्ध को तुम अपना आदर्श बनाकर उसकी नकल मत करो। ऐसा करते हुए तुम अपनी खासियत खो देते हो।

अगर आप महान गुरुओं को देखोगे तो पाओगे कि हर कोई अपने समय में महान् रहा है। अगर ज्ञान-प्राप्ति होना है तो उसे स्वत: घटित होने दो। और उसके लिए तुम्हें उपलब्ध रहना होगा। इस उलटबाँसी को समझिए। यही वजह थी कि नागार्जुन ने कहा था अपने भीतर लालसा रखो लेकिन इच्छा मत रखो। उन्होंने लालसा और इच्छा के बीच फर्क किया। लालसा का अर्थ है जहाँ हो, वहाँ पूर्णता से मौजूद रहना, अपने भीतर एक प्यास रखना। जबकि इच्छा को जे. कृष्णमूर्ति ने कहा है कि वह यूचर-सायकोलॉजिकल टाइम है। इसका अर्थ लालसा, मतलब आज में होना है किसी भविष्य के स्वप्न में नहीं। जे. कृष्णमूर्ति कहते हैं कि जब आप अभी और आज में मौजूद हैं तो ज्यादा हासिल कर सकते हैं और आपकी ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है। इच्छा हमेशा से हमारी शत्रु रही है। आखिर इच्छा है क्या? मैं खुश हो जाऊँ यही हमारी शत्रु है। कृष्णमूर्ति ने इच्छा को आग कहा है और अगर आप आग में घी डालते हैं तो वह और भड़कती है। उसमें कभी तृप्ति नहीं आती। किसी मूर्ख व्यक्ति का कोई शत्रु नहीं होता लेकिन समझदार व्यक्ति के लिए यह शत्रु की तरह ही है। फिर आखिर यह इच्छा रहती कहाँ है? यह हमारे भीतर ही रहती है। यह आपकी संवेगों, मस्तिष्क और बुद्धि में रहती है। किसी भी तरह की वस्तु से हमारे संवेदांगों का महत्व ज्यादा है और मस्तिष्क हमारे संवेगों के भी ऊपर है और हमारे मस्तिष्क के ऊपर है हमारी बुद्धि। क्योंकि आपका जो यकीन या भरोसा है उसी के अनुरूप आपका मस्तिष्क काम करता है। आपके जो मूल्य हैं उनके अनुसार ही मस्तिष्क काम करता है। यह बताता है कि आपकी बुद्धि के भी ऊपर है आपकी आत्मा। वही चैतन्य है और उसे शब्दों में नहीं बताया जा सकता है। वह तो महसूस करने की चीज है। ❑

घरेलू सरल उपचार

दही मथें माखन मिले केसर संग मिलाये।
होठों पर लेपित करें रंग गुलाबी आये।।
बहती यदि जो नाक हो बहुत बुरा हो हाल।
यूकेलिप्टिस तेल लें सूंघें डाल रुमाल।।
अजवाइन को पीसिये गाढ़ा लेप लगाये।
चर्म रोग सब दूर हों तन कंचन बन जाये।।
अजवाइन को पीस लें नीबू संग मिलाये।
फोड़ा-फुंसी दूर हों सभी बला टल जाये।।
अजवाइन-गुड़ खाइए तभी बने कुछ काम।
पित्त रोग में लाभ हो पायेंगे आराम।।
ठंड लगे जब आपको सर्दी से बेहाल।
नींबू मधु के साथ में अदरक पियें उबाल।।
अदरक का रस लीजिए मधु लेवें समभाग।
नियमित सेवन जब करें सर्दी जाए भाग।।
रोटी मक्के की भली खा लें यदि भरपूर।
बेहतर लीवर आपका टीक्त बीक्त भी हो दूर।।
गाजर रस संग आंवला बीस औ चालीस ग्राम।
रक्तचाप हिरदय सही पायें सब आराम।।
शहद आंवला जूस हो मिश्री सब दस ग्राम।
बीस ग्राम घी साथ में यौवन स्थिर काम।।
चिंतित होता क्यों भला देख बुढ़ापा रोये।
चौलाई पालक भली यौवन स्थिर होये।।
लाल टमाटर लीजिए खीरा सहित सनेह।
जूस करेला साथ हो दूर रहे मधुमेह।।
प्रात:-संध्या पीजिए खाली पेट सनेह।
जामुन-गुठली पीसिये नहीं रहे मधुमेह।।
सात पत्र लें नीम के खाली पेट चबाये।
दूर करे मधुमेह को सब कुछ मन को भाये।।

सात फूल ले लीजिए सुन्दर सदाबहार।
दूर करे मधुमेह को जीवन में हो प्यार।।
तुलसीदल दस लीजिए उठकर प्रात:काल।
सेहत सुधरे आपकी तन-मन मालामाल।।.
थोड़ा सा गुड़ लीजिए दूर रहें सब रोग।
अधिक कभी मत खाइए चाहे मोहन भोग।।
अजवाइन और हींग लें लहसुन तेल पकाये।
मालिश जोड़ों की करें दर्द दूर हो जाये।।
ऐलोवेरा-आंवला करे खून में वृद्धि।
उदर व्याधियाँ दूर हों जीवन में हो सिद्धि।।
दस्त अगर आने लगें चिंतित दीखे माथ।
दालचीनी का पाउडर लें पानी के साथ।।
मुंह में बदबू हो अगर दालचीनी मुख डाल।
बने सुगंधित मुख महक दूर होये तत्काल।।
कंचन काया को कभी पित्त अगर दे कष्ट।
घृतकुमारि संग आंवला करे उसे भी नष्ट।।
बीस मिली रस आंवला पांच ग्राम मधु संग।
सुबह शाम में चाटिये बढ़े ज्योति सब दंग।।
बीस मिली रस आंवला हल्दी हो एक ग्राम।
सर्दी कफ तकलीफ में फौरन हो आराम।।
नीबू बेसन जल शहद मिश्रित लेप लगाये।
चेहरा सुंदर तब बने बेहतर यही उपाय।।
मधु का सेवन जो करे सुख पावेगा सोय।
कंठ सुरीला साथ में वाणी मधुरिम होय।
पीता थोड़ी छाछ जो भोजन करके रोज।
नहीं जरूरत वैद्य की चेहरे पर हो ओज।।
ठंड अगर लग जाय जो नहीं बने कुछ काम।
नियमित पी लें गुनगुना पानी दे आराम।।
कफ से पीड़ित हो अगर खांसी बहुत सताये।
अजवाइन की भाप लें कफ तब बाहर आये।।
अजवाइन लें छाछ संग मात्र पांच गिराम।
कीट पेट के नष्ट हों जल्दी हो आराम।।
छाछ हींग सेंधा नमक दूर करे सब रोग।
जीरा उसमें डालकर पियें सदा यह भोग।।

भगवान कृष्ण से द्वारकाधीश बने

राधा के कुछ कड़वे प्रश्न

साभार

कृष्ण और राधा स्वर्ग में विचरण कर रहे थे, तभी अचानक दोंनो एक दूसरे के सामने आ गए। कृष्ण तो विचलित हो गए और राधा प्रसन्नचित हो उठी, कृष्ण सकपकाए और राधा मुस्कुराई। इससे पहले कि कृष्ण कुछ कहते, इतने राधा बोल उठी 'कैसे हो द्वारकाराधीश?

जो राधा उन्है, कान्हा-कान्हा कह के बुलाया करती थी। उसके मुख से 'द्वारकाधीश' का संबोधन कृष्ण को भीतर तक घायल कर गया। फिर भी कृष्ण अपने आपको संभालते हुए बोले-राधा से-मै तो तुम्हारे लिए आज भी वही कान्हा हूँ जो कल था, तुम मुझे द्वारकाधीश मत कहो।

परमात्मा का प्रेम बे-शर्त होता है-

चलो बैठते हैं, कुछ तुम अपनी सुनाओ और कुछ मै अपनी कहता हूँ। सच कहूँ, राधा जब भी तुम्हारी याद आती थी, आँखे आँसुओं से भर आती थीं।

इतने में राधा बोली 'मेरे साथ ऐसा कभी कुछ नहीं हुआ। ना तुम्हारी याद आई, न कोई आँसू बहा। क्योंकि हम तुम्हें कभी भुले ही कहाँ थे जो तुम याद आते। इन आँखों में सदा तुम रहते हो कहीं आँसुओं के साथ निकल न जाओ इसलिए रोते भी नहीं थे। प्रेम के अलग होने पर तुमने क्या खोया जरा आज इसका आईना देख लो।

कुछ कडवे सच और प्रश्न सुन पाओ, तो सुनाऊँ आपको?

☞ क्या तुमने कभी सोचा कि इस तरक्की में तुम कितना पिछड़ गए,

☞ यमुना के मीठे पानी से जिंदगी शुरु की और समुन्द्र के खारे पानी तक पहुँच गए?

☞ एक ऊंगली पर चलने वाले सुदर्शन-चक्र पर भरोसा कर लिया और दसों ऊंगलिओ पर चलने वाली बाँसुरी को भूल गए?

☞ कान्हा जब तुम प्रेम से जुड़े थे तो जो ऊंगली गोवर्धन-पर्वत उठाकर लोगों को विनाश से बचाती थी। प्रेम से अलग होने पर उसी ऊंगली ने क्या क्या रंग दिखाया? सुदर्शन चक्र उठाकर विनाश के काम आने लगी।

☞ कान्हा और द्वारकाधीश में क्या फर्क होता है बताऊँ?

☞ अगर तुम कान्हा होते तो तुम सुदामा के घर जाते, सुदामा तुम्हारे घर नही आते।

☞ युद्ध में और प्रेम में यही तो फर्क होता है।

☞ युद्ध में आप मिटाकर जीतते है और प्रेम में आप मिटकर जीतते हैं ।

☞ कान्हा प्रेम में डूबा हुआ आदमी, दुखी तो रह सकता है पर किसी को दुखः नहीं देता।

☞ आप तो बहुत सी कलाओं के स्वामी हो, स्वप्न दूरद्रष्टा हो, गीता जैसे ग्रंथ के दाता हो, पर आपने यह कैसा निर्णय लिया, अपनी पूरी सेना ही कौरवों को सौंप दी और अपने आपको पांडवों के साथ कर लिया।

☞ सेना तो आपकी प्रजा थी। राजा तो पालक होता है, उनका रक्षक होता है। आप जैसा महान ज्ञानी उस रथ को चला रहा था, जिस रथ पर अर्जुन बैठा था। आपकी प्रजा को ही मार रहा था, अपनी प्रजा को मरते देख आप में करुणा नहीं जगी।

☞ क्यों, क्योंकि आप प्रेम से शून्य हो चुके थे। आज धरती पर जाकर देखो अपनी द्वारकाधीश वाली छवि को ढूँढते रह जाओगे, हर घर, हर मंदिर में मेरे साथ ही खड़े नजर आओगे।

☞ आज भी मै मानती हूँ कि लोग आपकी लिखी हुई गीता के ज्ञान की बातें करते हैं, उनके महत्व की बात करते हैं, मगर धरती के लोग युद्ध वाले द्वारकाधीश पर नहीं, प्रेम वाले कान्हा पर भरोसा करते हैं और गीता में कहीं मेरा नाम भी नहीं, लेकिन गीता के समापन पर राधे-राधे करते हैं। ❑

मन के लड्डू खाने वाला आलसी सदैव सपनों की दुनियाँ में ही जीता है

महिमा शुक्ला

आलसी सदैव सपनों की दुनियां में ही जीता है। ऐसे ही एक गांव में रहने वाले पति-पत्नी दिन में सपने देखा करते थे और अपने बुने सपनों में इस कदर खो जाते थे कि आस-पड़ोस के सभी लोग उनका तमाशा देखा करते थे।

आलसी सदैव सपनों की दुनियाँ में ही जीता है। ऐसे ही एक गांव में रहने वाले पति-पत्नी दिन में सपने देखा करते थे और अपने बुने सपनों में इस कदर खो जाते थे कि आस-पड़ोस के सभी लोग उनका तमाशा देखा करते थे।

एक दिन पति ने कहा- मेरे पास कुछ रुपये होते तो मैं एक दुधारू गाय खरीदता। पत्नी बोली- गाय घर में हो तो उसके दूध के लिए हण्डीया भी जरूरी होनी चाहिए। अगले दिन वह कुम्हार के यहां से पांच हण्डीयां ले आयी।

पति ने पूछा क्यों खरीद लायी? ओह! ये कुछ हण्डीयां, एक दूध के लिए, एक छाछ के लिए, एक मक्खन के लिए, और एक घी के लिए। बहुत खूब और पाँचवीं का क्या करोगी?

पत्नी ने कहा- इसमें अपनी बहन को थोड़ा दूध भेजूंगी। क्या? अपनी बहन को दूध भेजेगी? ऐसा कब से चल रहा है? मुझसे पूछा तक नहीं? पति गुस्से से चिल्लाया और सारी हण्डीयां तोड़ दी।

पत्नी ने पलट कर जवाब दिया- मैं गायों की देखभाल करती हूं, उन्हें धोती हूँ, बचे हुए दूध का क्या करूँ? यह मेरी मर्जी। निकम्मी स्त्री, मैं दिनभर हाड़तोड़ मेहनत करके गाय खरीदता हूँ और तू उसका दूध अपनी बहन को देती हैं। मैं तुझे जिंदा नहीं छोडूंगा।

पति गुर्राया और पत्नी पर बर्तन- भांडे फेंकने लगा। आखिर उनके पड़ोसी से रहा नहीं गया। वह उनके घर गया और भोलेपन से पूछा क्या बात है? बर्तन-भांडे क्यों फेंके जा रहे हैं? ससुरी अपनी बहन को हमारी गाय का दूध भिजवाती है। पड़ोसी तुम्हारी गाय?

हाँ! पैसों का जुगाड़ होते ही मैं एक गाय खरीदने वाला हूँ। पड़ोसी ने कहा- अच्छा वह गाय, पर अभी तो तुम्हारे पास कोई गाय नही है या है?

पड़ोसी ने कहा-कुछ ही दिनों की बात है, मैं गाय जरूर लाऊँगा। ओह! यह बात हैं अब मुझे पता चला कि मेरी सब्जीयों की बाड़ी कौन बर्बाद करता है? कहते हुए पड़ोसी ने एक लाठी उठाई और उसे मारने के लिए लपका। ठहरों, ठहरों मुझे क्यो मारते हो? तुम्हारी गाय मेरे मटर और खीरे खा गयी, तुम उसे बांधते क्यों नही?

कैसे मटर? कैसे खीरे? तुम्हारी सब्जीयों की बाड़ी है कहाँ? वही जिसकी, मैं बुवाई करने वाला हूँ। मैं महीनों से उसके बारे में सोच रहा हूँ। तुम्हारी गाय उसे तहस-नहस कर जाती है। पति, पत्नी को उनकी हरकतों का सही जवाब देने वाला मिल गया था। उसके बाद उन्होने कभी दिन में सपने नहीं देखे। दिवा स्वप्न न देखें, दिवा-स्वप्न बहुत भरमाते हैं, परेशानियाँ पैदा करते हैं।

❑

मेथी नीरोग जीवन की संगी-साथी

वैद्य दीपक

गृहस्थ धर्म में प्रवेश पाते ही नर-नारी दो-शरीर एक-प्राण बन कर पूर्णता को प्राप्त करते हैं, उसी तरह आरोग्य के साथ मेथी की अति महत्वपूर्ण भूमिका मानी गई है। अंग्रेजी में फेनुग्रीक (Fenugreek) 'मेथी' का ही रूप है। देश के सभी स्थानों पर यह उगाई जाती है। इसकी फलियों से निकलने वाले दानों का प्रयोग चिकित्सा में किया जाता है। मेथी के सूखे पंचांग में प्रोटीन, ग्लोब्यूलिन, हिस्टडीन जैसे रसायनों की मात्रा भरपूर पाई जाती है। इसके अल्ब्यूमिन वाले भाग में फास्फोरस और गंधक की मात्रा भी देखने को मिलती है। मेथी के बीजों में ट्रिगेनेल्लिन कोलीन आदि क्षाराभ मिले होते हैं। फास्फोरस, लेसिथिन और न्यूक्लिओ अल्ब्यूमिन रहने से काडलिवर के समान पोषक तत्व विद्यमान रहते हैं। अनेकों तरह के रोगों में इसके बीजों का प्रयोग होता है।

प्रसूता महिलाओं को मेथी के लड्डू बनाकर खिलाने से मल और आर्तव शुद्धि होती है, और भूख भी तीव्र हो उठती है। अग्निमांद्य, अजीर्ण, आमवात और कामशक्ति की दुर्बलता में प्रयोग करने पर नई स्फूर्ति और क्रियाशीलता आती है। रक्तातिसार और मसूरिका जैसे रोगों में मेथी के बीजों को भूनकर सेवन कराया जाता है। शरीर में किसी तरह का दर्द है तो बीजों की 1 तोला मात्रा का प्रयोग करने से लाभ होता है। प्रसूता को इसकी लपसी खिलाने से दुग्ध की मात्रा बढ़ जाती है। अतिसार से मुक्ति पाने हेतु घी में भुने हुए मेथी के बीज बड़े उपयोगी होते हैं। कॉडलिवर तेल के स्थान पर मेथी के बीजों का प्रयोग किया जा सकता है। फक्क रोग, गण्डमाला, वातरक्त, पाण्डु, मधुमेह और कमजोरी की स्थिति में मेथी बड़ी लाभकारी है। मिश्र में ज्वर रोकने के लिए मेथी को अंकुरित करके सेवन कराने की चिकित्सा आज भी प्रचलित है। त्वचा को स्वच्छ और चिकनी बनाये रखने हेतु मेथी के बीज बड़े लाभकारी हैं। सूजन होने पर और बाल झड़ने पर भी इसके

खूनी दस्त और बवासीर से रक्त आने पर मेथी के थोड़े से बीजों को पानी में उबालकर काढ़ा बनायें। छानकर रोगी को पिलायें इसके प्रयोग से रक्त आना बंद हो जाता है। शरीर के किसी अंग में चोट लगने और घाव होने पर मेथी के पत्तों को पीसकर लेप लगाने से सूजन भी पटक जाती है और जलन भी मिटती है।

बीजों का प्रयोग किया जाता है। शरीर के सूजन में मेथी के पत्तों का लेप बड़ा ही लाभप्रद होता है। लू लगने पर इसके पत्तों को पीसकर शरीर पर मलने से लाभ होता है।

स्वाद में चरपरी, गर्म, रक्तपित्त और कुपित करने वाली, कड़वी, मलावरोधक मेथी बड़ी पौष्टिक होती है। अरुचि, वमन, कफ, खांसी, वादी, कृमि और बवासीर रोग को भगाने वाली है। इसके बीजों का निरन्तर सेवन करने से हृदय रोग नहीं रहते। पत्तों की सब्जी बड़ी स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक होती है।

खूनी दस्त और बवासीर से रक्त आने पर मेथी के थोड़े से बीजों को पानी में उबालकर काढ़ा बनायें। छानकर रोगी को पिलायें इसके प्रयोग से रक्त आना बंद हो जाता है। शरीर के किसी अंग में चोट लगने और घाव होने पर मेथी के पत्तों को पीसकर लेप लगाने से सूजन भी पटक जाती है और जलन भी मिटती है। गर्मी का प्रभाव भी कम हो जाता है।

मनुष्य का शरीर जब पतला-दुबला होता है तो लोग हंसी उड़ाते हैं गेहूँ का आटा, बूरा और शहद में मेथी के बीजों को मिलाकर खाने से मोटापा बढ़ता है और बल भी। आवाज भी साफ हो जाती है। सर्दी के दिनों में मेथी के बीजों को घी में भूनकर खोया, गोंद, मेवा, मिष्ठान आदि को मिलाकरर लड्डू बनायें और खायें। शरीर की शक्ति बढ़ती है। जब किसी को सर्दी की शिकायत हो तो आलू, पालक और लौकी के साथ मेथी की सब्जी का प्रयोग करें। पन्द्रह दिन तक मेथी-पालक की सब्जी को मिलाकर खाने से शरीर की पाचन-क्रिया में वृद्धि होती है। मेथी की पत्तियों का रस 200 मि० ली० की मात्रा में लेने से बहुमूत्र की शिकायत नहीं रहती इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वस्थ जीवन हेतु मेथी का साथी होना जरूरी है। ❑

गलतफहमी!

एक औरत हाथ में हथौड़ा लिये अपने बेटे के स्कूल में पहुँची और चपरासी से पूछने लगी, शुक्ला सर की क्लास कौन-सी है? क्यों पूछ रही हैं? हथौड़े को देखकर चपरासी ने डरते हुए पूछा। अरे वो मेरे बेटे के क्लास टीचर हैं। हथौड़ा हिलाते हुए वो औरत उतावलेपन से बोली। चपरासी ने दौड़कर शुक्ला सर को खबर दी कि एक औरत हाथ में हथौड़ा लिये आपको ढूँढ रही है। शुक्ला सर के छक्के छूट गये। वो दौड़कर प्रिंसिपल की शरण में पहुँचे। प्रिंसिपल साहब तत्काल उस औरत के पास पहुँचे और उनसे विनयपूर्वक बोले, कृपया करके आप शांत हो जाईये। मैं शांत ही हूँ, औरत बोली। प्रिंसिपल बोले, आप मुझे बताईये कि बात क्या है? औरत ने कहा, बात कुछ भी नहीं है। मैं बस शुक्ला सर की क्लास में जाना चाहती हूँ। प्रिंसिपल-लेकिन क्यों? औरत क्योंकि मुझे वहाँ उस बेंच की कील ठोकनी है, जिस पर मेरा बेटा बैठता है। कल वो स्कूल से तीसरी पैंट फाड़कर लाया है।

नजरिया मजदूर और साधु का

हिवा संपादक

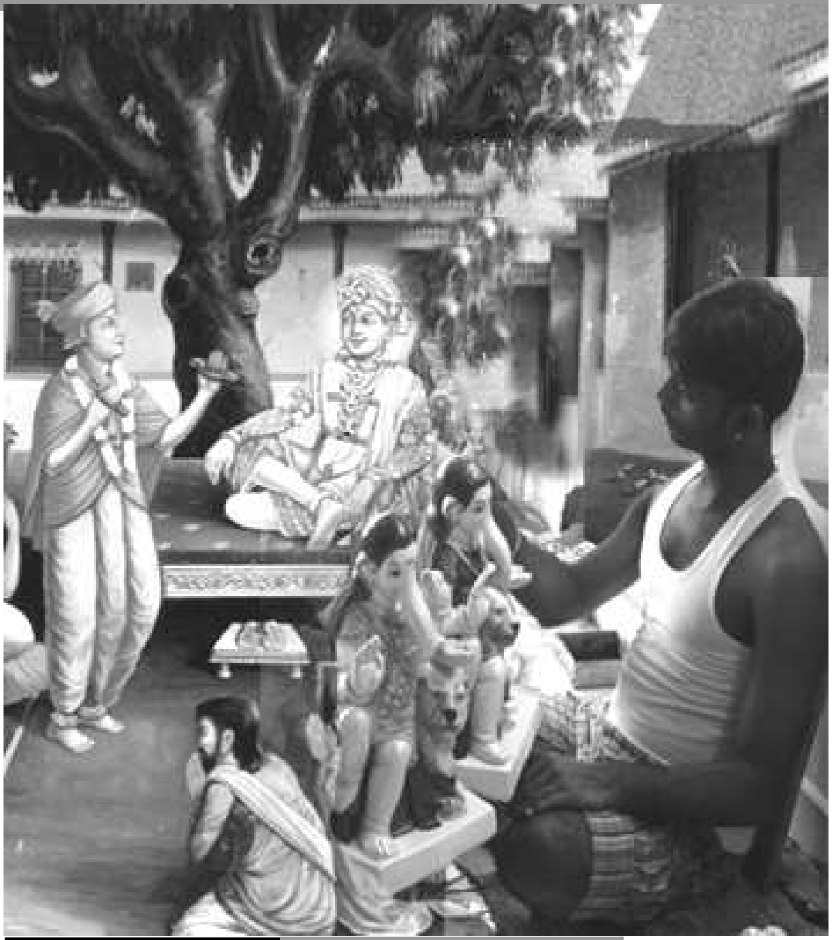

एक बार एक साधु किसी गाँव से हो कर तीर्थ को जा रहे थे। थकान हुई तो उस गाँव में एक बरगद के पेड़ के नीचे जा बैठे। वहीं पास में कुछ मजदूर पत्थर के खंभे बना रहे थे। उधर से एक साधु गुजरे। उन्होंने एक मजदूर से पूछा- यहां क्या बन रहा है?

एक बहुत पुरानी कथा है। एक बार एक साधु किसी गाँव से हो कर तीर्थ को जा रहे थे। थकान हुई, तो उस गाँव में एक बरगद के पेड़ के नीचे जा बैठे। वहीँ पास में कुछ मजदूर पत्थर के खंभे बना रहे थे। उधर से एक साधु गुजरे। उन्होंने एक मजदूर से पूछा- यहां क्या बन रहा है? उसने कहा- देखते नहीं पत्थर काट रहा हूं? साधु ने कहा-हां, देख तो रहा हूँ। लेकिन यहाँ बनेगा क्या? मजदूर झुंझला कर बोला-मालूम नहीं।

यहाँ पत्थर तोड़ते-तोड़ते जान निकल रही है और इनको यह चिंता है कि यहाँ क्या बनेगा। साधु आगे बढ़े। एक दूसरा मजदूर मिला। साधु ने पूछा-यहाँ क्या बनेगा? मजदूर बोला-देखिए साधु बाबा, यहाँ कुछ भी बने। चाहे मंदिर बने या जेल, मुझे क्या। मुझे तो दिन भर की मजदूरी के रुपए मिलते हैं। बस शाम को रुपए मिलें और मेरा काम बने। मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि यहाँ क्या बन रहा है। साधु आगे बढ़े तो तीसरा मजदूर मिला। साधु ने उससे पूछा- यहाँ क्या बनेगा? मजदूर ने कहा-मंदिर। इस गाँव में कोई बड़ा मंदिर नहीं था। इस गाँव के लोगों को दूसरे गाँव में उत्सव मनाने जाना पड़ता था। मैं भी इसी गाँव का हूँ। ये सारे मजदूर इसी गाँव के हैं। मैं एक-एक छेनी चला कर जब पत्थरों को गढ़ता हूँ तो छेनी की आवाज में मुझे मधुर संगीत सुनाई पड़ता है। मैं आनंद में हूँ। कुछ दिनों बाद यह मंदिर बन कर तैयार हो जाएगा और यहाँ धूम-धाम से पूजा होगी। मेला लगेगा। कीर्तन होगा। मैं यही सोच कर मस्त रहता हूँ। मेरे लिए यह काम, काम नहीं है। मैं हमेशा एक मस्ती में रहता हूँ। मंदिर बनाने की मस्ती में। मैं रात को सोता हूँ तो मंदिर की कल्पना के साथ और सुबह जगता हूँ तो मंदिर के खंभों को तराशने के लिए चल पड़ता हूं। बीच-बीच में जब ज्यादा मस्ती आती है तो भजन गाने लगता हूं। जीवन में इससे ज्यादा काम करने का आनंद कभी नहीं आया। साधु ने कहा-यही जीवन का रहस्य है मेरे भाई। बस नजरिए का फर्क है। कोई काम को बोझ समझ रहा है और उसका पूरा जीवन झुंझलाते और हाय- हाय करते बीत जाता है। लेकिन कोई काम को आनंद समझ कर जीवन का आनंद ले रहा है। ❑

हमारे जमाने में मोबाइल नहीं था

चश्मा साफ करते हुए उस बुजुर्ग ने अपनी पत्नी से कहा: हमारे जमाने में मोबाइल नहीं थे..

'पत्नी' : पर ठीक पाँच बजकर पचपन मिनट पर मैं पानी का ग्लास लेकर दरवाजे पे आती और आप आ पहुँचते..

'पति' : हाँ मैंने तीस साल नौकरी की, पर आज तक मैं ये नहीं समझ पाया कि मैं आता इसलिए तुम पानी लाती थीं या तुम पानी लेकर आती थीं इसलिये मैं आता था..

'पत्नी' : हाँ.. और याद है.. तुम्हारे रिटायर होने से पहले जब तुम्हें डायबीटीज नहीं थी और मैं तुम्हारी मनपसन्द खीर बनाती थी तब तुम कहते कि आज दोपहर में ही ख्याल आया

कि खीर खाने को मिल जाए तो मजा आ जाए..

'पति': हाँ.. सच में.. ऑफिस से निकलते वक्त जो भी सोचता, घर पर आकर देखता कि तुमने वही बनाया है..

'पत्नी' : और तुम्हें याद है जब पहली डिलीवरी के वक्त मैं मैके गई थी और जब दर्द शुरु हुआ। मुझे लगा काश..

तुम मेरे पास होते.. और घंटे भर में तो जैसे कोई ख्वाब हो, तुम मेरे पास थे..

'पति': हाँ.. उस दिन यूँ ही ख्याल आया कि जरा देख लूँ तुम्हें !!

'पति': और जब तुम मेरी आँखों में आँखें डाल कर कविता की दो लाइनें बोलते..

'पति': हाँ और तुम शर्मा के पलकें झुका देतीं और मैं उसे कविता की लाइन समझता !!

'पति': और हाँ जब दोपहर को चाय बनाते वक्त मैं थोड़ा जल गई थी और उसी शाम तुम बर्नोल की ट्यूब अपनी जेब से निकाल कर बोले, इसे अलमारी में रख दो..

'पति': हाँ.. पिछले दिन ही मैंने देखा था कि ट्यूब खत्म हो गई है,पता नहीं कब जरूरत पड़ जाए, यही सोच कर मैं ट्यूब ले आया था!

'पति': तुम कहते आज ऑफिस के बाद तुम वहीं आ जाना-सिनेमा देखेंगे और खाना भी बाहर खा लेंगे..

'पति': और जब तुम आतीं तो जो मैंने सोच रखा होता था तुम वही साड़ी पहन कर आती थीं.....

फिर नजदीक जा कर उसका हाथ थाम कर कहा: हाँ हमारे जमाने में मोबाइल नहीं थे..

पर.. हम दोनों थे!!

'पति': आज बेटा और उसकी बहू साथ तो होते हैं पर..

बातें नहीं व्हाट्सएप होता है.. लगाव नहीं टैग होता है.. केमिस्ट्री नहीं कमेन्ट होता है.. लव नहीं लाइक होता है.. मीठी नोकझोंक नहीं अनरेन्ड होता है.. उन्हें बच्चे नहीं कैन्डीक्रश सागा, टैम्पल रन और सबवे-सर्फर्स चाहिए..

'पति': छोड़ो ये सब बातें.. हम अब वायब्रंट-मोड़ पे हैं हमारी बैटरी भी 1 लाइन पे है.. अरे..!! कहाँ चली..?

'पति': चाय बनाने.. 'पति': अरे मैं कहने ही वाला था कि चाय बना दो न..

'पति': पता है.. मैं अभी भी कवरेज में हूँ और मैसेज भी आते हैं.. दोनों हँस पड़े..

'पति': हाँ हमारे जमाने में........।

❑❑❑

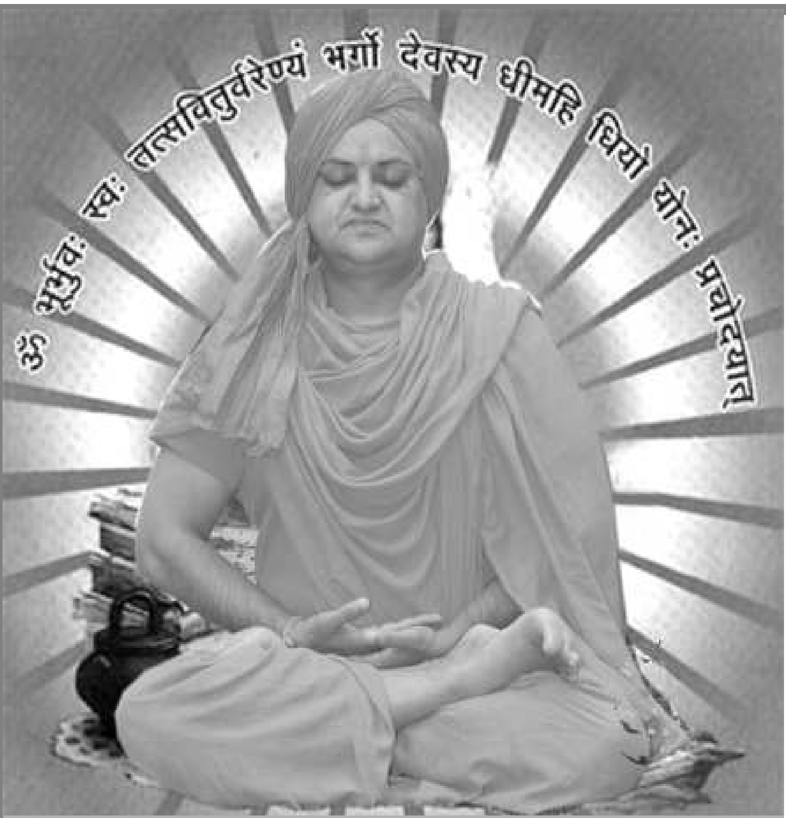

चिन्तन

बड़े सपने, बड़ी मुश्किलों को पार

- बड़े सपने बुरे दौर से गुजरे बिना और लोगों की उपेक्षा सहे बिना पूरे नहीं होते हैं। दुनिया सफल होने के बाद आपके साथ आ खड़ी होगी, लेकिन सफलता पाने से पहले तक वह आपके रास्ते में रोड़े हीं अटकाएगी।
- बड़े सपने, बड़ी मुश्किलों को पार करने के बाद ही पूरे होते हैं।
- सपने किसी की जागीर नहीं होते, न तो सफलता किसी की गुलाम होती है. सपने तो उनके पूरे हो हीं जाते हैं जो शिद्दत से कोशिश करते हैं। बहाने बनाने वाले बहाने ही बनाते रह जाते हैं और बिना रुके कोशिश करने वालों को सफलता मिल जाती है।
- कितने खूबसूरत थे बचपन के वे दिन, हमें पता तो होता था कि हम क्या चाहते हैं। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, हम जिंदगी की दौड़ में और तेज भागने लगते हैं। लेकिन फिर हमें पता ही नहीं होता है कि हमें क्या चाहिए. और क्या पाकर हमें संतुष्टि मिलेगी।
- जिंदगी में चाहे जितना भी तेज दौडें आपको आपकी मंजिल का पता तो मालूम होना ही चाहिए।
- अपने राज किसी को न बताएँ, ताकि कोई आपके राज का आपके ही खिलाफ इस्तेमाल न कर पाए।
- पिछली गलतियों से सबक लें और उन्हें दोबारा न दोहराएँ।
- लोगों का विश्वास जीतना सीखें, और कभी भी विश्वासघात करके दूसरों को दर्द न दें।
- सभी को एक हीं तराजू में ना तौलें। अगर दुनिया में विश्वासघाती लोग हैं, तो विश्वास करने लायक लोग भी हैं और यह दुनिया विश्वास के बल पर ही टिकी हुई है।
- व्यक्ति परखने की अपनी क्षमता बढ़ाएँ, वरना विश्वासघात करने वाले लोगों के कारण आप बार-बार दुखी होते रहेंगे।
- किसी का भी वर्तमान देखकर उसका मजाक नहीं उड़ाना चाहिए, क्योंकि समय बदलता रहता है, समय के साथ कर्म बदलते रहते हैं, और कर्मों से भाग्य बदलता रहता है।
- समय में इतनी ताकत होती है कि वह किसी की भी किस्मत कभी भी पलट देता है

❑

शब्द हो गया भारत माता

पिछले अंक का शेष भाग

प्रशंसक प्रस्तुति भावक –प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

भारतीय मनीषा शब्द को ब्रह्म मानती है जो अमर है। आधुनिक विज्ञान भी शब्द को अनश्वर स्वीकारता है। गंगोत्री से स्रवित जल अनेक झरनों, नदी–नालों को समेटता गंगा बनकर सागर में समाहित हो गया, तब ने गंग रही, न समुद्र! रह गया सिर्फ एक शब्द–जल, जो समुद्रों के विस्तार में भी विराट ब्रह्म की भाँति व्याप्त है और वर्षा की एक बूंद में भी उसी सूक्ष्मता से विद्यमान है–जैसे इंसान की आत्मा में ब्रह्म अवस्थित है। भारत की आध्यात्मिक मनोभूमि तथा साहित्यिक, सांस्कृतिक बुनियाद पर यह कविता।

अमृतसर के गुरुद्वारे ने चिश्ती की दरगाह चढ़ाया।
शब्द वही फानूस हो गया, एक नूर का अलख जगाया।।
मियां मीर बन गया शब्द ही गुरु के घर की नींव डालकर।
शब्द हुआ 'बाला' 'मरदाना' नानक-सेवा-धर्म पालकर।।

कवि मयूख ने जो बनवाया शब्द वही शिव का मंदिर है।
कर्मावती बहन ने भेजी-शब्द हुमायूं की राखी है।।
द्रष्टा और भोक्ता बनकर एक वृक्ष पर बैठे है जो।
पर्ण-सुपर्ण नाम धराए वेदों में वर्णित पाखी है।।

पूर्ण-मदः है, पूर्ण-मिद है पूर्णतः है, पूर्णस्य है।
यही पूर्णमेवाशिष्यते शब्द-ब्रह्म का यह रहस्य है।।
इसी पूर्ण तक तुझको जाना, इसी पूर्ण को मैंने पाना।
इसी नदी के किसी घाट से सबको अपनी प्यास बुझाना।।

बांधे हुए इसे सीमा में तट तो केवल मर्यादा है।
जल तो एक नदियाँ में पीने में कैसी बाधा है।।
वही धड़कता तेरे दिल में, वह धड़कना मेरे दिल में।
पंडित-मुल्ला मुझे बता फिर भेद कहाँ पर है मंजिल में।।

नटनागर ने सृष्टि-नदी को अपने महारास में बांधा।
शब्द हो गया गोपी-गोपी, शब्द हो गया राधा-राधा।।
सभी एक ही दरवाजे से जा सकते हैं काशी-काबा।
खोल किवाड़ें खड़ा हो गया है शिरडी का सांई बाबा।।

इसी शब्द की मदिरा पीकर मगन हो गई 'संत राबिया'।
ब्रह्म-सत्य कर गई उजागर इसी शब्द में विदुषी गार्गी।।
अपनी परिमित परिभाषा की भिन्न-भिन्न व्याख्यार लेकर।
इसी शब्द में उलझ रहे हैं दक्षिण-पंथी, वाममार्गी।।

शब्द हो गया माता मरियम ईश-पुत्र का हुआ अवतरण।
अपनी सूली आप उठाए करता करुणा का अभिवर्षण।।
शब्द धर्म की सांची बानी, शब्द हमारा भ्रष्ट अनुसरण।
शब्द मनुज का उत्तम चिंतन और यही निकृष्ट आचरण।।

शब्द प्रतिज्ञा परशुराम की, दुर्बासा का शब्द शाप है।
शब्व वन गमन श्रीराम का, दशरथ का कायर विलाप है।।
शब्द दक्षिणा एकलब्य की, शब्द द्रोण का पक्षपात है।
शब्द राजपुत्रों के हित में जनता से विश्वासघात है।।

कई बार दिगभ्रमित हो गई गलत अर्थ पाकर मानवता।
कई बार छल गई धर्म को राजनीति की शासक-सत्ता।।
शब्द कोष में शामिल होकर शब्द सांप्रदायिक हो जाता।
शब्द विराट, अमर, अविनश्वर, अपने सीमित अर्थ बताता।।

यही शब्द हो गया अरस्तू यही पाइथागोरस होता।
लेनिन मार्क्स गोर्की बनकर ये ही फुटपाथों पर सोता।।
यही शब्द संत्रास हो गया शोषित-पीड़त मानवता का।
धरती पर फहराती आई आदि-काल से युद्ध-पताका।।

यही शब्द है शैले, गेटे ये ही वडर्सवर्थ का मानी।
यही बायरन बन जाता जब कविताएं रचता रोमानी।।
एडोनियस ग्रंथ को रचकर कीट्स विश्व में नाम कमाता।
मिडनाइट का स्वप्न संजोकर शब्द शेक्सपीयर हो जाता।।

शब्द माइकल-एंजेलो है, संगमरमरी स्वप्न उकेरे।
मोनालिसा अधर पर अपने भेद भरी मुस्कान बखेरे।।
ये तो यायावर रोमा है, ये तो बंजारों के डेरे।
कैद नहीं कर सके शब्द को रंग-धर्म देशों के घेरे।।

जो भी असत अशिव इस भू पर उससे सतत् लड़ेगा कवि स्वर।
शब्द हमारा मारू बाजा, शब्द हमारा युद्ध-गान है।।
शब्द हुआ हड्डी दधीचि की, शब्द वज्र संकल्प हमारा।
शब्द हमारा नहीं मरेगा, नीलकंठ का गरल पान है।।

नागासाकी-हिरोशिमा पर शब्द प्रलय का वज्रपात है।
दिशा न बदली तो मनुष्य के आगत का यह आत्मघात है।।
विज्ञानी प्रज्ञा के द्वारा किया गया यदि ऐसा धोखा।
शब्द बनेगा नाव नूह की, शब्द बनेगा मनु की नौका।।

आओ थोड़ा सा रो लें

मनोहर लाल 'रत्नम'

राम भरोसे की बात सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ कि हर रोज हँसने वाला, सबको हँसने वाला और चलते आदमी की गाल पर झांपड़ मार कर पूछने वाला आपको दर्द तो नहीं हुआ? राम भरोसे आज अचानक रोने की बात करें कर रहा है?

आज के तनाव भरे, वातावरण में, मेरा एक पड़ोसी जो शक्ल और अक्ल से बिलकुल जोकर लगता है, अचानक आ धमका और बोला-आओ यार आज थोड़ा सा रो ही लें, क्योंकि बीवी मायके चली गई है, टाइम है कि ससुरा काटे से कटने का नाम ही नहीं ले रहा।

रामभरोसे की बात सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ कि हर रोज हँसने वाला, सबको हँसाने वाला और चलते आदमी के गाल पर झाँपड़ मार कर पूछने वाला 'आपको दर्द तो नहीं हुआ?', राम भरोसे आज अचानक रोने की बात क्यों कर रहा है? मैंने उससे साहस कर पूछ लिया। क्यों भाई भरोसे आज हँसने की बात छोड़कर तुम्हें रोने की अक्ल कहाँ से आ गई, जब तुम्हारे पिता देहान्त हुआ था, शायद तुम तब भी नहीं रोये थे, बल्कि नाच-कूद कर सबको यही बता रहे थे कि मेरे गाल पर थप्पड़ मार-मार कर पंजाब का नक्शा बनाने वाला आज दुनिया छोड़ गया है, पर आज तुमसे रोने की बात सुनकर बड़ा अजीब सा लग रहा है, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?

रामभरोसे ने नकली हँसने की अदा दिखाते हुए कहा-भैया मैं अभी अभी डॉक्टर से अपना मैडिकल चैकअप करा कर आ रहा हूँ। बी.पी. यानि की रक्त संचार 120-80 है, शुगर तो साली नाम को नहीं है, ब्लड-यूरिया ठीक, एक्सरे ठीक, अल्ट्रा-साऊंड ठीक, सब कुछ नारमल है, फिर भी पता नहीं क्यों मेरा मन कल से रोने को कर रहा है, बीवी मायके गई है इसलिए नहीं, मगर बार-बार मन कह रहा है, मैं रोऊँ और कोई मेरा रोना सुने जरूर, इसीलिए मैं तुम्हारे पास आ गया हूँ।

भरोसे भैया, इस तनाव भरे वातावरण में आज हर आदमी रो ही तो रहा है, मगर तुम्हें रोने की आवश्यकता क्यों पड़ी, यह पहेली मेरी समझ से परे है।

भरोसे ने एक मोटी सी भद्दी गाली देते हुए कहा-'भाई! जब साल में तीन बार गैस के पैसे बढ़ रहे हों, गरीब और मजदूरों को मिलने वाला राशन बन्द कर दिया जाए, मिटटी का तेल चोर-बाजारी में पन्द्रह रूपये बोतल बिकने लगे तो कौन ससुर भला हँस पाएगा? डीजल और पेट्रोल के दामों में आग लग गई है, प्याज ने सरकार बदल दी हो, नमक ने नाच नचाया है तो भला कौन है जो खुलकर हँसने की हिम्मत कर पाएगा।

पाकिस्तान पिछले पचास वर्षो से कश्मीर के पीछे हाथ धोकर पड़ा है, सारा कश्मीर छलनी हो चुका है। गुजरात भूकम्प और दंगों की चपेट में आ चुका है। उत्तरांचल, झारखण्ड और छत्तीसगढ़ नए राज्य बन गए हैं क्या यह छत्तीस का

आँकड़ा नहीं है हमारी एकता के लिए।

पत्नि, पति को पीट रही हो, बेटा माँ-बाप का अपमान कर रहा हो, बेटी मनमाना जीवन जीने लगे, भाई-भाई का शत्रु बनकर तना हो तो भला हँसना किसको याद आएगा। पत्रकारों का

जीवन में जो आदमी रोना नहीं जानता उसका जीना बेकार है, जो रो नहीं सकता वह बेकार, जो रोता नहीं है, वह बेकार, इसलिए जरूर रोना चाहिए जैसे भगवान भोले नाथ ने जब पार्वती द्वारा बनाए बालक का सर काट दिया तो पार्वती जोर-जोर से रोई, तब शिव ने हाथी का सर काटकर पार्वती के सुत को गणेश बना दिया था।

अपहरण हो रहा हो, पत्रकार पिट रहे हों, लेखकों को रुलाया जा रहा हो, नेता कमीनेपन पर उतर रहें हों, तो भल किसको रोना नहीं आएगा।

समूचा देश आतंक की काली छाया में जी रहा है, आतंकवादी दिल्ली के लालकिला में घुसे, भारत की संसद पर हमला कर दिया, समूचे विश्व ने इस घटना की निन्दा की, मगर हम एक मुक्का भी न तान सके। हमें हमारी घटती मर्दानगी पर क्या रोना नहीं आएगा? जम्मू-कश्मीर विधानसभा पर हमला क्या हँसने के लिए है? अक्षरधाम पर हमले ने सबको रुलाया ही तो है। नक्सलवाद अपनी जड़ें गहरी कर रहा है, निर्दोष लोग रोग मारे जा रहे हैं, क्या हम हर घटना पर हँसने का नाम ले सकते हैं, नहीं तो फिर हमें भला रोने से डर क्यों लगता है, इस पर कभी आपने मिलकर, बैठकर विचार किया है।

कभी खुद पर कभी, हालत पर रोना आया।
बात निकली तो हर बात पर रोना आया॥

यह अब से तीस-चालीस साल पहले किसी शायर ने कहा था। हमें अपने आप पर और देश के हालात पर जोर-जोर से रोना चाहिए, रोने से आदमी का रक्त संचार सही होता है, मन हल्का हो जाता है और तनाव भी कम होने लगता है।

हम रो लेंगे, तुम रो लेना, रोते हुए जियेंगे।
रोते-रोते अपने आँसू, अपने आप पियेंगे॥

जीवन में जो आदमी रोना नहीं जानता उसका जीना बेकार है, जो रो नहीं सकता वह बेकार, जो रोता नहीं है, वह बेकार, इसलिए जरूर रोना चाहिए जैसे भगवान भोलेनाथ ने जब पार्वती द्वारा बनाए बालक का सर काट दिया तो पार्वती जोर-जोर से रोई, तब शिव ने हाथी का सर काटकर पार्वती के सुत को गणेश बना दिया था। राम के जन्म लेने पर माँ कौशल्या ने राम को रोने के लिए कहा तो राम रोये नहीं, माँ के बार-बार कहने पर बालक राम ने कह दिया था। माँ, यदि आप मुझे रोने के लिए विवश करती हो तो मैं पूरे जीवन भर रोता हर सकता हूँ। धोबी के कहने पर सीता के त्यागने पर रोये, लव-कुश के साथ युद्ध में और जब धरती फटी सीता उसमें समा गई, तब भी राम रोये थे। कृष्ण ने जन्म के समय जब रोने की मुद्रा बनाई तो यशोदा ने कृष्ण के मुंह पर हाथ रख दिया और कहा-लल्ला रोना नहीं। तुम्हारा रोना सुनकर पहरेदार जाग जाएंगे, कंस आ जाएगा। है न रोने का कितना बड़ा महत्व यह कह कर भरोसे मेरे कांधे पर सर रख कर पता नहीं कब तक रोता ही रहा।

रत्नम् रोकर देख ले रोता है संसार।
जो न रोया आज तक, वह मानव बेकार॥

❑

शनि बाधा शांति के कुछ सरल उपाय

कौशल पाण्डेय (ज्योतिष)

शनि ही नहीं, किसी भी ग्रह के अनिष्ट फल से बचाव के लिए श्री हनुमान जी की उपासना बेहद प्रभावकारी मानी गई है। किसी भी कार्य में बाधा उत्पन्न हो रही हो, बहुत दिनों से कोई कार्य रुका हुआ हो, व्यापार में विघ्न आ रहा हो, आर्थिक परेशानी आ रही हो, विवाह में विलम्ब हो रहा हो, गृह क्लेश हो और शत्रु पीड़ा निवारण व असाध्य रोग से छुटकारा पाने के लिए यह अचूक उपाय है।

विधि-सर्वप्रथम एक चौकी (पाटे) पर लाल वस्त्र बिछा दें। चौकी पर श्री हनुमानजी की मूर्ति या चित्र रखकर, साथ में जल, पुष्प, बेसन या बूंदी के लड्डू (प्रसाद के लिए) रखें, गाय के घी का दीपक जलाकर ज्योति प्रज्ज्वलित करें। **निम्नानुसार ये सभी पाठ करने आवश्यक हैं।**

सर्वप्रथम 1. हनुमानाष्टक का पाठ करें। 2. हनुमान चालीसा का पाठ करें। 3. रामायण के किष्किन्धाकाण्ड के दोहा नं. 28 व 29 का चौपाई सहित सोरठा तक पाठ करें। 4. सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड का पाठ करें। 5. रामायण के लंकाकाण्ड के श्लोक से दोहा नं. 3 तक चौपाई सहित पाठ करें। 6. हनुमान चालीसा का फिर पाठ करें। 7. हनुमानाष्टक का फिर से पाठ करें। इसके बाद आरती करें व भोग लगाकर प्रसाद सभी को बांटें। किसी भी कार्य के सफलता के लिए यह प्रयोग केवल शनिवार या मंगलवार को श्रद्धापूर्वक करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यह प्रयोग बहुत ही सिद्ध प्रयोग है। असाध्य रोग से छुटकारा पाने के लिए तथा भूमि दोष व वास्तु दोष यदि है तो हनुमानजी के साथ मंगल यंत्र की प्राण-प्रतिष्ठा कराकर साथ रखने से सम्पूर्ण दोषों का शमन होता है।

नोट : यह प्रयोग सात या ग्यारह सप्ताह तक करना है।

मनोकामना पूर्ति के उपरान्त इसी क्रमानुसार पुस्तक छपवाकर श्रद्धालु लोगों को वितरित कर पुण्य लाभ उठा सकते हैं। सुन्दरकाण्ड पाठ करने की पुस्तक आप हमसे भी मंगा सकते है, जिसकी दक्षिणा मात्र 51 रुपये है। जिसमें पूर्ण विधि-विधान तथा क्रमानुसार सभी पाठ दिये गये है। **शनि की महादशा, साढ़ेसाती एवं ढैय्या तथा कुंडली में अशुभ शनि के कष्टों का निवारण करने वाले कुछ सरल उपाय यहां प्रस्तुत हैं, जो अपने आप में विशिष्टिता लिए हुए हैं, बस आवश्यकता है इन्हें सच्चे मन एवं पूर्ण श्रद्धा-विश्वास के साथ करने की।**

- महाराष्ट्र में शनि सिंगलापुर स्थित शनिदेव का तेल से अभिषेक कर दर्शन करें।
- शनिवार को कोकिला वन (कोसी) मथुरा के निकट स्थित शनिदेव मन्दिर में तेल, काले तिल, साबुत उड़द अर्पित कर तेल का दीपक जलायें। शनिदेव की परिक्रमा करें। यह क्रम सात या ग्यारह शनिवार तक करें।
- शनिवार को सायंकाल उड़द की दाल के पकौड़े एवं ईमरतियाँ कुत्ते को खिलाएं।
- शनिवार को उपवास रखें। सरसों के तेल में छाया देखकर दान दें।
- पीपल के वृक्ष की जड़ में जल दें।

● नाव की कील या काले घोड़े की उतरी नाल का छल्ला बिना आग में तपाए पीटकर बनवाएं, शनिवार को दूध, गंगाजल से धोकर और धूप–दीप दिखाकर सायंकाल दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

● शनिवार को अपने हाथ के नाप की उन्नीस हाथ काले धागे की माला बनाकर पहनें। यह अनुभूत है, इसे अवश्य आजमाएं, परंतु शर्त है कि यह क्रिया करने से पहले किसी को भी इसकी जानकारी न दें, भले ही वह आपके घर का सदस्य ही क्यों न हो।

● शनिवार को पीपल के वृक्ष के चारों ओर शनि मंत्र **ॐ शं शनैश्चराय नमः** का जप करते हुए सात बार कच्चा सूत धागा लपेटें।

● दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ शनि की पीड़ा को एकदम कम करता है, इसे शनिवार से प्रारम्भ करके मात्र 40 दिन लगातार करें, फिर इसकी अनुभूति आपको स्वत: होने लगेगी।

शनि के डर से इधर–उधर भटकने से अच्छा है, स्वयं ही शनि देव का यह प्रयोग तीन शनिवार घर पर ही संपन्न करके शनि कृपा प्राप्त करें। वर्तमान समय में शनिदेव की कृपा प्राप्ति का एक मात्र और सर्वश्रेष्ठ माध्यम है राजा दशरथकृत स्तुति एवं दशरथकृत तांत्रोक्त शनि यंत्र प्रयोग। इससे शनि शत्रु की जगह मित्र और सहायक हो सकते हैं और जातक को रंक से राजा बनने की सामर्थ्य प्रदान करते हैं।

राजा दशरथ कृत स्तुति एवं तांत्रोक्त मंत्र प्रयोग

प्रयोग विधि–किसी भी शनिवार को सुबह या शाम सूर्यास्त के बाद शुद्ध होकर, काले कपड़े के आसन पर बैठकर अपने पूजा स्थल में 10 इंच का चौकोर काला सूती वस्त्र बिछाकर इस पर अपने नाम से प्राण–प्रतिष्ठित शनि यंत्र को दीवार के सहारे स्थापित करें तथा सरसों के तेल का दीपक व धूप जलाएं। उसके बाद यंत्र के सम्मुख काली साबुत उड़द चढ़ाएं तथा तेल के दीपक में से सीधे हाथ के अंगूठे से तेल लेकर शनि यंत्र पर उसका हल्का सा टीका लगाएं। पूर्ण भक्तिभाव से शनिदेव का स्मरण करते हुए दशरथकृत स्तुति का पाठ करें। पाठ समाप्ति के बाद शनि यंत्र को प्रणाम करके हट जाएं। दूसरे शनिवार को शनि सामग्री अर्पण के बाद यंत्र को तिलक लगाएं। तीसरे शनिवार को पूजन सम्पन्न होने के बाद यंत्र के सम्मुख सामग्री की उसी काले कपड़े में पोटली बनाएं व उसी दिन या अगले शनिवार को पोटली को अपने सिर पर उल्टी दिशा में सात बार घुमाकर बहते पानी में बहाएं। यंत्र को अपने पूजा स्थल में स्थापित करें।

हे सूर्यपुत्र शनिदेव! आपको नमस्कार है। आप सभी का विनाश करने वाले चमकते ग्रह हैं। देवता, असुर, मनुष्य, पशु–पक्षी, सर्प आदि प्राणी आपकी दृष्टि मात्र से दुखी हो जाते हैं। ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु और सप्त ऋषि पर भी जब आपकी दृष्टि जाती है तो ये सभी अपने पदों से विमुख हो जाते हैं। देश, नगर, गांव, द्वीप तथा वृक्ष आदि भी आपकी दृष्टि पड़ने पर समूल नष्ट हो जाते हैं। अतः हे सूर्यपुत्र शनिदेव! हमारे ऊपर प्रसन्न होकर, हमें शुभ वर दें। ❑

दिलों में दूरियाँ

एक बार एक संत अपने शिष्यों के साथ बैठे थे। अचानक उन्होंने सभी शिष्यों से एक सवाल पूछा। बताओ, जब दो लोग एक दूसरे पर गुस्सा करते हैं तो जोर-जोर से चिल्लाते क्यों हैं? शिष्यों ने कुछ देर सोचा और एक ने उत्तर दिया-हम अपनी शांति खो चुके होते हैं इसलिए चिल्लाने लगते हैं। संत ने मुस्कुराते हुए कहा-दोनों लोग एक दूसरे के काफी करीब होते हैं तो फिर धीरे-धीरे भी तो बात कर सकते हैं। आखिर वह चिल्लाते क्यों हैं? कुछ और शिष्यों ने भी जवाब दिया लेकिन संत संतुष्ट नहीं हुए और उन्होंने खुद उत्तर देना शुरू किया। वह बोले-जब दो लोग एक दूसरे से नाराज होते हैं तो उनके दिलों में दूरियाँ बहुत बढ़ जाती हैं। जब दूरियाँ बढ़ जाएँ तो आवाज को पहुँचाने के लिए उसका तेज होना जरूरी है। दूरियाँ जितनी ज्यादा होंगी उतनी तेज चिल्लाना पड़ेगा। दिलों की यह दूरियाँ ही दो गुस्साए लोगों को चिल्लाने पर मजबूर कर देती हैं। वह आगे बोले, जब दो लोगों में प्रेम होता है तो वह एक दूसरे से बड़े आराम से और धीरे-धीरे बात करते हैं। प्रेम दिलों को करीब लाता है और करीब तक आवाज पहुँचाने के लिए चिल्लाने की जरूरत नहीं। जब दो लोगों में प्रेम और भी प्रगाढ़ हो जाता है तो वह खुसफुसा कर भी एक दूसरे तक अपनी बात पहुँचा लेते हैं। इसके बाद प्रेम की एक अवस्था यह भी आती है कि खुसफुसाने की जरूरत भी नहीं पड़ती। एक दूसरे की आँख में देख कर ही समझ आ जाता है कि क्या कहा जा रहा है। शिष्यों की तरफ देखते हुए संत बोले-अब जब भी कभी बहस करें तो दिलों की दूरियों को न बढ़ने दें। शांत चित्त और धीमी आवाज में बात करें। ध्यान रखें कि कहीं दूरियाँ इतनी न बढ़े जाएँ कि वापस आना ही मुमकिन न हो।

बड़भागी भरत, अनुरागी भरत

जयप्रकाश मल्होत्रा

जिनके चरण-धूलि स्पर्श से पत्थर स्त्री बन गई, उन्हीं को गोद में लेकर भी एक स्त्री पत्थर सा कठोर बन गई!

सरल सुशील धरम रत राऊ। सो किमि जानै तिय सुभाऊ।।
अस को जीव जंतु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं।।

भरत जी कैकेई पर रोष प्रकट करते हुए कहते हैं कि जब त्रिया-चरित के सन्मुख ब्रह्मा जी की नहीं चली तो महाराज जैसे सरल हृदय वाले क्या हैं? वे स्वभावत: सरल, सुशील और धार्मिक रहने के कारण इसे भी सीधा, सरल समझ बैठे। इस अभागन के घड़ियाली आँसू ने उन्हें भावुक कर दिया होगा और इसने उनके साथ विश्वासघात कर दिया। सरल हृदय वाले, सुशील, और धर्म-परायण व्यक्ति भले ही कितना भी चतुर, राजनीति में निपुण क्यों न हों, लेकिन वह कपटी, विश्वासघाती, महत्वाकांक्षी, षडयंत्र करने वाले से हार जाते हैं। इस पापिनी ने उन्हें उनके प्राण से अधिक प्रिय श्रीराम जी की सौगंध देकर अपने जाल में पिताश्री दशरथ को फँसा ही लिया और वे धर्म-परायणता वश वचन भंग करने से बढ़िया मृत्यु ही पसंद किए। एक के सत्य धर्म की पराकाष्ठा और एक की पाप भरी कपट हाय रे विधाता! जिस धर्म को धारण करने में मुक्ति मार्ग खुल जाता है उसी सत्य-धर्म ने महाराज के प्राण ले लिए!

रे कुभागे! जरा विचार करो तो कि श्रीराम वियोग में पिताश्री कैसे तड़प कर मृत्यु की गोद में गए होंगे? तुझे पति परमेश्वर पर भी दया नहीं आई और तूने इस पर भी विचार नहीं किया कि मेरा पुत्र यह षडयंत्र पसंद करेगा या नहीं? जिसने विश्वामित्र जैसे महामुनि को श्रीराम जी को थोड़े दिन के लिए भी देने में असमर्थता दिखाई थी-**सब सुत मोही प्रान की नाई। राम देत नहिं बनइ गोसाई।।** ऐसे अद्वितीय श्रीराम-प्रेमी को यदि तुम विवश नहीं करतीं तो वे अपना सिर स्वयं काट कर दे देते, लेकिन श्रीराम जी को वनवास नहीं देते। रे अभागन! तूने प्रेम और विश्वास की हत्या की है!!!

अस को जीव जंतु जग माहीं। जेहि रघुनाथ प्रानप्रिय नाहीं-रे अभागन! बोलो तो कि इस संसार में कोई जीव-जंतु है जिसे श्रीराम जी से प्रेम नहीं है? तुम इस संसार से बाहर की हो क्या, जो उन्हें बिना अपराध के सजा दे दी? जिनके वियोग में पशु पक्षी तक दुखित हैं, तुम उन्हें पहचान ही नहीं सकी? जो दुश्मन रहित परम पिता हैं वही तुम्हारे गोद में आ गए, लेकिन तुम उनसे दूर रह गई? भला-**शिव बिरंची जेहि सेवहि तेहि सन कवन विरोध!**

जिसने बालक रूप में ताड़का जैसी दस हजार हाथियों के बल वाली को मार कर , पत्थर बनी अहिल्या को चरण-धूलि से पुन: स्त्री बना दिया वही तुझे अप्रिय लगे! रावण, सहस्राबाहु से न हिलने वाले शिव-धनुष को तिनके समान समझने वाले श्रीराम जी को गोद में लेकर भी उन अवतारी प्रभु राम-मेरे बड़े भैया को नहीं पहचान सकीं? एक पत्थर बनी अहिल्या जिनके चरण धूलि स्पर्श से पाप मुक्त हो गई और एक तुम हो, जो उन्हें गोद में लेकर भी पत्थर समान कठोर बन गई। ❑

जीवन क्या है?

-मनुष्य का जीवन एक प्रकार का खेल है– Life is a Game और मनुष्य इस खेल का मुख्य खिलाडी।

यह खेल मनुष्य को हर पल खेलना पड़ता है।

इस खेल का नाम है 'Game of Thoughts' विचारों का खेल।

इस खेल में मनुष्य को दुश्मनों से बचकर रहना पड़ता है।

-मनुष्य अपने दुश्मनों से तब तक नहीं बच सकता जब तक मनुष्य के मित्र उसके साथ नहीं हैं।

मनुष्य के सबसे बड़े मित्र विचार (Thoughts) है, और उसका सबसे बड़े दुश्मन भी विचार (Thoughts) ही हैं।

मनुष्य के मित्रों को सकारात्मक विचार (Positive Thoughts) कहते हैं और मनुष्य के दुश्मनों को नकारात्मक विचार (Negative Thoughts) कहा जाता है।

-मनुष्य दिन में 60, 000 से 90, 000 विचारों (Thoughts) के साथ रहता है। यानि हर पल मनुष्य एक नए दोस्त (Positive Thought) या दुश्मन (Negative Thought) का सामना करता है।

-मनुष्य का जीवन विचारों के चयन (Selection of Thoughts) का एक खेल है। इस खेल में मनुष्य को यह पहचानना होता है कि कौन सा विचार उसका दुश्मन है और कौन सा उसका दोस्त, और फिर मनुष्य को अपने दोस्त को चुनना होता है।

-हर एक दोस्त (One Positive Thought) अपने साथ कई अन्य दोस्तों (Positive Thoughts) को लाता है और हर एक दुश्मन (One Negative Thought) अपने साथ अनेक दुश्मनों (Negative Thoughts) को लाता है।

इस खेल का मूल मंत्र यही है कि मनुष्य जब निरंतर दुश्मनों (Negative Thoughts) को चुनता है तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है और अगर वह निरंतर दोस्तों (Positive Thoughts) को चुनता है, तो उसे इसकी आदत पड़ जाती है।

-जब भी मनुष्य कोई गलती करता है और कुछ दुश्मनों को चुन लेता है तो वह दुश्मन, मनुष्य को भ्रमित कर देते हैं और फिर मनुष्य का स्वंय पर काबू नहीं रहता और फिर मनुष्य निरंतर अपने दुश्मनों को चुनता रहता है।

-मनुष्य के पास जब ज्यादा मित्र रहते हैं और उसके दुश्मनों की संख्या कम रहती है तो मनुष्य निरंतर, इस खेल को जीतता जाता है। मनुष्य जब जीतता है तो वह अच्छे कार्य करने लगता है और सफलता उसके कदम चूमती है, सभी उसकी तारीफ करते हैं और वह खुश रहता है।

लेकिन जब मनुष्य के दुश्मन, मनुष्य के मित्रों से ज्यादा मजबूत हो जाते हैं, तो मनुष्य हर पल इस खेल को हारता जाता है और निराश एंव क्रोधित रहने लगता है।

मनुष्य को विचारों के चयन में बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि मनुष्य के दुश्मन, मनुष्य को ललचाते हैं और मनुष्य को लगता है कि वही उसके दोस्त हैं।

जो लोग इस खेल को खेलना सीख जाते हैं वे सफल हो जाते हैं और जो लोग इस खेल को समझ नहीं पाते वे बर्बाद हो जाते है।

इस खेल में ज्यादातर लोगों की समस्या यह नहीं है कि वे अपने दोस्तों और दुश्मनों को पहचानते नहीं, बल्कि समस्या यह है कि वे दुश्मनों को पहचानते हुए भी उन्हें चुन लेते हैं। ईश्वर (या सकारात्मक शक्तियाँ), मनुष्य को समय-समय पर कई तरीकों से यह समझाते रहते हैं कि इस खेल को कैसे खेलना हैं, लेकिन यह खेल मनुष्य को ही खेलना पड़ता है। जब मनुष्य इसमें हारता रहता है और यह भूल जाता है कि इस खेल को कैसे खेलना है तो ईश्वर फिर उसे बताते हैं कि इस खेल को कैसे खेलना है। यही है जीवन।

❑

सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग!

पंकज पाण्डेय

उड़ान से संबधित सभी नियमों के अनुसार मधुमक्खियों में उड़ने की क्षमता ही नहीं, उनके पंख इतने छोटे हैं कि वो उनके भारी शरीर का वजन उठा ही नहीं सकते। बावजूद इसके मधुमक्खियाँ फिर भी उडती हैं क्योंकि, मधुमक्खियों को इस बात से कोई फरक नहीं पड़ता कि इन्सान क्या सोचता हैं।

इस कहावत से यही बात सामने आती है की मधुमक्खियों को या किसी भी जानवर को इस बात का फर्क नहीं पड़ता कि उनके बारे में बाकी क्या सोचते हैं, पर इन्सान की एक यही आदत सभी समस्याओं की जड़ है हमारी सोच को लेकर लोग क्या कहेंगे, लोग क्या सोचेंगे, उनको क्या लगेगा इसी सोच की वजह से हम कुछ भी खुलकर और Confident के साथ नहीं कर पाते. क्योंकि हम कोई भी काम करने से पहले दस बार लोगों के बारे में सोचते हैं कि अगर हम कोई काम करेंगे और इसमें हम कामयाब नहीं हो पाये तो मेरे दोस्त, रिश्तेदार, पड़ोसी, मेरे पहचानवाले मेरे बारे में क्या सोचेंगे इस डर की वजह से हम कोई भी काम करने से कतराते हैं। लेकिन जिंदगी में अगर कुछ बड़ा काम करना होगा तो लोगों के बारे में सोचना छोड़ देना होगा।

आपको एक कहानी बताता हूँ

एक दिन एक आदमी मार्निंग-वाक को गया, तभी उसने एक गली में एक लड़के को कचरा उठाते हुये देखा, वहाँ के दो-चार कुत्ते उस पर भोंक रहे थे उस आदमी ने उस लड़के में एक बात गौर की भोंकते हुये कुत्तों को देखकर उस लड़के के चेहरे पर न कोई डर था, न उस लड़के का उन कुत्तों पर कोई ध्यान था। वह लड़का बस अपना कचरा उठाने का काम कर रहा था। वो लड़का वहाँ से दूसरी गली में गया तो दूसरी गली के कुत्ते भी उसे देखकर भोंकने लगे, वह पर भी उस लड़का का कुत्तों की तरफ ध्यान न देकर अपना कचरा उठाने के काम को करता रहा। उस लड़के ने कचरा उठाकर दो-चार सौ रूपये कमा लिये और भोंकने वाले भोंकते रहे गये।

तो दोस्तों, यहीं सोच हम अगर अपनी जिंदगी में अपनायें तो हम कभी पीछे नहीं रहेंगे और हम अपना काम लोगों की सोच को ध्यान में रखकर नहीं करेंगे तो पूरे सफल होंगे। वो कहावत हैं न 'सुनो सब की करो मन की।'

जीवन में जो आदमी रोना नहीं जानता उसका जीना बेकार है, जो रो नहीं सकता वह बेकार, जो रोता नहीं है, वह बेकार, इसलिए जरूर रोना चाहिए जैसे भगवान भोले नाथ ने जब पार्वती द्वारा बनाए बालक का सर काट दिया तो पार्वती जोर-जोर से रोई, तब शिव ने हाथी का सर काटकर पार्वती के सुत को गणेश बना दिया था।

❑

सोच
जो आपकी जिंदगी बदल सकती है!

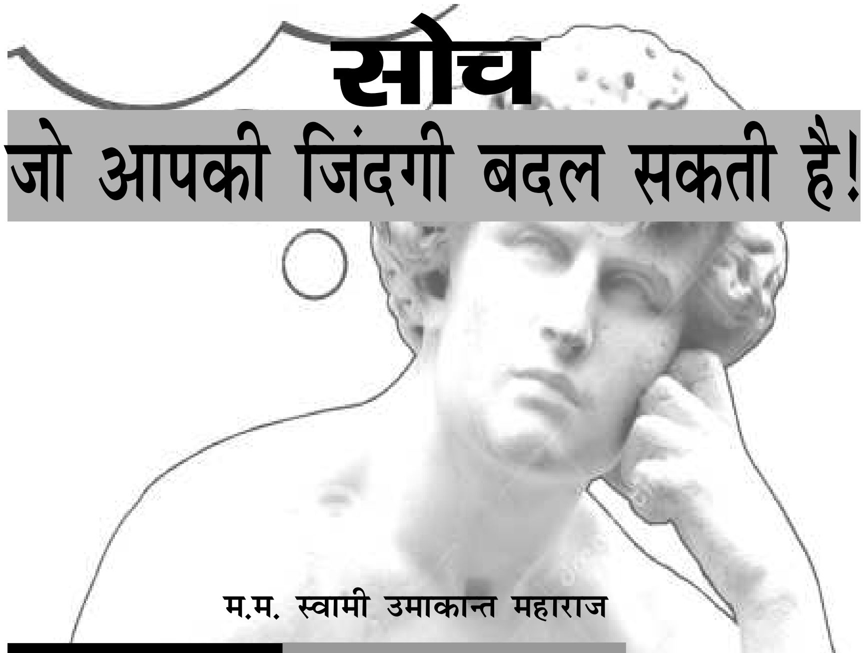

म.म. स्वामी उमाकान्त महाराज

कई बार तो किसी विषय या व्यक्ति के बारे में Negative Thinking किसी एक Incident के बाद बदल जाती है। आपको एकदम यह पता चलता है कि आपकी किसी के बारे में सोच गलत थी यह बात इस उदाहरण से स्पष्ट होती है।

हम हमेशा एक कहावत सुनते हैं, जैसा हम सोचते हैं वैसा ही हम बन जाते हैं। ये कहावत पूरी तरह से सही है, क्योंकि हमारा Mind एक वक्त में एक ही विचार कर सकता है। पर आप जब चाहे Negative Thinking को Positive Thinking में बदल सकते हैं। यदि आप Positive Thinking को पूरे निश्चय के साथ कई बार दोहराएँ कि मुझे इस काम से डर नहीं लगता या कोई आशंका नहीं है मैं इसे बहुत अच्छे से पूरा करुगां या मेरा ये काम अवश्य सिद्ध होगा, तो आप निश्चत ही अपने काम में सफल हो जाएंगे।

कई बार तो किसी विषय या व्यक्ति के बारे में Negative Thinking किसी एक Incident के बाद बदल जाती है। आपको एकदम यह पता चलता है कि आपकी किसी के बारे में सोच कितनी गलत थी यह बात इस उदाहरण से स्पष्ट होती है।

एक व्यक्ति एक प्रोग्राम में चीफ-गेस्ट बनकर गया। वहाँ के मैनेजर ने उन्हें गेस्ट की पहचान बताई, सभी ने उनको प्रणाम करते हुए हाथ मिलाया पर उसमें से एक गेस्ट ने उनकी तरफ देखा भी नहीं, उस पर उस चीफगेस्ट को बहुत गुस्सा आया, उन्होंने अपने दिमाग में उस गेस्ट के बारे में Negative सोच बना ली पर उन्हें बाद में पता चला की वो गेस्ट न तो देख सकते है न ही सुन सकते हैं, इसके बाद उनको ये अहसास हुआ कि उनकी सोच उस गेस्ट के बारे में कितनी Negativity थी परिणाम स्वरूप एक पल में ही आप अपनी सोच को बदल सकते है हम लगातार खुद को नाराज करने वाली या न पसंद बातें करके Negative भावनाओं को जिन्दा रखते हैं पर एक अच्छी बात यह है कि हम भावनाओं के नियम को लागू करके Negative विचारों को बदल सकते हैं और भावनाओं का नियम कहता है कि एक सशक्त भावना हमेशा एक कमजोर भावना पर हावी रहेगी और जिस किसी भावना पर ज्यादा जोर देंगे वो उतनी ही मजबूत होती जाएगी। हम जब आशंका, भय, संदेह, आदि के लिए अपने मन के द्वार खोल देते है जिससे हम भयग्रस्त होते हैं, तो हमारे मन में Negative Thinking होती है और जो भय को दिन-ब दिन मजबूत करती है, उत्साह और शक्ति से ही मनुष्य सदा सफल होता है पर इसका उल्टा निरुत्साही और दुर्बल मन के मनुष्य हर कम में असफल होते हैं। अगर कोई इंसान Negative Thinking से यह सोचने लगे कि उसका पाचन-तंत्र खराब हो गया है और वह किसी भी प्रकार के पदार्थ पचाने में असमर्थ है तो विश्वास कीजिये उसके द्वारा खाया गया कोई भी पदार्थ कदापि उसे नहीं पचेगा। अपने दिमाग में Negative Thinking को आने से हम रोक नहीं सकते पर उस Negative Thinking को हम अपने से दूर तो रख सकते हैं। ये कैसे करें हम आगे देखते है। 1. हम खुद को Negative Thinking से दूर रखे मतलब कभी भी Negative चर्चा न करे। 2. अनदेखा करे, मतलब ज्यादा सोचने से हमारे दिमाग में Negative Thinking आते भी है तो उसे अनदेखा करने के लिए बहार जाये, गाना सुने, जो आपको अच्छा लगे वो करे।

3. अलग सोचे मतलब Negative Thinking को ज्यादा महत्त्व नहीं दे। स्थिति को Positive नजर से देखें कल कोई और नइ सुबह नया और अच्छा लेके आएँगी यह सोच रखें और कोई भी हालात हो मैं सब कर सकता हूँ, मुझमें Talent है और मेरा खुद पर विश्वास है। इसका अहसास खुद को होने दें और फिर देखना, कोई भी ताकत आपको हरा नहीं सकती। ❑

क्या आशीर्वाद का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है

आशीर्वाद एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रभाव जीवन को पूरी तरह परिवर्तित कर देता है। इसलिए अपने से बड़ों का आशीर्वाद अवश्य लेना चाहिए। आशीर्वाद का चार अक्षर प्रतीक रूप में विभिन्न प्रकार के अर्थ प्रकट करता है।

राधेश्याम शुक्ला

आशीर्वाद का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। इसलिए प्रणाम की पात्रता और आशीर्वाद का प्रभाव इस पर निर्भर करता है कि क्या आप पात्र में आशीर्वाद रखने के लिए तैयार हैं?

आशीर्वाद एक ऐसा शब्द है, जिसका प्रभाव जीवन को पूरी तरह परिवर्तित कर देता है। इसलिए अपने से बड़ों का आशीर्वाद अवश्य लेना चाहिए। 'आशीर्वाद' चार-अक्षर का प्रतीक विभिन्न प्रकार के अर्थ प्रकट करता है। चूंकि प्रणाम किसी कामना की प्रेरणा से ही प्रेरित होता है इसलिए प्रणाम करते समय गुरु को यह जानकारी नहीं होती कि शिष्य चाहता क्या है? शिष्य यदि युद्धभूमि में जाता है तो गुरु 'विजयी-भव' का आशीर्वाद देते हैं।

गांवों में आज भी 'जियो, खुश रहो' जैसे शब्द आशीर्वाद के रूप में कहे जाते हैं, लेकिन आमतौर पर जब हम बड़ों के पास जाते हैं तो कामना बताए बगैर हम उनका आशीर्वाद पाना चाहते हैं। इसी को देखते हुए एक ऐसा शब्द खोजा गया जिसमें कई अर्थ समाहित हों। इस प्रकार आशीर्वाद के एक-एक अक्षर के लिए एक-एक शब्द अर्थात चार-अक्षर के लिए चार शब्द बनाए गए। ये चार-अक्षर हैं-<u>आयु</u>, <u>विद्या</u>, <u>बल</u> और <u>बुद्धि</u>। जिस शुभकामना से आयु, बल, विद्या व बुद्धि बढ़े वही आशीर्वाद है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में इन चारों की बढ़ोतरी की कामना होती है। यदि शिष्य श्रद्धापूर्वक गुरु को प्रणाम करता है और गुरु स्नेहपूर्वक शिष्य के मंगलमय भविष्य की कामना करते हैं तो आशीर्वाद का प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है। आपके मन में जितना अधिक आदर होगा आपको आशीर्वाद उतना ही मिलेगा।

जिन लोगों को बार-बार आशीर्वाद मिलने पर भी कोई फल नहीं मिलता, इसका अर्थ है कि उन्होंने न तो श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया और न ही श्रद्धापूर्वक आशीर्वाद ही लिया। आशीर्वाद जीवन में तभी उतर सकेगा, जब आप आशीर्वाद के प्रभाव को धारण करेंगे। जिस वस्तु को आप स्वयं ग्रहण नहीं करना चाहते, उसका प्रभाव आपके जीवन पर कैसे पड़ेगा? प्रणाम हमेशा दोनों हाथ जोड़कर किया जाता है और गुरु का आशीर्वाद तभी प्राप्त होता है जब सच्चे मन से प्रणाम किया जाता है। यदि पात्र उल्टा हो या किसी वस्तु को ग्रहण करने से इंकार करता हो, तो उसमें कोई भी वस्तु नहीं रखी जा सकती। इसलिए जो व्यक्ति अपने पात्र को बारीकी से सजाकर रखता है, उसमें उसी बारीकी से वस्तु भी रखी जाती है। कोई आशीर्वाद दे और आप उसे लेने के लिए तैयार न हों तो आशीर्वाद का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए प्रणाम की पात्रता और आशीर्वाद का प्रभाव इस पर निर्भर करता है कि क्या आप पात्र में आशीर्वाद रखने के लिए तैयार हैं? ❑

वशिष्ठ जी का उपदेश

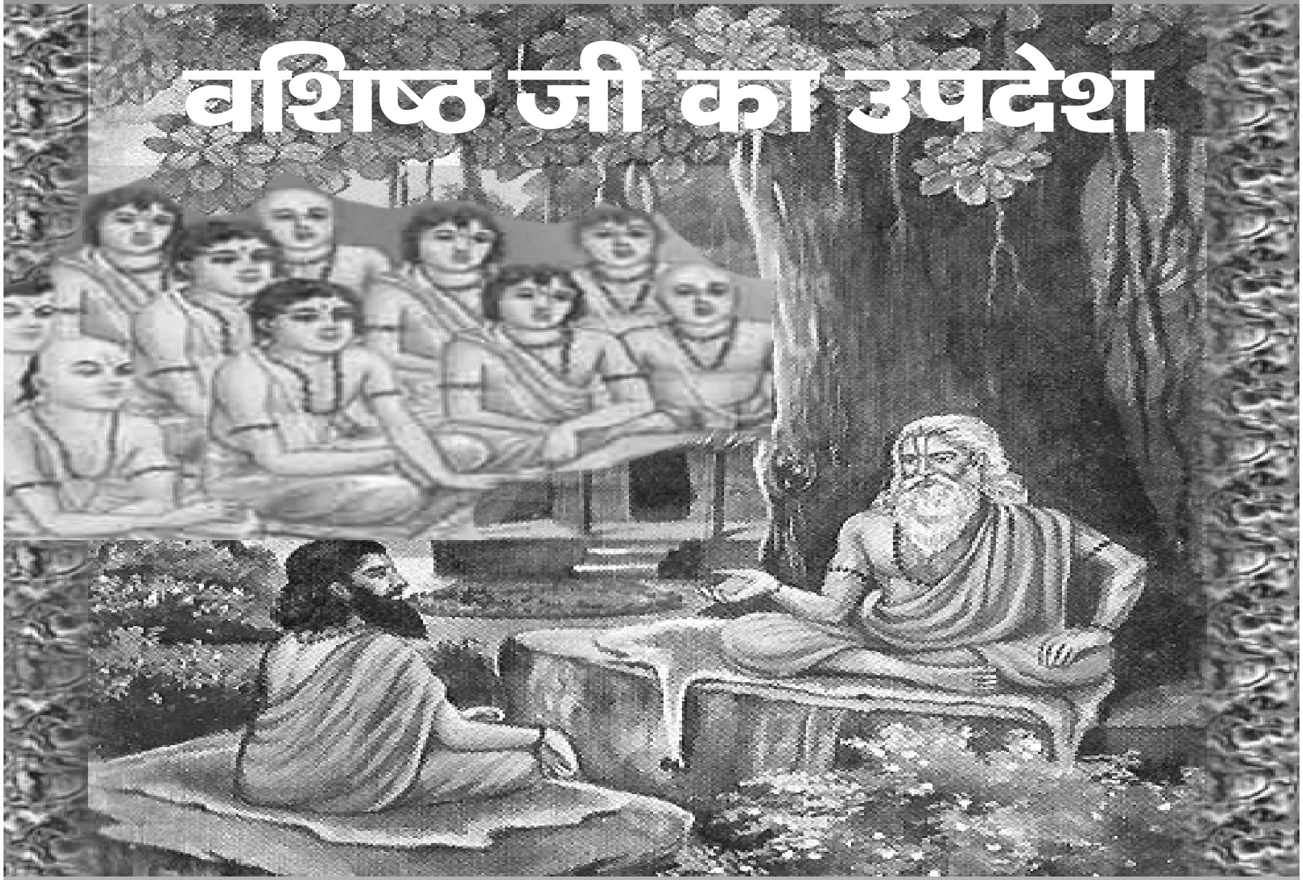

महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी उमाकान्तानन्द जी महाराज

महर्षि वशिष्ठ का सुन्दर उपदेश हुआ। वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी से कहा- तुम क्या छोड़ना चाहते हो? तुम राजमहल छोड़कर जंगल में जाओगे तो वहाँ भी छोटी-सी झोपड़ी की आवश्यकता पड़ेगी ही। सुन्दर वस्त्रों को फेंक दोगे, परन्तु लंगोटी की जरूरत तो रहेगी ही। उत्तम व्यञ्जन छोड़ दोगे तो भी कंदमूल तो खाना ही पड़ेगा। तुम त्याग किसका करोगे? बाहर किया हुआ त्याग सच्चा त्याग नहीं। अन्दर से त्याग करो।

त्याग तो मन से करना होता है। संसार तो मन की कल्पना है। मन नहीं तो संसार भी नहीं। मन है, तब तक संसार है।

मन बंधन में डालता है। मन मुक्ति भी दिलाता है। मन विषयासक्त हो तब तक मनुष्य बन्धन में रहता है। मन जब निर्विषय बनता है तब मनुष्य की मुक्ति हो जाती है, उसका संसार छूट जाता है।

मन किस प्रकार जीवित रहता है? मन में संसार के विषय हैं, मन संसार का चिन्तन करता है, इससे मन जीवित रहता है। दीपक में तेल होता है, तब तक दीपक जलता है। दीपक का तेल समाप्त हो जाता है तब दीपक शान्त हो जाता है। दीपक को शान्त करने के लिए यही युक्ति है कि दीपक में तेल न डालो। अग्नि में लकड़ी-कोयला डालना बन्द कर दोगे तो अग्नि अपने आप शान्त हो जाएगी। विषय मन में आते हैं, इससे मन जीवित रहता है। इन विषयों का मन में आना बन्द करोगे तो मन शान्त हो जाएगा।

यह संसार मनोमय है। स्पप्न का संसार कौन उत्पन्न करता है? जैसे स्वप्न के संसार को मन उत्पन्न करता है, वैसे ही जाग्रत अवस्था का संसार भी मन की ही कल्पना है। स्वप्न अर्थात् क्या? अपने स्वरूप के अज्ञान को स्वप्न कहते हैं। खाट में पड़े पीछे जब तक ज्ञान है कि मैं घर में हूँ, सोया हुआ हूँ, तब तक स्वप्न दिखाई देता नहीं। स्वप्न तब दीखता है जब स्वयं का स्वरूप भूलता है। स्वयं के स्वरूप का विस्मरण हुए पीछे ही स्वप्न दीखता है।

मन किस प्रकार जीवित रहता है? मन में संसार के विषय हैं, मन संसार का चिन्तन करता है, इससे मन जीवित रहता है। दीपक में जब तक तेल होता है, तब तक ही दीपक जलता है। दीपक का तेल समाप्त हो जाता है तब दीपक भी शान्त हो जाता है।

स्वप्न का संसार अपने अज्ञान से ही उत्पन्न हुआ है। जाग्रत अवस्था का जगत भी ईश्वर-विषयक अज्ञान होने से भासता है। चारपाई पर जगने के बाद स्वप्न का संसार दीखता नहीं। जागने वाले को विश्वास हो जाता है कि मैं तो घर में हूँ, चारपाई पर हूँ। मैंने जो कुछ देखा, वह सब झूठ था।

स्वप्न का संसार अपने अज्ञान से ही उत्पन्न हुआ है। जाग्रत अवस्था का जगत भी ईश्वर-विषयक अज्ञान होने से ही भासता है। चारपाई पर जगने के बाद स्वप्न का संसार दीखता नहीं। जागने वाले को विश्वास हो जाता है कि मैं तो घर में हूँ, चारपाई पर हूँ। मैंने जो कुछ देखा, वह सब झूठ था। स्वरूप का ज्ञान होने के बाद स्वप्न का संसार, सुख अथवा दुःख देता नहीं। इसी प्रकार जाग्रत अवस्था में भी जीव को स्वरूप का ज्ञान हो जाए तो संसार सुख-दुःख देता नहीं, संसार से मुक्ति मिल जाती है।

सुख-दुःख अज्ञान से उत्पन्न हुए हैं। सुख-दुःख मन के धर्म हैं। मन माने तो सुख है और न माने तो कोई सुख नहीं। सुख सत्य नहीं और दुःख भी सत्य नहीं। सुख और दुःख यदि सत्य हों तो इनका विनाश किसी दिन होगा ही नहीं। सुख खोटा है और दुःख भी खोटा है। कल्पना करो कि किसी की पत्नी का मरण हो गया। यौवन में जिसकी पत्नी का मरण हो जाता है, वह बहुत दुःखी हो जाता है। परन्तु चार-छः मास बीते अथवा न बीते, धीरे-धीरे वह दूसरे विवाह की बातें प्रारम्भ कर देता है। पत्नी के मरण का दुःख भूल जाता है।

संसार में सुख-दुःख टिकता नहीं। यह अनित्य है, असत्य है, केवल मन की कल्पना मात्र है। आत्मा शुद्ध है, चेतनरूप है। आत्मा को सुख नहीं, आत्मा को दुःख नहीं। तुम आनन्दस्वरूप हो। तुम मन नहीं, मन के साक्षी हो। मनुष्य इस प्रकार बोलता है कि मेरा मन बिगड़ गया। कोई ऐसा बोलता नहीं कि मैं बिगड़ गया। मनुष्य बोलता है कि मेरा मन चंचल हो गया, मेरे मन में पाप आया। वह जिसको दिखाई दिया वही तुम्हारा स्वरूप है।

तुम पुरुष नहीं, तुम स्त्री नहीं, तुम स्त्री-पुरुष से इतर भी नहीं। स्त्री-पुरुषत्वादि तो देह के भाव हैं। आत्मा का कोई देह नहीं, कोई अवयव नहीं। आत्मा अमूर्त है, पूर्ण है, द्रष्टा है।

परन्तु आत्मा अपने स्वरूप को भूली हुई है और परस्पर के अभ्यास के कारण, एकत्व के अभिमान के कारण मन को हुए सुख-दुःख का आरोप आत्मा अपने स्वरूप में करके सुखी-दुःखी जैसी हो जाती है। ज्ञानी महापुरुष ऐसा मानते हैं- मैं यह शरीर नहीं, इन्द्रिय नहीं, प्राण नहीं, मैं मन नहीं, बुद्धि नहीं। ये तो सब जड़ हैं, असत्य हैं।

मैं तो चैतन्य हूँ, सत्य हूँ, शुद्ध हूँ। देह-मन के सुख-दुःख मेरे सुख-दुःख नहीं। पूर्व जन्म का जो कुछ प्रारब्ध है, उसे भोगकर पूजा करना है। आत्मस्वरूप में स्थित हुए ज्ञानी पुरुष क्या प्रारब्ध भोगते नहीं? इनके मन में किसी के प्रति राग नहीं, किसी के प्रति द्वेष नहीं, सबके लिए समभाव है। ये कोई कर्म करें अथवा न करें, सब समान ही है। इस प्रकार किए गये कर्म नया प्रारब्ध नहीं बनाते। तुम सब ऐसा पवित्र जीवन बिताओ कि जिससे नया प्रारब्ध उत्पन्न न हो। जीवन-मरण का त्रास छूट जाये। साधारण मनुष्य दूसरे जन्म की तैयारी इसी जन्म में करता है। संसार के विषयों में राग-द्वेष होने से तो नया प्रारब्ध उत्पन्न हो जाता है। जगत के साथ वैर न करो, परन्तु इस जगत के साथ बहुत प्रेम भी न करो।

कोई मिले, तो दोनों हाथ जोड़कर जय श्रीकृष्ण करो, दो-चार मधुर शब्द बोलो, परन्तु कोई मनुष्य कदाचित् दो-चार महीने तक न मिले तो वियोग में उसका स्मरण न करो कि मेरा भाई मुझे दो महीने से मिला नहीं। वियोग में तुम जिसका स्मरण करोगे, वह तुम्हारे मन में घर करेगा। वियोग में तुम जिसका चिन्तन करोगे वह तुमको रुलायेगा, वही तुम्हारे दुःख का कारण बनेगा। मिले तो ठीक है और न मिले तो और भी अच्छा है। मन से निश्चय करो कि मुझे अब किसी मनुष्य से मिलना नहीं। मुझे विश्वास हो गया कि किसी स्त्री अथवा किसी पुरुष से मिलने पर सच्ची शान्ति मिलती नहीं। मुझे तो परमात्मा से मिलना है। किसी का तिरस्कार न करो, परन्तु किसी जीव के साथ बहुत प्रेम भी न करो। राग-द्वेष से

नया प्रारब्ध उत्पन्न होता है। ज्ञानी महापुरुष प्रारब्ध भोगकर पूरा करते हैं। वैष्णवजन भगवद्–इच्छा को मान देकर, भगवद्–इच्छा से प्राप्त हुए व्यवहार को विवेक से पूरा करते हैं। साधु पुरुष भी व्यवहार का काम करते हैं परन्तु व्यवहार का काम करने में वे सावधान रहते हैं कि मन बिगड़े नहीं, मन में राग–द्वेष आवे नहीं। श्रीरामचन्द्रजी को ऋषि वशिष्ठ ने बताया कि यह सब खेल मन किया करता है। संसार मनोमय है।

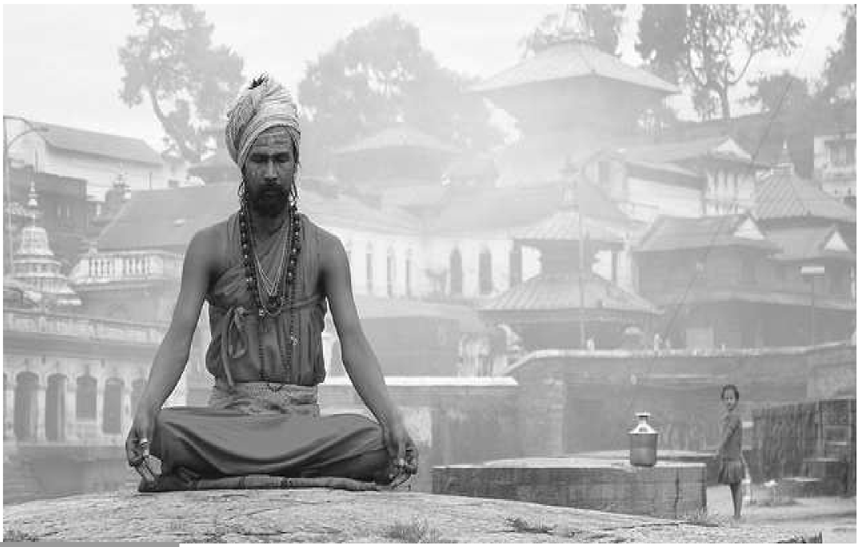

संकल्प से संसार खड़ा हुआ है। यह संसार संकल्प से उत्पन्न हुआ है। संसार, मन की कल्पना मात्र है। संसार के सुख–दुःख

कितने ही लोग शान्ति प्राप्त करने के लिए, परमात्मा को प्राप्त करने के लिए संसार का त्याग करते हैं, साधु–वेष धारण करते हैं, माथा मुंड़वाते हैं, परन्तु संसार उनके मन में से जाता नहीं। बहिरंग में तो उन्होंने त्याग किया है परन्तु ऐसे त्याग का कोई अर्थ नहीं। अरे, मुण्डन करवा लेने से ही यदि त्याग का फल मिल जाता हो, शान्ति मिलती हो,

मन के ही विलास हैं। मन का विलास, मन का धर्म, संकल्प से उत्पन्न हुआ है। संकल्प जाएगा तो सुख–दुःख भी जाएंगे, समभाव आवेगा, आनन्द मिलेगा। संकल्प जाएगा तो निर्विकल्पता आवेगी। निर्विकल्पता शाश्वत शान्ति लावेगी। शान्ति के लिए संसार का त्याग करने की जरूरत नहीं। संसार में रहो, परन्तु संसार का मन से त्याग करो। संसार का चितन छोड़ोंगे तो मन शब्द हो जावेगा। मन का नाश तो मुक्ति है। जिसका मन मरता है, उसको मुक्ति मिलती है। मन जब तक विषयों का चिंतन करता है तब तक ही जीवित रहता है। मन परमात्मा का ध्यान करता है, तब प्रभु में मिल जाता है। परमात्मा के स्वरूप में मन के लय को ही मुक्ति कहते हैं। जन्म–मरण का कारण मन है। त्याग मन से करना है। बहिरंग में किया हुआ त्याग, सच्चा त्याग नहीं। यह तो दंभ है। अन्दर से त्याग करो।

बाहर से त्याग करें और मन से विषयों का चिंतन करें, तो यह ढोंग कहलाता है। इस त्याग का बाहर से कोई अर्थ नहीं। विषयेन्द्रियों पर जो काबू रखे, मन से जो विषयों का त्याग करे और बिना आसक्ति के व्यवहार–कार्य करे, उसका त्याग सच्चा है। भगवद्–इच्छा से, प्रारब्ध से जो व्यवहार–कार्य प्राप्त हुआ है वह भगवद्–इच्छा को मान देकर परमात्मा का अनुसंधान रखकर करना चाहिए, मन को सावधान रखकर करना चाहिए।

मनुष्य शरीर की रक्षा करता है, धन की रक्षा करता है, परन्तु मन की रक्षा नहीं करता। जो मन की रक्षा करता है वह महान् बनता है। अन्य सब कुछ बिगड़े तो भले ही बिगड़े, परन्तु तुम्हारा मन न बिगड़े, इसका खास ध्यान रखना चाहिए। संसार में रहने से मन नहीं बिगड़ता, संसार का ध्यान छूटे और परमात्मा का सतत् अनुसन्धान रहे तो संसार सुखमय बने और जहाँ रहोगे वहाँ शान्ति बनी रहेगी, नहीं तो, वन में जाने पर भी संसार साथ रहेगा। घर बाधक होता नहीं, घर की आसक्ति बाधक होती है। संसर, दुःख देता नहीं, संसार की आसक्ति दुःख देती है। प्रारब्ध से जो प्राप्त हुआ है वह प्रभु की प्रसादी मानकर अनासक्तिपूर्वक भोगा जाए, तो उसमें बाधा नहीं। तुम किसका त्याग करना चाहते हो? महात्मा पुरुष तो आसक्ति का त्याग करते हैं। सम्पूर्ण जगत् परमात्मा का स्वरूप है। जिसका मन शान्त है, वह जहाँ जाए उसे वहीं शान्ति मिलती है। जो अशांत है वह मन्दिर में जाए, बँगलें में रहे अथवा वन में रहे तो भी उसे शान्ति नहीं मिलती। मन ईश्वर से दूर जाता है, तभी अशान्त होता है।

कितने ही लोग शान्ति प्राप्त करने के लिए, परमात्मा को प्राप्त करने के लिए संसार का त्याग करते हैं, साधु–वेष धारण करते हैं, माथा मुंड़वाते हैं, परन्तु संसार उनके मन में से जाता नहीं। बहिरंग में तो उन्होंने त्याग किया है परन्तु ऐसे त्याग का कोई अर्थ नहीं। अरे, मुण्डन करवा लेने से ही यदि त्याग का फल मिल जाता हो, शान्ति मिलती हो, परमात्मा मिले हों तो कबीर जी के कहने के अनुसार, भेड़ तो अनेक बार मुण्डन कराती है, फिर भी वैकुण्ठ क्यों नहीं जाती।

मूँड़ मुड़ाये हरि मिले, सब कोइ लेइ मुड़ाय।
बार–बार के मूंडते, भेड़ न वैकुण्ठ जाय।।

सच्चे वैराग्य के बिना ईश्वर का ज्ञान होता नहीं, ब्रह्मज्ञान आता नहीं, ज्ञानी होता नहीं, जन्म–मरण के चक्कर में से छूटता नहीं।

सच्चा ज्ञानी वह है जो ईश्वर के साथ प्रेम करता है। वशिष्ठ गुरुजी के पीछे रामजी को ज्ञान को सात भूमिकायें समझायीं हैं। पहली भूमिका की शुभेच्छा कहते हैं। आत्मकल्याण के लिए श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ गुरु की शरण में जाकर शास्त्रों का अध्ययन करके उनके उपदेश के अनुसार आत्मविचार करने की उत्कण्ठा, आत्मा का साक्षात्कार करने के लिए जो उत्कट इच्छा हो।

ब्रह्मज्ञान की बातें करे, परन्तु पैसे और प्रतिष्ठा के साथ प्रेम करें तो यह खरा ज्ञान नहीं। सच्चा ज्ञानी वह है जो ईश्वर के साथ प्रेम करता है। वशिष्ठ गुरुजी ने पीछे रामजी को ज्ञान को सात भूमिकायें समझायीं हैं। पहली भूमिका की शुभेच्छा कहते हैं। आत्मकल्याण के लिए श्रोत्रिय और ब्रह्मनिष्ठ गुरु की शरण में जाकर शास्त्रों का अध्ययन करके उनके उपदेश के अनुसार आत्मविचार करने की उत्कण्ठा, आत्मा का साक्षात्कार करने के लिए जो उत्कट इच्छा हो उसे शुभेच्छा कहते हैं। दूसरी भूमि का नाम है सुविचारणा। सदूगुरु द्वारा उपदेश किए हुए वचनों का तथा मोक्ष-शास्त्रों का बारम्बार विचार किए जाने की स्थिति को सुविचारण कहते हैं। तीसरी भूमिका है तनुमानसा। श्रवण, मनन और निदिध्यासन से विषयों में जो अनासक्ति हो और कल्पक समाधि में अभ्यास के द्वारा बुद्धि की तनुता- सूक्ष्मता प्राप्त होती है, वह तनुमानसा है। मन-बुद्धि में जिस समय शुभेच्छा और सुविधाचारणारूपी विवेक जागृत होता है उस समय अनासक्ति दृढ़ होती है। ये प्रथम तीन भूमिकायें साधन कोटि की हैं। बाकी की चार ज्ञान कोटि की हैं। तीन भूमिकाओं तक सगुण ब्रह्म का चिन्तन करो। तीन भूमिकाएँ सिद्ध होने पर समस्त अविद्या का नाश होगा और ज्ञान का स्फुरण होगा। चौथी भूमिका को कहते हैं सत्वापत्ति। प्रथम तीन भूमिकाओं से साक्षात्पर्यन्त की स्थिति अर्थात् निर्विकल्प समाधिरूप में स्थिति ही सत्वापत्ति है। ज्ञान की चौथी भूमिका वाला पुरुष ब्रह्मवित् कहलाता है। उसके पीछे की पाँचवीं भूमिका है असंसक्ति।

चित्तविषयक परमानन्द और नित्य अपरोक्ष ब्रह्मात्म भावना का साक्षात्कार असंसक्ति है। इसमें अविद्या तथा उसके कार्यो का सम्बन्ध नहीं। इसलिए उसका नाम असंसक्ति है। ज्ञान की इस पाँचवीं भूमिका तक पहुँचने पर जड़ और चेतन की ग्रन्थि छूट जाती है और आत्मा का अनुभव हो जाता है। आत्मा शरीर से पृथक् है, यह ज्ञान स्थिर हो जाता है।

पदार्थभाव छठी भूमिका है। पदार्थों की दृढ़ अप्रतीति हो उसे पदार्थाभाव (पदार्थ का अभाव) की अवस्था कहते हैं। इसमें देहाध्यास छूट जाता है। संसार की अत्यन्त विस्मृति की इस अवस्था में रहने वाला पुरुष अत्यन्त प्रयत्न करने पर ही देहभान में आता है।

इन भूमिकाओं में उत्तरोत्तर देह का भान भूलता जाता है और अन्त में उन्मत्त अवस्था प्राप्त होती है। सातवीं और अन्मि भूमिका है तुर्यगा। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति- इन तीन अवस्थाओं से परे ऐसी जो अवस्था है, उसे तुर्यगा कहते हैं। इस अवस्था में स्थिर रहने वाला पुरुष ब्रह्म को आत्मस्वरूप में अखण्ड जानता है, अनुभव करता है। हवा में रखा गया घड़ा जिस प्रकार अन्दर और बाहर खाली है और समुद्र में डूबा हुआ घड़ा जिस प्रकार अन्दर और बाहर- सर्वत्र जल से ही परिपूर्ण है, उसी प्रकार सातवीं अवस्था प्राप्त करने वाला पुरुष अन्दर-बाहर जैसा खाली है वैसा ही भरा है। संसार इसके लिए शून्य हो जाता है और वह स्वयं में, परिपूर्ण में, ब्रह्म में- परिपूण्र ब्रह्म ही बन जाता है। वशिष्ठजी श्रीरामचन्द्रजी से कहते हैं कि आप तो परमात्मा हो। यहाँ तो आप लीला करने के लिए पधारें हैं, आप सब कुछ जानते हैं। यह तो आप मुझे मान दे रहे हैं। आप जगत् का कल्याण करने लिए पधारे हैं। यह बिगड़ा हुआ मन परमात्मा के नाम के साथ प्रीति करे तभी सुधरता है। मन को उलटा करने से नम होता है। यह जो कुछ दिखायी देता है सब परमात्मा का ही स्वरूप है। ऐसा सद्भाव रखकर सबको मन से नमो और परमात्मा के किसी भी नाम के साथ प्रीति करो। नम और नाम- इन दो साधनों से ही मन सुधरता है। वशिष्ठजी ने रघुनाथ्न जी को ज्ञान वैराग्य का उपदेश किया। रामजी के गुरुजी कौन बन सकते हैं? रामजी परमात्मा है, स्वयं जगतद्गुरु हैं। उनको कौन उपदेश दे सकता है? परन्तु रामजी ने लीला की है, वशिष्ठ ऋषि को मान दिया है और जगत को बोध दिया है।

शेष अगले अंक में

स्वामी विवेकानंद की ये 10 बातें जरूर याद रखें

देश के लाखों युवा मर-मिटने को तैयार हैं। देश के लिये यह भावना अच्छी है, लेकिन हर काम और हर संकल्प के लिये जरूरी है आपके खुद के नैतिक एवं जीवन मूल्य। और इनकी बात आते ही सबसे पहले नाम जहन में आता है स्वामी विवेकानंद का।

स्वामी विवेकानंद, जिनका नाम आते ही मन में श्रद्धा और स्फूर्ति दोनों का संचार होता है। श्रद्धा इसलिये, क्योंकि उन्होंने भारत के नैतिक एवं जीवन मूल्यों को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाया और स्फूर्ति इसलिये क्योंकि इन मूल्यों से जीवन को एक नई दिशा मिलती है। 12 जनवरी को पूरे भारत में स्वामी विवेकानंद का जन्म दिवस मनाया जाता है।

> **स्वामी विवेकानंद, जिनका नाम आते ही मन में श्रद्धा और स्फूर्ति दोनों का संचार होता है। श्रद्धा इसलिये, क्योंकि उन्होंने भारत के नैतिक एवं जीवन मूल्यों को विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाया और स्फूर्ति इसलिये क्योंकि इन मूल्यों से जीवन को एक नई दिशा मिलती है।**

उठो जागो, रुको नहीं...

उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाये।

तफ़ान मचा दो तफ़ान मचा दो

तमाम संसार हिल उठता। क्या करूँ धीरे-धीरे अग्रसर होना पड़ रहा है। तूफान मचा दो तफ़ान!

अनुभव ही शिक्षक

जब तक जीना, तब तक सीखना अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

पवित्रता और दृढ़ता

पवित्रता, दृढ़ता तथा उद्यम-ये तीनों गुण मैं एक साथ चाहता हूँ।

ज्ञान और अविष्कार

ज्ञान स्वयं में वर्तमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है।

मस्तिष्क पर अधिकार

जब कोई विचार अनन्य रूप से मस्तिष्क पर अधिकार कर लेता है तब वह वास्तविक भौतिक या मानसिक अवस्था में परिवर्तित हो जाता है।

आध्यात्मिक दृष्टि

आध्यात्मिक दृष्टि से विकसित हो चुकने पर धर्मसंघ में बना रहना अवांछनीय है। उससे बाहर निकलकर स्वाधीनता की मुक्त वायु में जीवन व्यतीत करो।

नैतिक प्रकृति

हमारी नैतिक प्रकृति जितनी उन्नत होती है, उतना ही उच्च हमारा प्रत्यक्ष अनुभव होता है, और उतनी ही हमारी इच्छा शक्ति अधिक बलवती होती है।

स्तुति करें या निंदा

लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्मी तुम्हारे ऊपर कृपालु हो या न हो, तुम्हारा देहान्त आज हो या एक युग में, तुम न्यायपथ से कभी भ्रष्ट न हो।

किसी के सामने सिर मत झुकाना

तुम अपनी अंतःस्थ आत्मा को छोड़ किसी और के सामने सिर मत झुकाओ। जब तक तुम यह अनुभव नहीं करते कि तुम स्वयं देवों के देव हो, तब तक तुम मुक्त नहीं हो सकते।

मानव की चिंता न्याय आधारित व्यापक समाज की स्थापना के लिए होनी चाहिए!

प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

मानव जीवन चारों ओर से समस्याओं से घिरता जा रहा है। मनुष्य प्रतिपल क्या करें? क्या न करें? दोनों के बीच उचित-अनुचित निर्णय लेने के लिए बराबर संघर्ष करता रहता है। मनुष्य जीवन में एक तरफ कुंआ एक तरफ खाई की परिथितियाँ सदैव बनी रहती है।

मानव जीवन चारों ओर से समस्याओं से घिरता जा रहा है। मनुष्य प्रतिपल क्या करें? क्या न करें? दोनों के बीच उचित-अनुचित निर्णय लेने के लिए बराबर संघर्ष करता रहता है। मनुष्य जीवन में एक तरफ कुंआ एक तरफ खाई की परिथितियाँ सदैव बनी रहती हैं। ये विषम परिस्थितियाँ हर व्यक्ति के जीवन में आती रहती हैं। संशय की स्थिति में उचित निर्णय के अभाव में बड़ी-बड़ी आत्माएँ धूल में मिल जाती हैं। गीता में लिखा है-संशय में डूबी आत्मा का विनाश अवश्यंभावी है।

मनुष्य के पास आत्मा, मन तथा बुद्धि है। आत्मा परमात्मा से आती है। मानव की लघु आत्मा परम-आत्मा परमात्मा से आती है। बल्ब का संबंध तार द्वारा पॉवर हाउस से जुड़ जाने पर बल्व में प्रकाश आ जाता है। उसी प्रकार मनुष्य अपने चिंतन को प्रार्थना रूपी तार के द्वारा हाउस रूपी परम-आत्मा परमात्मा से जोड़ दे तो ईश्वरीय प्रकाश आ जायेगा। ईश्वरीय प्रकाश के मायने, हर पल यह विवेक बना रहे कि ईश्वर हमसे क्या चाहता है?

भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्ध भूमि में दिया गया गीता का ज्ञान देने का उद्देश्य युद्ध कला का ज्ञान कराना नहीं था। गीता हमें मार्गदर्शन देती है कि मन के द्वन्द्व से कैसे बचें? इसी क्रम में सभी प्रवित्र ग्रन्थ संशय की मन:स्थिति से उबरने का आत्माज्ञान प्रदान करते हैं।

हम अपना घर अपनी मर्जी के अनुसार बनाते हैं। इसी प्रकार परमात्मा ने अपनी मर्जी के अनुसार अपनी घर रूपी यह सारी सृष्टि बनायी है। उचित निर्णय लेने में थोड़ी सी असावधानी हो जाएँ तो सब कुछ बरबाद हो जाता है। रावण की कुदृष्टि परायी नारी सीता की सुंदरता की ओर चली गयी। महापण्डित रावण का सारा पुण्य, चारों वेदों का ज्ञान तथा यश समाप्त हो गया। रावण ने अपने 100 पुत्रों सहित सारे कुटुम्ब का विनाश कर लिया। उसे अंतिम समय में ही यह बात समझ में आयी कि जीवन का परम सुख भौतिक कामनाओं में नहीं, वरन् राम की भक्ति में है। परमात्मा ही सत्य है।

अवतारों के शरीर की पूजा नहीं, वरन् उनकी शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त करना जीवन का उद्देश्य है। अवतारों के पास बहुत पॉवर बल्ब होता है। इस बल्ब में परमात्मा के विराट पॉवर हाउस से अथाह प्रकाश आता है। जब कृष्ण के अंदर विराट ज्ञान का अवतरण हुआ तो पवित्र गीता का ज्ञान प्रवाहित हुआ। गीता तो ज्ञान का सागर है। बुद्ध के अंदर दिव्य ज्ञान छिपा पड़ा था। आत्मबोध हुआ तो त्रिपटक निकला। प्रत्येक मनुष्य को विचारवान आत्मा

रूपी बल्ब भगवान से मिल जाता है। स्विच आँन हमें करना है। भगवान के कहा कि हे मनुष्य, यह सारी सृष्टि मैंने तुम्हारे लिए बनायी है। तुम्हारे मन-चिंतन में मैं रहूँगा। तेरे चिंतन में यदि तेरा स्वार्थ रहेगा तो मैं कहाँ रहूंगा। **प्रेम-गली अति सांकरी जामें द्वै न समाय।** परमात्मा के प्रेम की गली बहुत पतली है उसमें दो नहीं समा सकते। अपने से भी तथा परमात्मा से भी-दोनों से एक साथ प्यार नहीं कर सकते।

विश्व भर में आज चारों ओर समस्याएँ हैं। घोर कलियुग के बाद सतयुग का आगमन होता है। रावण को घोर संशय एवं कष्टों के जीवन से होकर ही शांति का मार्ग मिला। अर्जुन को घोर संशय के बाद ही आत्मज्ञान हुआ। संसार में कौन अपना तथा कौन पराया है? मैं तेरा हूँ मेरे सिवा कोई तेरा नहीं। शरीर के सारे नाते-रिश्ते क्षणिक एवं झूठे हैं। केवल भगवान ही सबसे अच्छा दोस्त है। वैसे सभी नाते-रिश्तेदार संसार के अच्छे दोस्त हैं। भौतिक सुख में काम आते हैं। सबसे निकट का मित्र परमात्मा मनुष्य के चिंतन, सोच तथा दृष्टिकोण में रहता है। मनुष्य का चिंतन ईश्वरीय होगा या मनुष्य के अपने स्वार्थ का होगा। यही समस्या है।

कृष्ण ने अर्जुन के कहा कि अर्जुन, तेरा चिंतन ठीक नहीं है। तेरा चिंतन है कि महाभारत के युद्ध से खून की नदियां बहेगी। तू अपने पितामह, गुरू, मामा, चाचा, ताऊ द्वारा एकत्रित की गयी 18 अक्षौहणी सेना की देखकर विलाप कर रहा है। अर्जुन तीर-कमान लेकर युद्ध करने आया था।

कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि अर्जुन, तेरा चिंतन ठीक नहीं है। तेरा चिंतन है कि महाभारत के युद्ध में खून की नदियाँ बहेगी। तू अपने पितामह, गुरू, मामा, चाचा, ताऊ द्वारा एकत्रित की गयी 18 अक्षौहणी सेना की देखकर विलाप कर रहा है। अर्जुन तीर-कमान लेकर युद्ध करने आया था। लेकिन युद्ध प्रारंभ होने के पूर्व ही उसका मन छिटक जाता है। अर्जुन के साथ अन्याय हुआ था। उसकी पत्नी द्रौपदी को दुर्योधन के कहने पर दुःशासन ने भरे समाज के सामने अपमानित किया था। अर्जुन के चिंतन में था कि युद्ध का अंतिम परिणाम भंयकर होगा। नाते-रिश्तेदारों को मारकर राजपाट लेकर क्या करूंगा? हमारी चिंता भौतिक परिणाम की होनी चाहिए। या आध्यात्मिक परिणाम की? केवल अपने कुछ के विनाश की होनी चाहिए या सारे लोक के कल्याण की होनी चाहिए। यही यक्ष प्रशन है। अर्जुन युद्ध के अंतिम परिणाम के रूप में केवल अपने कुल का विनाश देख रहा था। न्याय आधारित व्यापक समाज की तुलना में 18 अक्षौहणी सेना का विनाश कोई बड़ी चीज़ नहीं है। आगे आने वाली पीढ़ियों के करोड़ों-करोड़ों लोगों के लिए न्याय हो, यह ज्यादा बड़ी चीज़ है। राजा तथा उसके अधिकारियों के आचरण का व्यापक असर समाज पर पड़ता है। राजा का कार्य प्रजा के लिए न्याय करना है। राज्य में किसी पर अन्याय होने की दरखास्त आने पर राजा दरबार में दोनों पक्षों को बुलाता है तथा उनकी बात को सुनता है। धर्मगुरू, दरबारियों तथा राज्य के न्यायाधीशों/जूरी के सदस्यों की राय से उचित निर्णय लेता है। इस तरह से न्याय पर आधारित समाज चलता है। यदि राजा ही अन्यायी हो तो पीड़ित व्यक्ति न्याय की आस में किसके पास जाएँ? राजा दुर्योधन के इशारे पर भरी सभा में दूसरे की स्त्री द्रोपदी को वस्त्रहीन करने का दुसाहस किया जाए। और राजा अहंकारी होकर यह कहे कि देखें तेरा भगवान कैसे तेरी मदद को आता है? कृष्ण की चिंता यही थी कि अन्यायी राजा के ऐसे आचरण से तो सारा समाज विकृत हो जाएगा।

अर्जुन तथा कृष्ण की सोच में फर्क है। एक मनुष्य है और एक अवतार। मनुष्य को विचारशील आत्मा के साथ ही स्वतंत्र इच्छाएं मिली हैं। परमात्मा द्वारा किसी पवित्र आत्मा को अवतार के रूप में चुने जाने के बाद से उनकी स्वतंत्र इच्छा नहीं होती। इसी प्रकार पशु तथा मनुष्य में जो अंतर होता है। मनुष्य विचार कर सकता है। पशु विचार नहीं कर सकता। पशु तथा मनुष्य में चार चीजें आहार, निद्रा, भय, मैथुन समान हैं। मनुष्य में एक चीज उसे पशु से अलग करती है, वह धर्म है। धर्म मायने कर्त्तव्य। हे अर्जुन, पापी दुर्योधन का साथ दे रहे अपने चाचा, मामा, ताऊ आदि को मारना ही धर्म है। अर्जुन चारों वेदों का ज्ञाता अर्थात् धर्मात्मा होकर भी धर्म को नहीं समझ रहा था। हे अर्जुन, इस पृथ्वी का आदि तथा अंत मैं हूँ। तू जितने धर्मों की दुहाई दे रहा है उसमें मैं ही था। आगे भी जितने भी धर्म आएंगे उसमें भी मैं ही होऊंगा। जो पिता

एकलव्य बाण विद्या के लिए संसार के श्रेष्ठ गुरू द्रोणाचार्य के पास धनु विद्या सीखने के लिए गए थे। द्रोणाचार्य ने उससे पूछा कि तू किस जाति का है ? एकलव्य ने कहा गुरूजी मैं शूद्र हूं। द्रोणाचार्य ने उसे शिष्य बनाने से यह कहकर मना कर दिया कि मैं केवल क्षत्रिय को शस्त्र विद्या का ज्ञान देता हूं। एकलव्य निराश नहीं हुआ। वह जंगल में गया। गुरू द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति पर श्रद्धा करके अभ्यास शुरू कर दिया।

का धर्म होता है। वही बेटों का भी धर्म होता है। एक अच्छे बाप को अपने कर्त्तव्यों का भान रहता है। बेटे को हर पल सोचकर कर्त्तव्य की ओर लौटना होता है। परमात्मा ने एक जिम्मेदारी मनुष्य को दी है कि हे मानव पुत्र, मेरी शिक्षाओं से अपने को हर पल जोड़े रखना। बाकी सब मेरी जिम्मेदारी है। ईश्वर की ओर जाने के लिए लोक कल्याण से ओतप्रोत निर्णय मनुष्य को ईश्वर का गहरा मित्र बना देता है। परमात्मा एक अच्छे विचार के रूप में चिंतन में बैठ जाता है। अर्जुन जब शरणागत हो जाता है तब कृष्ण उसे गले से लगा लेते हैं।

''श्रद्धावानम् लभते ज्ञानम्।'' श्रद्धावान व्यक्ति ही ज्ञान की प्राप्ति का लाभ ले पाता है। रावण युद्ध में राम के बाणों से बुरी तरह से घायल होकर मृत्यु शय्या पर पड़ा था। राम ने छोटे भाई लक्ष्मण से कहा कि रावण महाविद्वान् है, उससे ज्ञान ले आओ। लक्ष्मण बड़े भाई राम की आज्ञा का पालन करने के लिए बेमन से रावण के पास गए और उसके सिर की तरफ खड़े हो गए। जब राम ने यह देखा तो वह लक्ष्मण के पास गए और उन्हें समझाकर रावण के पैर की ओर ले गए और फिर श्रद्धापूर्वक रावण से ज्ञान देने का अनुरोध किया। रावण से भाई लक्ष्मण को ज्ञान मिल गया।

एकलव्य बाण-विद्या के लिए संसार के श्रेष्ठ गुरू द्रोणाचार्य के पास धनु विद्या सीखने के लिए गए थे। द्रोणाचार्य ने उससे पूछा कि तू किस जाति का है ? एकलव्य ने कहा गुरूजी मैं शूद्र हूँ। द्रोणाचार्य ने उसे शिष्य बनाने से यह कहकर मना कर दिया कि मैं केवल क्षत्रिय को शस्त्र विद्या का ज्ञान देता हूँ। एकलव्य निराश नहीं हुआ। वह जंगल में गया। गुरू द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति पर श्रद्धा करके अभ्यास शुरू कर दिया। एकलव्य ने श्रद्धा के बल पर मिट्टी की मूर्ति से ज्ञान सीखा। एकलव्य ने संसार के सबसे श्रेष्ठ धर्नुधारी अर्जुन को भी बाण विद्या में पछाड़ दिया। अर्जुन के गुरू द्रोणाचार्य एकलव्य की धनुष विद्या के कौशल को देखकर आश्चर्यचकित हो गए। मिट्टी की मूर्ति में ताकत नहीं थी वरन् एकलव्य की अटूट श्रद्धा एवं विश्वास में ताकत थी। गुरू द्रोणाचार्य ने जाति के भेदभाव में परमात्मा से मिली अपनी ताकत एवं ज्ञान को बांट दिया था। जाति से नहीं वरन् प्रभु की इच्छा पर चलने वाले ब्राह्मण हैं। एकलव्य ने गुरू की कमियों की ओर नहीं देखा, वरन् गुरू द्रोण को परमात्मा की कृपा से अर्जित ज्ञान का मूर्ति में श्रद्धापूर्वक दर्शन किया। गुरू द्रोण के मन में कपट आ गया। एकलव्य को बाण विद्या से विहीन करने के लिए उन्होंने कुटिल चाल चलने का निर्णय लिया। कपटी गुरू द्रोण एकलव्य से बोले यदि तुम मुझे गुरू मानते हो तो मुझे गुरू दक्षिणा देनी होगी। एकलव्य श्रद्धापूर्वक बोला गुरूजी, यह सारा जीवन आपका है। आप जो मागेंगे, दे दूंगा। जो आपका है उसे देने में मुझे क्या दिक्कत हो सकती है। द्रोण ने कहा तुम अपने दाहिने हाथ का अंगूठा दे दो। एकलव्य ने तुरंत अंगूठा काटकर गुरूदक्षिणा दे दी। कृष्ण ने अर्जुन से कहा जो पाप का साथ दे रहे हैं। वे भी पापी हैं। अर्जुन अपने गुरू, पितामह भीष्म, दानी

मनुष्य कोई निर्णय लेने से पूर्व उस पर विचार कर सकता है। पशु अच्छे-बुरे का विचार नहीं कर सकते। अर्जुन के मन में जब युद्ध से भागने का विचार आया तब वह पशु योनि में चला गया। समाज में न्याय की स्थापना के लिए जब अपने बंधुओं से युद्ध करने का निर्णय लिया तब वह मनुष्य योनि में चला गया।

कर्ण आदि को मार दे। इन सब की आत्मा मर चुकी है। इन्हें मारने से तुझे कोई पाप नहीं लगेगा। संसार में दो तरह के शरीरधारी मनुष्य होते हैं। एक मनुष्य योनि के दूसरे पशु योनि के। मनुष्य कोई निर्णय लेने से पूर्व उस पर विचार कर सकता है। पशु अच्छे-बुरे का विचार नहीं कर सकते। अर्जुन के मन में जब युद्ध से भागने का विचार आया तब वह पशु योनि में चला गया। समाज में न्याय की स्थापना के लिए जब अपने बंधुओं से युद्ध करने का निर्णय लिया तब वह मनुष्य योनि में चला गया। बहाउल्लाह ने कहा है कि कोई कार्य करने के पूर्व उसके अंतिम परिणाम पर विचार कर लेना चाहिए। ईश्वरीय प्रकाश में जाकर कोई निर्णय लेने से चिंतन तथा सोच की गांठें खुलेंगी। संशय के विचार समाप्त होंगे। हम निश्चय करने की स्थिति में आ जाते हैं।

राम जब पिता की आज्ञा से १४ वर्षों के लिए वन जाने के लिए तैयार हो गए। तब दशरथ नाराज हुए अरे राम, तुम पर ये वर लागू कहाँ होता है। तुम कह देना परम्परा चली आ रही है बड़ा बेटा गद्दी पर बैठता है। परंपरा धर्म होती है। वन जाने से परंपरा का नाश होगा। बेटे राम मैं तेरे बिना जी नहीं सकूंगा। यदि तू वन गया तो प्राण त्याग दूंगा। तू मेरा हत्यारा बनेगा। राम धर्म संकट में पड़कर सोचने लगे कि मैं अपने पिता का हत्यारा बनूंगा। राम के समक्ष एक तरफ खाई एक तरफ कुंआ वाली स्थिति पैदा हो गयी। यदि वन जाते है तो पिताजी प्राण प्याग देंगे। वन को नहीं जाते है तो पिताजी के वचन का क्या होगा? राम को स्मरण आया बचपन में गुरू वशिष्ठ ने बताया था कि बच्चों अभी तुम छोटे हो जब बड़े होगे तो जीवन में बड़े-बड़े प्रश्न आएंगे। तुम्हारे बड़े-बड़े हमेशा जीवित नहीं रहेंगे। तुमको अपने जीवन के निर्णय स्वयं करने पड़ेगे। बच्चों ने पूछा कि तब गुरू जी ये बड़े-बड़े प्रश्न कैसे हल होंगे? गुरू वशिष्ठ ने बताया था कि बच्चों यह बहुत आसान है तुम प्रार्थना करते हो। बस आंख बंद करके मन ही मन प्रार्थना कर लेना। तुम्हें अंदर से उत्तर मिल जाएगा। राम ने झट से आंखे बंद कर ली। प्रभु के आदेश से मनुष्य को स्वतंत्र कर दिया। ❑

जब स्वामी विवेकानंद की छाती पर रामकृष्ण परमहंस ने रख दिया पैर!

यह बात उस समय की है, जब नरेंद्रदत्त उर्फ स्वामी विवेकानंद 19 वर्ष के थे। एक दिन वे अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस के पास गये और उनसे सवाल किया, आप भगवान की बात कर रहे हैं, हमेशा भगवान-भगवान करते हैं, भगवान हैं कहाँ और अगर हैं, तो क्या प्रमाण है आपके पास? मुझे प्रमाण दिखाईये। रामकृष्ण, जो पढ़े-लिखे नहीं थे, उनके पास कोई डिग्री नहीं थी, उन्होंने बहुत ही सरलता से जवाब दिया, मैं स्वयं प्रमाण हूँ। विवेकानंद के पास कहने को कुछ नहीं था, वे हँसे और वहाँ से निकल गये। असल में वे रामकृष्ण से कोई बौद्धिक उत्तर की तलाश में थे। लेकिन भगवान हैं, इसका क्या प्रमाण है? यह सवाल विवेकानंद के दिमाग में घूमने लगा। दो दिन तक विवेकानंद ठीक से सो नहीं पाये। बस सोचते रहे, भगवान कहाँ हैं? तीन दिन बाद वे रामकृष्ण के पास फिर से पहुँचे और बोले, ठीक है, दिखाईये भगवान कहाँ हैं, मैं देखना चाहता हूँ अभी। रामकृष्ण ने पूछा, तुम्हारे अंदर भगवान को देखने का साहस है? विवेकानंद बोले, हाँ, मैं एक बहादुर लड़का हूँ। रामकृष्ण खड़े हुए और विवेकानंद को जमीन पर गिरा दिया और अपना पैर विवेकानंद की छाती पर रख दिया। और विवेकानंद कुछ समय के लिये समाधि में चले गये। उस वक्त उनका दिमाग अनंत की ओर चला गया। वे शांत पड़ गये। और करीब 12 घंटे तक उस मंजर से बाहर नहीं निकल पाये। और उसके बाद से विवेकानंद में एक बड़ा परिवर्तन आया और उन्होंने फिर यह सवाल कभी नहीं किया।

शिक्षित नारी

भारत की शिक्षित नारी आज भी है कितनी बेचारी
शिक्षिका बनकर बाहर जो, सबको सदगुण सिखाती है
लेकिन घर में आते ही, सबसे हार जाती है।
डॉक्टर बनकर समाज में, सबको स्वस्थ बनाती है
लेकिन घर के तनावों से, खुद ही रोगी हो जाती है।
पायलट बनकर आकाश में, जो उड़ान भरा करती है
नारी शोषण होने पर, वही पतित हो जाती है।
नारी जीवन कैसी विडम्बना! शिक्षित होकर भी क्या पाया?
नर-नारी एक समान, यह आज भी सिद्ध न हो पाया।
मेरी अन्तिम पंक्ति पढ़कर, कहीं निराश न हो जाना
जीवन नहीं यहीं तक सीमित, यह बात तुम जान जाना।
काँटों पर चलकर जब, नारी आदर्श बनाएगी।
नर–नारी है आज समान, तब सारी दुनिया कह पाएगी।

❖❖❖

आखिर क्यूँ

क्यूँ नहीं आती चांदनी वाली रात रोज?
क्यूँ नारी शब्द ही है इस धरती पर बोझ?
क्यूँ देते हैं लोग सदैव कष्ट उसको?
क्यूँ कर देते हैं सदैव नष्ट उसको?
क्यूँ उसके अस्तित्व को रौंदा गया बार–बार?
क्यूँ उसके विश्वास को तोड़ा गया बार–बार?
क्या नहीं था यह नारी–धर्म का अपमान?
क्या नहीं मिलेगा कभी उसे सम्मान?
क्यूँ नारी लांछित की जाती है समाज में?
आखिर क्यूँ मोल–भाव है बाजार में?
कब तक नारी दब कर रहेगी?
आखिर कब तक सबके जुल्म सहेगी?
जिस दिन मिलेगी मुक्ति उसको?
समझो उस दिन मिलेगी मुक्ति जग को?

माँ का महत्व

* आसमान ने कहा माँ एक इन्द्र धनुष है। जिसमें सभी रंग समाये हैं।
* शायर ने कहा माँ एक गज़ल है, जो सभी के दिलों में उतरती चली जाती है।
* माली ने कहा माँ वह दिलकश फूल है जो पूरे गुलशन को ...काती है।

* ...ाद ने कहा माँ ममता की अनमोल दास्ताँ है। जो हर दि... र कुर्बान हो जाती है।
* ...क जी ने कहा माँ और मातृ–भूमि का स्थान स्वर्ग से ... ऊँचा है।
* वेदव्यास जी ने कहा 'नारितमाहसमोगुरु' अर्थात् माता के समान गुरु नहीं है।
* पैगम्बर मोहम्मद साहब ने कहा, माँ वह हस्ती है जिसके कदमों के नीचे जन्नत है।
* चाणक्य ने कहा, अन्न जल के समान कोई दान नहीं है। द्वादशी के समान कोई तिथि नहीं है। गायत्री–मंत्र से बढ़कर कोई मंत्र नहीं है और माँ से बढ़कर कोई देवता नहीं है।

❖❖❖

–अश्विन कुमार पाण्डेय

धन-प्रेम-सफलता

नीतिका शुक्ला

एक औरत अपने घर से निकली, उसने घर के सामने सफेद लम्बी दाढ़ी में तीन साधु-महात्माओं को बैठे देखा। वह उन्हें पहचान नही पायी। उसने कहा,मैं आप लोगों को नहीं पहचानती, बताइए क्या काम है? हमें भोजन करना है, साधुओं ने बोला। ठीक है! कृपया मेरे घर में पधारिये और भोजन ग्रहण कीजिये। क्या तुम्हारा पति घर में है? एक साधु ने प्रश्न किया।

एक औरत अपने घर से निकली, उसने घर के सामने सफेद लम्बी दाढ़ी में तीन साधु-महात्माओं को बैठे देखा। वह उन्हें पहचान नही पायी। उसने कहा,मैं आप लोगों को नहीं पहचानती, बताइए क्या काम है? हमें भोजन करना है, साधुओं ने बोला। ठीक है! कृपया मेरे घर में पधारिये और भोजन ग्रहण कीजिये। क्या तुम्हारा पति घर में है? एक साधु ने प्रश्न किया। नहीं, वह कुछ देर के लिए बाहर गए हैं। औरत ने उत्तर दिया। तब हम अन्दर नहीं आ सकते, तीनो एक साथ बोले। थोड़ी देर में पति घर वापस आ गया, उसे साधुओं के बारे में पता चला तो उसने तुरंत अपनी पत्नी से उन्हें पुनः आमंत्रित करने के लिए कहा। औरत ने ऐसा ही किया, वह साधुओं के समक्ष गयी और बोली, जी, अब मेरे पति वापस आ गए हैं, कृपया आप लोग घर में प्रवेश करिए! हम किसी घर में एक साथ प्रवेश नहीं करते। साधुओं ने स्त्री को बताया। ऐसा क्यों है? औरत ने अचरज से पूछा।

जवाब में मध्य में खड़े साधु ने बोला, पुत्री, मेरी दायीं तरफ खड़े साधु का नाम 'धन' और बायीं तरफ खड़े साधु का नाम 'सफलता' है, और मेरा नाम 'प्रेम' है। अब जाओ और अपने पति से विचार-विमर्श कर के बताओ की तुम हम तीनों में से किसे बुलाना चाहती हो। औरत अन्दर गयी और अपने पति से सारी बात बता दी। पति बेहद खुश हो गया। वाह, आनंद आ गया, चलो जल्दी से 'धन' को बुला लेते हैं, उसके आने से हमारा घर धन-दौलत से भर जाएगा, और फिर कभी पैसों की कमी नहीं होगी। औरत बोली, क्यों न हम सफलता को बुला लें, उसके आने से हम जो करेंगे वो सही होगा, और हम देखते-देखते धन-दौलत के मालिक भी बन जायेंगे। हम, तुम्हारी बात भी सही है, पर इसमें मेहनत करनी पड़ेगी, मुझे तो लगता ही धन को ही बुला लेते हैं।, पति बोला। थोड़ी देर उनकी बहस चलती रही पर वो किसी निश्चय पर नहीं पहुच पाए, और अंततः निश्चय किया कि वह साधुओं से यह कहेंगे कि धन और सफलता में जो आना चाहे आ जाये। औरत झट से बाहर गयी और उसने यह आग्रह साधुओं के सामने दोहरा दिया। उसकी बात सुनकर साधुओं ने एक दूसरे की तरफ देखा और बिना कुछ कहे घर से दूर जाने लगे। अरे! आप लोग इस तरह वापस क्यों जा रहे हैं? औरत ने उन्हें रोकते हुए पूछा। पुत्री, दरअसल हम तीनो साधु इसी तरह द्वार-द्वार जाते हैं, और हर घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, जो व्यक्ति लालच में आकर धन या सफलता को बुलाता है हम वहाँ से लौट जाते हैं, और जो अपने घर में प्रेम का वास चाहता है उसके यहाँ बारी- बारी से हम दोनों भी प्रवेश कर जाते हैं। इसलिए इतना याद रखना कि जहाँ प्रेम है वहाँ धन और सफलता की कमी नहीं होती। ऐसा कहते हुए धन और सफलता नामक साधुओं ने अपनी बात पूर्ण की। ❑

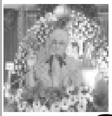

सनातन चैनल पर शाश्वतम परिवार
सूरत द्वारा आयोजित

श्री राम कथा का प्रसारण

समय-दोपहर 12.30 से 1 बजे
एवं
रात्रि 9 से 9.30 बजे रोजाना
व्यास पीठ से वक्ता
स्वामी उमाकान्तानंद महाराज जी

सनातन चैनल

वीडियोकॉन चैनल नं 488	IN Channel 468
सिटी केबल चौनल नं 551	GTPL - 584

दयालु राजा

प्रो. वीरेन्द्र अग्रवाल

भावनगर के राजा एक बार गर्मियों के दिनों में अपने आम के बागों में आराम कर रहे थे और वह बहुत ही खुश थे की उनके बागों में बहुत अच्छे आम लगे थे और ऐसे ही वो अपने खयालों में खोये हुए थे।

भावनगर के राजा एक बार गर्मियों के दिनों में अपने आम के बागों में आराम कर रहे थे और वह बहुत ही खुश थे कि उनके बागों में बहुत अच्छे आम लगे थे और ऐसे ही वो अपने खयालों में खोये हुए थे।

तभी वहाँ से एक गरीब किसान गुजर रहा था और वह बहुत भूखा था, उसका परिवार पिछले दो दिन से भूखा था तो उसने देखा की क्या मस्त आम लगे हैं अगर मैं यहाँ से कुछ आम तोड़ कर ले जाऊँ तो मेरे परिवार के खाने का बंदोबस्त हो जाएगा। यह सोच कर वह उस बाग में घुस गया, उसे पता नहीं था की इस बाग में भावनगर के राजा आराम कर रहे हैं, उसने तो चोरी छुपे घुसते ही एक पत्थर उठा कर आम के पेड़ पे लगा दिया और वह पत्थर आम के पेड़ से टकराकर सीधा राजाजी के सर पे लगा।

राजाजी का पूरा सर खून से लथपथ हो गया और वो अचानक हुए हमले से अचंभित थे और उन्हें यह समझ ही नहीं आ रहा था की आखिर उन पर हमला किसने किया। राजा ने अपने सिपाहियों को आवाज दी तो सारे सिपाही दौड़े चले आये और राजाजी का यह हाल देख उन्हें लगा कि किसी ने राजाजी पर हमला किया है तो वह बागीचे के चारों तरफ आरोपी को ढूंढने लगे। इस शोर-शराबे को देखकर गरीब किसान समझ गया की कुछ गड़बड़ हो गई, वो डर के मारे भागने लगा, सिपाहियों ने जैसे ही इस गरीब किसान को भागते देखा तो वे सब भी उसके पीछे भागने लगे और उसे दबोच लिया।

उस गरीब किसान को सिपाहियों ने पकड़कर कारागार में डाल दिया और उसको दूसरे दिन दरबार में पेश किया, दरबार पूरा भरा हुआ था और सबको यह मालूम हो चुका था की इस इंसान ने राजाजी को पत्थर मार था, सब बहुत गुस्से में थे और सोच रहे थे की इस गुनाह के लिए उसे मृत्युदंड मिलना चाहिए। सिपाहियों ने उस गरीब किसान को दरबार में पेश किया और राजा ने उससे सवाल किया की तूने मुझ पर हमला क्यों किया? गरीब किसान डरते-डरते बोला, माई-बाप मैंने आप पर हमला नहीं किया है, मैं तो सिर्फ आम लेने आया था। मैं और मेरा परिवार पिछले दो दिनों से भूखे थे। इसलिए मुझे लगा की अगर यहाँ से कुछ फल मिल जाएँ तो मेरे परिवार की भूख मिट सकेगी । यह सोचकर मैंने वह पत्थर आम के पेड़ को मारा था, मुझे पता नहीं था कि आप उस पेड़ के नीचे आराम कर रहे थे और वह पत्थर आपको लग गया। यह सुनकर सभी दरबारी बोलने लगे, अरे मूर्ख तुझे पता है तूने कितनी बड़ी भूल करी है, तूने इतने बड़े राजा के सर पे पत्थर मारा है, अब देख क्या हाल होता है तेरा।

राजाजी ने सभी दरबारियों को शांत रहने को कहा और वह बोले, भला अगर एक

मैंने अपने दादाजी से सुनी है यह कहानी दया, प्रेम और परोपकार की भावना को बयान करती है। कैसे होंगे वो राजा, जो पत्थर खाकर भी एक गरीब व्यक्ति की पीड़ा, व्यथा समझ पाए, उसके दर्द को जी पाए और उसकी मदद कर पाए। धन्य है वह राजाजी, जिन्होंने दया, प्रेम और उदारता के साथ न्याय किया और दया का एक अनोखा प्रमाण पेश किया।

आज के इस दंड युग में हम सब विकसित तो हो गए, हम सब कहने को तो बुद्धिमान भी बन गए, हमने संसाधन भी इकट्ठा कर लिए, लेकिन अगर हमारे अंदर वह राजाजी जैसे भाव नहीं है, दया नहीं है, प्रेम नहीं है, फिर तो यह सब बेकार

एक पेड़ को कोई पत्थर मारता है और वह फल दे सकता है तो मैं तो भावनगर का राजा हूँ। मैं इसे दंड कैसे दे सकता हूँ। अगर एक पेड़ पत्थर खाकर कुछ देता है तो मैंने भी पत्थर खाया है तो मेरा भी फर्ज है कि मैं भी इस गरीब इंसान को कुछ दूँ और उन्होंने अपने मंत्री को आदेश दिया की जाओ और हमारे अनाज के भंडार से इस इंसान को पूरे एक साल का अनाज दे दो।

पेड़ को कोई पत्थर मारता है और वह फल दे सकता है तो मैं तो भावनगर का राजा हूँ। मैं इसे दंड कैसे दे सकता हूँ। अगर एक पेड़ पत्थर खाकर भी कुछ दे देता है तो मैंने भी पत्थर खाया है तब तो मेरा भी फर्ज है कि मैं भी इस गरीब इंसान को कुछ दूँ और उन्होंने अपने मंत्री को आदेश दिया कि जाओ और हमारे अनाज के भंडार से इस इंसान को पूरे एक साल का अनाज दे दो। यह फैसला सुनकर सभी दरबारी चकित हो उठे, उन्हें तो लग रहा था की उसे दंड मिलेगा लेकिन राजाजी की दया, प्रेम और न्याय देखकर सभी दरबारी राजाजी के प्रशंसक बन गए।

वह गरीब किसान भी राजाजी की दया और उदारता देख अपने आँसू नहीं रोक पाया और भावनात्मक होकर राजाजी के सामने झुक कर कहने लगा, धन्यभाग है। इस भावनगर के, जिसे इतना परोपकारी, दयालु राजा मिला और पूरे दरबार में राजा का जयकार, नाद गूँजने लगा।

यह एक सत्य घटना है और यह कहानी का है। इस भाव के बिना हम आज भी जंगली जानवर के समान हैं। हम ऐसे महान दयावान राजा को तहे-दिल से प्रणाम करते हैं और सभी लोगों से भावभीनी अपील करते हैं की अपने दिल में दया, प्रेम और परोपकार की भावना जगाए रखें और सही अर्थों में सफल मानव बनें। ❑

रास्ते की रुकावट

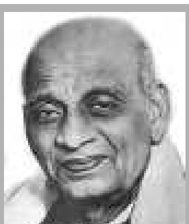

विद्यार्थियों की एक टोली पढ़ने के लिए रोजाना अपने गाँव से छह-सात मील दूर दूसरे गाँव जाती थी। एक दिन जाते-जाते अचानक विद्यार्थियों को लगा कि उन में एक विद्यार्थी कम है। ढूँढने पर पता चला कि वह पीछे रह गया है। उसे एक विद्यार्थी ने पुकारा, तुम वहाँ क्या कर रहे हो? उस विद्यार्थी ने वहीं से उत्तर दिया, ठहरो, मैं अभी आता हूँ। यह कह कर उस ने धरती में गड़े एक खूँटे को पकड़ा। जोर से हिलाया, उखाड़ा और एक ओर फेंक दिया फिर टोली में आ मिला। उसके एक साथी ने पूछा, तुम ने वह खूँटा क्यों उखाड़ा? इसे तो किसी ने खेत की हद जताने के लिए गाड़ा था। इस पर विद्यार्थी बोला, लेकिन वह बीच रास्ते में गड़ा हुआ था। चलने में रुकावट डालता था। जो खूँटा रास्ते की रुकावट बने, उस खूँटे को उखाड़ फेंकना चाहिए। वह विद्यार्थी और कोई नहीं, बल्कि लौह-पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल थे।

शाश्वत समाचार

सूरत में मेहंदीपुर बालाजी मंदिर में रामकथा संपन्न

रामचरित मानस के माध्यम से कलियुग में भक्ति सरल है।

श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ परिव्राजकाचार्य अनंत विभूषित श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. उमाकान्तानन्द सरस्वतीजी महाराज

शाश्वत् परिवार शाखा सूरत सहयोग संस्था अध्यात्म चेतना चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा नौ दिवसीय राम कथा सम्पन्न

परम पूज्य श्री श्री 1008 महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. उमाकान्तानंद सरस्वती जी महाराज के सानिध्य एवं मुखारविंद से गुजरात की धरती सूरत के सिटीलाइट स्थित मेहंदीपुर बालाजी मंदिर के प्रांगण में नौ दिवसीय रामचरितमानस की कथा का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। मंगलवार 20 सितम्बर के प्रात: 8 बजे राणी सती मंदिर सिटीलाइट से रात्रि बैण्ड-बाजे के साथ हजारों हरिभक्तों ने भव्य शोभा यात्रा निकाल कर रामकथा का आगाज किया। शोभा यात्रा के समापन अवसर पर स्वामी डॉ. उमाकान्तानंद सरस्वतीजी ने रामकथा के वर्तमान में महात्म्य एवं सामाजिक, पारिवारिक एवं वैचारिक स्तर पर व्यक्ति के विकास के अति आवश्यक सूत्र के रूप जोड़कर श्रवण करने पर बल दिया।

व्यासपीठ से रामकथा के नाम की महिमा का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने उपस्थित राम प्रेमी भक्तों के समक्ष कहा कि राम जन-जन के अराध्य है। राम की महिमा अपार है। संसार में कुछ सार नहीं है। संगीतमय रामकथा के दौरान स्वामी जी के भजनों ने कथा की रोचकता में चार चाँद लगाया। ''राम-नाम के हीरे-मोती मैं बिखराऊ गली-गली, ले लो रे कोई राम का प्याला शोर मचाऊं गली-गली। जैसे भजनों पर श्रोतागण भाव-विभोर हो उठते थे। महामंडलेश्वर डॉ. उमाकान्तानंद जी ने बताया कि राम का अभिप्राय आत्मा से भी है। सभी वर्ण के लोगों के चरित्र निर्माण में रामकथा की सदियों से बड़ी भूमिका है। बालकाण्ड का वर्णन करते हुए स्वामी जी ने सांसारिक लोगों को आगाह करते हुए कहा कि जिसने जीवन का बालकाण्ड सुधार लिया उसका अयोध्याकाण्ड अपने आप सुधर जायेगा और जिसने अयोध्याकाण्ड सुधार लिया। उसका जीवन अपने आप सुधर जायेगा। बुढ़ापे को सुधारने के लिए बचपन और जवानी में संभलना और संयमित होना आवश्यक है। रामकथा के विविध प्रसंगों पर भजनों एवं संगीतमय गानों में उपस्थित श्रोता समूह नाचने एवं झूमने लगता था। प्रभु राम की बाललीला जनकपुर प्रसंग, राजतिलक की तैयारी, मंथरा का तथा कैकेयी माता का कोप, वनगमन, भरत का चरित्र, आसुरी शक्तियों के भगवान राम का लड़ना, हनुमान जी का मिलना, शबरी के आश्रम भगवान का भाव-विभोर होना। इन सब प्रकरणों पर स्वामी जी द्वारा वर्तमान परिवेश में मनुष्य की कठिनाईयों पर विजय पाने और सहजता से समझाने की कला से कथा की रोचकता को चार चाँद लगाने में सहयोग मिलता रहा। कथा के दौरान मुम्बई से पधारी भोजपुरी गायिका एवं कलाकार कल्पना के भजन गंगा में गोते लगाते भक्तों के आनन्द को देखते ही बन रहा था। कल्पना ने वन्दना के साथ शिव महिमा जेकर नाम भोलेनाथ ऊ अनाथ कैसे होई......निमिया की डरिया मैया झूलेनी झूलना......तथा यशोमति मईया से बोले नन्दलाला आदि भजनों से श्रोताओं को खूब झुमाया।

राकथा के नौ दिन विभिन्न संस्थाओं की ओर से भंडारे का भी आयोजन हुआ। कथा के बाद ही श्री हरि सत्संग समिति की ओर से सुन्दरकांड पाठ का आयोजन किया गया। सुंदरकाण्ड के संगीतमय पाठ में संजय अग्रवाल की टीम और भाष्कर मंडल पांडेसरा सूरत की मुख्य भूमिका थी। इस रामकथा में शाश्वत परिवार के निम्न कार्यकर्त्ताओं की अहम् भूमिका रही। अध्यक्ष श्री वी.एल.खण्डेलवाल, श्री विष्णु मालपानी, श्री निरंजन अग्रवाल, श्री शावरप्रसाद जी, बुधिया, श्री घनश्याम सोनी (आई.आर.एस.), श्री अरूण तोला, श्री विश्वनाथ पचेदिया, श्री राजबल्लभ चड्ढा, श्री महावीर जी लोना, श्री अजय अग्रवाल, श्री अनिल पितलिया, श्री चन्द्रशेखर दूबे, श्री समीर बच्चीगर, श्री गरिमालया जी, श्री नटवर मालपानी, श्री अनिल पाण्डेय, श्री राजकुमार पाठक, रामरतन नूतड़ा , श्री मुकेश राठौर (आई.आर.एस.) इत्यादि की प्रमुख भूमिका रही।।

कथा के दौरान उपस्थिति दर्ज कराने वालों में सूरत के नवसारी संसदीय क्षेत्र के सांसद श्री सी.आर. पाटिल, सीकर (राजस्थान) के सांसद एवं संत सुमेधानन्द जी महाराज, सूरत की एम.एल.ए.श्रीमती संगीता पाटिल, मुम्बई से पधारे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री योगेश दूबे, सूरत शहर भाजपा के वरिष्ठ सदस्य श्री राजेन्द्र उपाध्याय, श्री रमाशंकर सिंह, सूरत शहर कांग्रेस के श्री धनसुख भाई राजपूत (पार्षद), श्री घनश्याम सिंह राजपूत, श्री कप्तान सिंह, श्री संजय सिंह इत्यादि प्रमुख लोगों के अलावा सूरत शहर की पूर्व मेयर एवं पूर्व राज्यसभा सांसद श्रीमती सविता शारदा, श्री नरेश शर्मा (पूर्व अध्यक्ष-विहार विकास परिषद सूरत) इत्यादि ने स्वामी जी से आशीर्वाद लिया। सूरत के मीडिया से जुड़ी हस्तियों में कुलदीप सनाड्या (संपादक लोकतेज), सनातन चैनल के चेयरमैन श्री अनन्त त्रिपाठी एवं श्री शत्रुघ्न प्रसाद ने भी कथा का आनन्द लिया। कथा के दौरान कई लोगों ने स्वामी जी से दीक्षा भी ग्रहण किया। सूरत के कई संत-महात्माओं की उपस्थिति भी स्वामी जी के कथा में देखी गई।

व्रत त्योहार

ता.	व्रत एवं त्योहार
	अक्टूबर-2016
1.	पापांकुशा एकादशी व्रत (सर्वे.), मोहर्रम (ताजिया), भरत मिलाप
3.	प्रदोष व्रत
5.	पूर्णिमा व्रत, शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत, लक्ष्मी-कुबेर पूजा, कार्तिक स्नान प्रारंभ, बाल्मीकि जयंती
8.	करवा चौथ चन्द्रोदय रात्रि 20/21
12.	अहोई अष्टमी, राधाकुण्ड स्नान (गोवर्धन)
15.	रमा एकादशी व्रत (सर्वे.)
17.	प्रदोष व्रत, धनतेरस, धनवंतरि जयंती, यमदीप दान
18.	नरक चौदस, मासिक शिवरात्रि, दीपदान
19.	देवपितृ कार्य अमावस्या, महालक्ष्मी कुबेर पूजा, दीपावली, श्री कमला जयंती, महाकाली जयंती
20.	गुजराती नववर्ष प्रा., गोवर्धन पूजा अन्नकूटोत्सव
21.	भाई दौज (यम द्वितीया) यमुना स्नान (मथुरा), विश्वकर्मा पूजा
23.	दुर्वा गणपति व्रत, छठ मेला प्रा. (बिहार)
25.	सौभाग्य पंचमी, पाण्डव पंचमी
26.	सूर्य षष्ठी, छठ पूजा (बिहार व पूर्वी उ.प्र.)
29.	अक्षय नवमी, कुष्माण्ड नवमी, जुगल जोड़ी परिक्रमा (मथुरा)
31.	देव प्रबोधिनी एका.व्रत (देव उठान एका.) (सर्वे.), तुलसी विवाह, भीष्म पंचक प्रारंभ, चातुर्मास व्रत पूर्ण, कालीदास जयंती
	नवबर-2016
1.	प्रदोष व्रत
2.	वैकुण्ठ चौदस, ता. 3-पूर्णिमा व्रत
4.	कार्तिक पूर्णिमा, गुरु नानक जयंती, कार्तिक स्नान समाप्त
6.	सौभाग्य सुन्दरी व्रत
7.	चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 20/50
9.	गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस
14.	उत्पत्ति एकादशी व्रत (सर्वे.), बाल दिवस (नेहरू जयंती)
15.	प्रदोष व्रत
16.	मासिक शिवरात्रि व्रत, वृश्चिक संक्रान्ति
18.	देवपितृकार्य अमावस्या, शनिश्चरी अमावस्या
22.	विनायक चतुर्थी व्रत
23.	श्री बांके बिहारी जी प्राकटोत्सव (वृन्दावन), बिहारी पंचमी, राम जानकी विवाहोत्सव
24.	स्कंद षष्ठी, चम्पा षष्ठी
30.	मोक्षदा एकादशी व्रत (सर्वे.), गीता जयन्ती

सदस्यता फार्म

(यह फार्म भरकर डी.डी./मनी ऑर्डर के साथ भिजवाएं)

हां, मैं 'शाश्वत ज्योति' पत्रिका का सदस्य बनना चाहता/ चाहती हूं।

1 वर्ष 150 रुपये ☐

5 वर्ष 750 रुपये ☐

आजीवन 3000 रुपये ☐

रुपये (शब्दों में)..

....

रुपये के लिए 'डिवाईन श्रीराम इण्टरनेशनल चेरीटेबल ट्रस्ट, हरिद्वार (हेतु शाश्वत ज्योति)' के नाम से डी.डी./मनी ऑर्डर नम्बर ....

दिनांक .... बैंक ....

.... संलग्न है।

नाम ....

पता ....

....

शहर .... राज्य ....

पिन कोड .... फोन ....

फैक्स .... मोबाइल ....

ई-मेल ....

नोट : एक से अधिक सदस्यता लेने के लिए आप इस फार्म की फोटो कॉपी करवा सकते हैं।

आदर्श आयुर्वेदिक फार्मेसी, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखंड)
फोन- 01334-262600, मोबाइल-09897034165
E-mail: Umakantmaharaj@hotmail.com

यहाँ से काटिये